दीपावली विशेषांक
अक्टूबर-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 1
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
धनदा प्रयोग
स्थिर लक्ष्मी प्रयोग
रूप चतुर्दशी सा.
लक्ष्मीप्राप्ति के 6 आरवेटक प्रयोग

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

# नारायण मंत्र साधना विज्ञान

**कृपया ध्यान दें**

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

## आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

**450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।**

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 6 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

**बैंक खाते का विवरण**

| | |
|---|---|
| खाते का नाम | : नारायण मंत्र साधना विज्ञान |
| बैंक का नाम | : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया |
| ब्रांच कोड | : SBIN0000659 |
| खाता नम्बर | : 31469672061 |

## मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- → दुर्गा यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/- → लक्ष्मी यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :


## नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

जीवन में पूर्ण भाग्योदय प्राप्ति में सहायक : सौभाग्य सिद्धि साधना

दीपावली पर बुद्धि, बल, वैभव हेतु : स्वर्णाकृत अघोर सम्पर्क तान्त्रोक्त महालक्ष्मी पू

सौन्दर्य और अनंग की परिपूर्णता : रूप अनंगसिद्धि सा

प्रेरक संस्थापक

**डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली**
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

**पूजनीया माताजी**
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

**श्री अरविन्द श्रीमाली**

सह-सम्पादक

**राजेश कुमार गुप्ता**

## सद्गुरुदेव



## स्तम्भ



## साधनाएं



## ENGLISH



## विशेष



## योग



## दीपावली



## आयुर्वेद
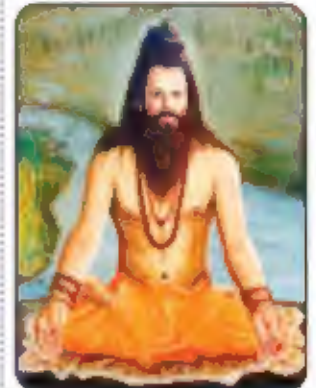


प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
**श्री अरविन्द श्रीमाली**
द्वारा
**प्रगति प्रिंटर्स**
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली: 110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

| एक प्रति | 40/- |
| --- | --- |
| वार्षिक | 405/- |

**सम्पर्क**

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.nte

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## प्रार्थना

॥ ॐ चत्वारित्या यहिर्नेवदे वद
वदं सहितवैं क्षणत्वं सह: ॥

हे गुरुदेव! आप कुछ ऐसा प्रदान करें कि मैं निरन्तर आपके सम्पर्क में रह सकूं, आपको देख सकूं, आपका पथ-प्रदर्शन पा सकूं।

## सेवाधर्मः परमगहनः योगिनामप्यगम्यः

बहुत ही धीर-गम्भीर मुद्रा में बैठे हुए थे 'ऋषि शौनिक' और सामने बैठा था विशाल शिष्य-वृन्द। सभी के मन में एक कौतूहल था कि अकस्मात् गुरुदेव ने हम सभी को क्यों एकत्र किया है यहाँ? आज तक तो शिक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त कभी इस तरह सभा का आयोजन नहीं हुआ था... तभी ऋषि शौनिक की ओजस्वी वाणी गूंजी–'मेरा इस पृथ्वी लोक से प्रस्थान करने का समय सन्निकट है, अत: कल मैं अपने उत्तराधिकारी का चयन करूंगा, जिससे भविष्य में भी निर्बाध इस आश्रम का संचालन होता रहे।' गुरुदेव के इन शब्दों को सुनकर समस्त शिष्य स्तब्ध हो गये, उनकी स्तब्धता को भंग करते हुए गुरुदेव ने पुन: कहा–'मैं श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिख रहा हूं, जो इसका अर्थ स्पष्ट कर देगा, वही मेरा उत्तराधिकारी होगा।' श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य को एक-एक कर सभी शिष्यों ने पढ़ा, लेकिन उसका अर्थ समझने में असमर्थ रहे।

आश्रम के एक कोने में बैठा हुआ एक युवक, जो पिछले पन्द्रह वर्षों से लगातार धान कूटने का कार्य कर रहा था, क्योंकि जिस दिन वह आश्रम में आया था, उसे गुरुदेव ने आज्ञा दी थी कि, 'तुम उस कोने में बैठकर भण्डारे के लिए धान कूटोगे, जब मैं आवश्यक समझूंगा, तुम्हें बुला लूंगा।' जब उसे पता चला कि गुरुदेव ने परलोक गमन की घोषणा की है, तो उससे रहा नहीं गया, लेकिन गुरु-आज्ञा में बंधा हुआ... बेबस...आंसू बहाता धान कूटता जा रहा था। तभी उसको लगा–गुरुदेव उसे पुकार रहे हैं... और सारे काम छोड़ कर दौड़ पड़ा गुरु से मिलने के लिए... लेकिन रोक दिया गया... कारण पूछा, तो पता चला कि वहां लिखे वाक्य का अर्थ जो समझ सकेगा, गुरुदेव उसी से मिलेंगे। उत्सुकता से भरा वह श्यामपट्ट के पास पहुंचा और जैसे ही उसने वाक्य को पढ़ा मदमस्त हो कर नृत्य करने लगा, हंसने लगा, उछलने लगा... दो चार शिष्य उसे पकड़ कर ऋषि के पास ले गये और विनती की–'इस नासमझ को क्षमा करें, आपके द्वारा लिखे वाक्य को पढ़कर यह ऐसी क्रियाएं करने लगा है।' ऋषि शौनिक ने उसे अपने पास बुलाया और समस्त शिष्यों के सामने घोषणा की–'सही अर्थों में मेरे लिखे वाक्य को इसी ने समझा है, क्योंकि गुरु के वचन अर्थान्वेषण के लिए नहीं, हृदयंगम करने के लिए होते हैं, जैसा कि इसने किया है, अत: मैं अपनी समस्त तपस्या व ज्ञान की चेतना ऊर्ध्वपात के माध्यम से इसे प्रदान कर अपना उत्तराधिकारी घोषित करता हूं।' सेवा कोई आवश्यक नहीं, कि गुरु के पास रहकर ही की जाय, मीलों दूर रहकर, गुरुत्व का चिन्तन करते हुए भी सेवा की जा सकती है, जिसमें न तो प्रदर्शन हो, न ही स्वार्थ सम्वेदन; अपने आप को समर्पित कर किया हुआ कोई भी कार्य गुरु सेवा होती है... और तब गुरु की प्रसन्नता स्वत: प्राप्त हो जाती है।

# देवत्व जागरण की क्रिया

यह ओजस्वी प्रवचन गुरुदेव ने अपने शिष्यों को ललकारते हुए उन्हें अपने जीवन की वास्तविकता को समझाने का प्रयास किया है कि क्या है तुम्हारा जीवन, भाग्य उसका ही साथ देता है जो पुरुषार्थ के साथ कार्य करता है जिसके जीवन में गुरू के प्रति समर्पण है इस ओजस्वी वचन को बार-बार पढ़कर एक-एक शब्द को अपने जीवन में उतारें-

*श्वेताश्वेतरोपनिषद का अर्थ है कि हम ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं, श्वेत या अश्वेत, काले हैं या गोरे हैं। देवत्व जगाने की क्रिया इस उपनिषद में है। उपनिषद का तात्पर्य है कि बिल्कुल पास में बैठ करके गुरु की बात को हृदय में धारण करना।* यह उपनिषद का अर्थ है कि हम गुरु के पास बैठे हैं। केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं आत्मिक दृष्टि से उनके पास बैठकर के उनके एक-एक शब्द को सुने, ठीक उसी प्रकार से सुने जैसे अमृत पीते हैं और हृदय में हमेशा के लिए उसको धारण कर लें, जिससे कि हम वो स्थान प्राप्त कर सके जो जीवन में दुर्लभ है। आज के परिवेश में, आज के वातावरण में, आज के विचारों में लोगों के संपर्क के कारण आप इस चीज को समझे या नहीं समझें। महानता क्या है और समानता क्या है शायद आप नहीं समझेंगे। आपको समझ में आएगा तो महानता तक पहुँच जाओगे। वहां का एक अलग आनन्द है। जिसने शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया है वह समझ पाएगा कि शास्त्र का आनन्द क्या है।

जो कालीदास को पढ़ेगा वह उसका आनन्द ले पाएगा कि कालीदास ने कितनी अद्भुत कल्पनाएँ की हैं। आम आदमी नहीं समझ पाएगा।

श्वेताश्वेतरोपनिषद भी 108 उपनिषदों में श्रेष्ठ उपनिषदों की गणना में आता है।

उसमें एक श्लोक है-

दधतां सदैव दधतां परिपूर्णरूपं,
अज्ञान अन्ध दधतां सतत श्री देवः।
तस्यैव दुर्भाग्य भाग्य वदतां सहित पवित्रः
स्वात्मैव कर्म भुक्ति नं विधातृ भर्ता।।

बहुत सुन्दर श्लोक और जीवन में उतारने लायक श्लोक है। ऋषि ने कहा भाग्य और दुर्भाग्य कोई चीज नहीं होती और विधाता जैसी भी कोई चीज नहीं होती। ऐसा कहीं भी उल्लेख नहीं कि पैदा होते हुए विधाता ने आपके ललाट पर कुछ लिख दिया हो, ऐसा कहीं शास्त्रों में उल्लेख नहीं है। शास्त्रों में कहा है कि अहम् ब्रह्मास्मि, हम स्वयं ब्रह्म हैं, विधाता हैं तो दूसरे विधाता कौन से हो गए जिन्होंने आपके भाग्य में अच्छा या बुरा लिखा। ऐसा कौन सा विधाता पैदा हो गया ?

विधाता का अर्थ है ब्रह्मा, निर्माण करने वाला, निर्मित करने वाला, रचने वाला। और जब विधाता है ही नहीं तो भाग्य जैसी भी कोई चीज नहीं है। उसका निर्माण भी हम ही करते हैं क्योंकि यदि पढ़े लिखे हैं तो मिलटन, शेक्सपीयर को पढ़कर समझ सकते हैं, अंग्रेजी पढ़े-लिखे नहीं तो उनके काव्य को नहीं समझ सकते।

ठीक उसी प्रकार यदि हम ब्रह्म नहीं हैं तो भाग्य का निर्माण नहीं कर सकते। जो नहीं निर्माण कर सकते हैं वह विनाशकारी है उसको भाग्य नहीं कह सकते। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पास मकान नहीं है, यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम सफल नहीं हुए या पूर्णता प्राप्त नहीं की। हमारी केवल ईश्वर पर आश्रित होने की आदत पड़ गई है।

यह बहुत बड़ी बात कही है इस उपनिषद ने। बाकी सब शास्त्रों ने ईश्वर के अस्तित्व को माना है। इस उपनिषदकार

ने कहा कि हम स्वयं ब्रह्म हैं तो फिर विधाता कौन है। हम स्वयं विधाता हैं।

इसलिए ब्रह्म की परिभाषा इस श्लोक में की गई है कि पाँच साल का प्रहलाद भी पूर्ण ब्रह्म था, शुकदेव पाँच साल के थे तब भी पूर्ण ब्रह्म थे और कश्यप अस्सी साल के थे तब भी पूर्ण ब्रह्म नहीं थे। जो गुरु के समीप रह सकता है और गुरु के हृदय में प्रवेश कर सकता है वह ब्रह्म है। यह श्लोक ने परिभाषा दी है। जो गुरु के समीप रहता है आत्मिक रूप से, वह ब्रह्म है और वह गुरु के हृदय में प्रवेश करे। गुरु का भी आप पर स्नेह रहे, वह तब रहेगा जब आप आज्ञा पालन करेंगे, जब आप नजदीक होंगे, आप उनके आत्मीय होंगे। इतने नजदीक कि आप उपनिषद बन जाएंगे। आप उनके हृदय में उतर जाएंगे तब आप ब्रह्म बन जाएंगे।

ब्रह्म की व्याख्या ऋषि ने बिल्कुल नए तरीके से की। ब्रह्मचारी रहने को ब्रह्म नहीं कहा, शास्त्र पढ़ने वाले को ब्रह्म नहीं कहा गया और ऐसे सैकड़ों ऋषि हुए जिन्होंने विधिवत ज्ञान प्राप्त नहीं किया, स्कूल में नहीं पढ़े और उन्हें ब्रह्म कहा गया।

विश्वामित्र सैकड़ों वर्षों तक ब्रह्म कहलाए ही नहीं। ब्रह्म ऋषि नहीं कहलाए, राज ऋषि कहलाए। बहुत बाद में ब्रह्मऋषि कहलाए क्योंकि वे अपने गुरु के हृदय में उतर नहीं पाए। अपने अहंकार की वजह से, घमंड की वजह से अलग धारणाओं की वजह से ब्रह्म ऋषि नहीं कहला पाए और बहुत बाद में जब गुरु के हृदय में उतर सके तो ब्रह्म ऋषि कहलाए।

इसका तात्पर्य यह है कि जो गुरु के हृदय में उतर सकता है चाहे जो भी हो, चाहे मैं भी हूँ और उनका इतना प्रिय बन सकूं कि उनके हृदय में उतर सकूं, उनके होठों पर अपना नाम लिखवा सकूं, गुरु को याद रहे, कि यह कौन है। हजारो लाखों शिष्यों के नाम होठों पर नहीं खुदते और होठों पर नाम अंकित करने के लिए गुरु के हृदय में उतरना आवश्यक होता है और उसके लिए असीम प्यार की आवश्यकता होती है। समर्पण की आवश्यकता होती है और प्राणों से प्राण जुड़ने की जब क्रिया होती है तो प्राणों में उतारा जा सकता है। जब उसके बिना रह नहीं सकें तो हृदय में उतरा जा सकता है। जिसके बिना संसार सूना-सा लगे उसके हृदय में उतरा जा सकता है।

हृदय में उतरने के लिए आपकी परसनैलिटी आपकी सुन्दरता, आपकी महानता, आपकी विद्वता, आपकी ज्ञानता ये सब अपने आप में गौण हैं। इनका कोई महत्व नहीं है इसलिए श्वेताश्वेतरोपनिषद ने भाग्य और दुर्भाग्य की बिल्कुल नयी व्याख्या की। उसने सब कुछ आपके हाथ में सौंप दिया कि आप स्वयं ब्रह्मा हैं, आप स्वयं भाग्य निर्माता हैं, आप स्वयं दुर्भाग्य निर्माता हैं, आप स्वयं उपनिषदकार हैं और आप स्वयं उपनिषद हैं। आप स्वयं गुरु के हृदय में उतरने की क्षमता रखते हैं, आप स्वयं गुरु के हृदय में न उतरने की क्षमता रखते हैं। सारी बागडोर आपके हाथ में सौंप दी उस उपनिषदकार ने और मैं समझता हूँ कि 108 उपनिषदकारों में से इसने बिल्कुल यथार्थ चिंतन किया है।

यह श्लोक सोने के अक्षरों में लिखने के योग्य है। इसलिए कि पहली बार अहसास हुआ कि हम सामान्य मनुष्य नहीं हैं, हम स्वयं नियंता हैं, निर्माणकर्ता हैं। मैं बहुत कुछ हूँ और मैं स्वयं का निर्माण करने वाला हूँ और मैं सामान्य शरीर से प्रारम्भ होकर के बहुत ऊंचाई तक पहुँचने वाला हूँ, पैदा होते समय व्यक्ति महापुरुष नहीं होता। एक भी महापुरुष पैदा नहीं हुआ। आगे जाकर के महापुरुष बने। शुरू में राम अपने आप में महापुरुष थे नहीं। न कृष्ण महापुरुष थे, न बुद्ध महापुरुष

थे। राजा के पुत्र थे वे सब। शुरू में सामान्य बालक थे वैसे ही दौड़ते थे, घूमते थे, खेलते थे। वैसे ही थे जैसे हम और आप हैं। बाद में जाकर उन्होंने उस चीज को समझा जिसका मैंने अभी उल्लेख किया कि मुझे अगर कुछ निर्माण करना है और कुछ बनना है तो मेरी बागडोर मेरे हाथ में है। जब यह भाव आपके मन में रहेगा तो यह भाव भी रहेगा कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। यह भाव हो कि मैं तो अपना खुद का हूं नहीं, मैं किसी के हृदय में उतर चुका हूं।

जब उतर चुका हूं तो यह उनकी ड्यूटी है कि वह मुझे उस जगह पहुँचाए। पत्नी शादी करने के बाद निश्चिंत हो जाती है कि कि पति की ड्यूटी है कि झौपड़ी में रखे, महल में रखे, गहने पहनाए या नहीं पहनाए, मारे या प्यार करे। वह अपना हाथ उसके हाथ में सौंप देती है।

इसलिए कबीर ने कहा कि मैं राम की बहुरिया हूं। सूर ने कहा कि मैं कृष्ण की प्रेयसी हूं। इसलिए जायसी ने कहा कि मैं तो सही अर्थों में नारी हूँ, ईश्वर की चेरी हूं, दासी हूं, ये सब पुरुष हैं जिन्होंने ये बाते कहीं और इसलिए कहा कि उन्होंने अपने आपको ईश्वर के सथों में सौंप दिया है और आप गाते हैं कि

*'सब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथो में।*
*है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।'*

मगर जीवन में यह भाव उतारने की क्रिया होनी चाहिए केवल बोलने की क्रिया नहीं होनी चाहिए। बोलने से आप अपने आप में ही रहेंगे। करने की क्रिया से आप उनके हृदय में उतर सकेंगे। अंतर यहीं पर आता है। जब आप अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देंगे तो ब्रह्म बन पाएंगे।

पूर्ण रूप से समर्पित करने का मतलब है कि आप अपना अस्तित्व खो दें, यह भूल जाएं कि मैं क्या हूँ तो आप कुछ प्राप्त कर पाएंगे और जिसने खोया है उसने सब कुछ प्राप्त किया है। मैं शिष्यों के पास बैठता हूँ तो एक घण्टा खोता हूँ, अगर यह नहीं खोता तो आपका प्यार, आपका समर्पण नहीं पाता।

बिना खोए कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता और खोने के लिए चिंतन नहीं किया जाता। उसके लिए तो अंदर का भाव होना चाहिए और अंदर के भाव के लिए संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है। संकल्प शक्ति ही व्यक्ति को पूर्ण ऊंचाई तक पहुँचा सकती है।

हम द्वंद्व में जीते हैं और पूरा जीवन द्वंद्व में बिता देते हैं। चाहे गृहस्थ हैं या संन्यासी हैं पूरा जीवन द्वंद्व में बिताते हैं, जीवन के अस्सी साल की उम्र में सोचते हैं क्या करें, क्या नहीं करें। प्रतिक्षण आपके मन में तर्क-वितर्क चलता ही रहता है और आप निर्णय नहीं कर पाते। लोग जहां आपको ठेलते हैं आप ठेल जाते हैं क्योंकि आप अपने हाथ में नहीं होते।

ऐसे व्यक्ति साधारण होते हैं, मुट्ठी भर व्यक्ति, लाख में से एक दो व्यक्ति अपना जीवन अपने हाथ में रखते हैं। औरंगजेब जब राजा बना तो उसको हाथी पर बिठाया गया कि हमारे यहां पर यह परंपरा है कि हाथी पर बैठकर राजतिलक किया जाता है। औरंगजेब पहली बार हाथी पर बैठा सीढ़ी लगा करके। बैठने के बाद उसने कहा कि मुझे लगाम दीजिए

जिससे कि मैं इसे चलाऊँ जैसे घोड़े की लगाम होती है, ऊंट की होती है।

सेनापति ने कहा-शहंशाह-ए-आलम हाथी की लगाम नहीं होती। वह एकदम से नीचे उतर गया, उसने कहा कि मैं उसकी सवारी नहीं करूँगा, जिसकी लगाम नहीं होती। मैं यह सवारी नहीं कर सकता, यह सवारी मेरे काम की नहीं है। वह जीवन भी काम का नहीं है जिसकी लगाम आपके हाथ में नहीं है। आपका अर्थ है कि शिष्य और गुरु का एकात्म क्योंकि आप तो अपने को समर्पित कर चुके। वह जीवन जीना बेकार है जो आपके हाथ में नहीं है, वह जीवन सार्थक है जिसमें गुरु से सामीप्यता हो, प्रसन्नता के साथ सामीप्यता हो, पूर्णता के साथ सामीप्यता हो, प्रेम के साथ सामीप्यता। मजबूरी के साथ सामीप्यता नहीं हो सकती, छल-कपट और झूठ के साथ सामीप्यता नहीं हो सकती।

यदि आप कोई गाली दे दें तो कोई उसे सुने या नहीं सुने, गुरु उसे सुने या नहीं सुने मगर वातावरण में वह बात तैरती है और आपको नीचे के धरातल पर उतार देती है। आप जब भी ऐसी कोई बात करते हैं, निन्दा करते हैं या गाली देते हैं तो अपने आप में एक सीढ़ी नीचे उतर जाते हैं। जब भी आप चिन्तन करते हैं कि आप उन मुट्ठी भर लोगों में से एक बनेंगे, बनूंगा तो नानक बनूंगा, वीर विक्रमादित्य बनूंगा, तो आप एक कम आगे बढ़ जाते हैं। विक्रमादित्य भौतिक दृष्टि से एक पूर्णता प्राप्त राजा और नानक एक फक्कड़ प्राप्त दोनों की तरह जीना चाहें तो राजा की तरह जीएं। मगर गधे की तरह काम करेंगे तो राजा की तरह जी पाएंगे। शैक्सपीयर ने कहा है कि दिन में गधे की तरह जीना चाहिए और रात में राजा की तरह जीना चाहिए।

श्वेताश्वेतरोपनिषद में कहा है कि वह चाहे बालक हो, पुरुष हो या स्त्री हो जो जीवन अपने हाथ में रखता है या गुरु के हाथ में रखता है वही सफल हो सकता है। सिक्के को हम दो भागों में नहीं बांट सकते कि यह सिक्का अगला भाग है और यह पिछला भाग है। सिक्के के दो भाग अलग-अलग होते नहीं। एक ही सिक्के के दो भाग होते हैं।

इसी तरह एक ही परसनैलिटी के दो भाग होते हैं जिसमें एक को गुरु कहते हैं, एक को शिष्य कहते हैं। दोनों को मिलाकर एक पूरा सिक्का बनता है और वह बाजार में चलता है, जीवन में चलता है।

जब शिष्य गुरु में मिल जाता है, प्रसन्नता के साथ में तो यह मिलन एकनिष्ठता की वजह से होता है। एकनिष्ठता का अर्थ है निरंतर गुरु कार्य में संलग्न और सचेष्ट रहना। मेरा मतलब यह नहीं है कि आप मेरा काम करें। मैं तो केवल श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर रहा हूँ। आप गुरु को देखें या नहीं देखें परन्तु प्रतिक्षण उनके कार्य में संलग्न रहते हैं, सचेष्ट रहते हैं, निरन्तर आगे बढ कर उनके कार्य को करते हैं तो मन में एक संतोष होता है कि मैंने वास्तव में एक क्षण को जिया है, फेंका नहीं है इस क्षण को। इस क्षण में मैंने कुछ सृजन किया है, व्यर्थ नहीं किया है इस क्षण को। इस क्षण में कुछ रचना की है, गालियां नहीं दी हैं। इस क्षण में किसी का स्मरण किया है, किसी के हृदय में उतरने की क्रिया की है। क्षण आपका है, आप चाहें तो दो घंटे ताश खेलकर बिता दें, वह चाहे आप चिंतन करके या कोई कार्य करके बिता दें।

भाग्य या जीवन तो आपके हाथ में है। सामान्य मनुष्य बस जीवन जी कर बिता लेते हैं। आप जाकर देख लें सड़क पर सब सामान्य मनुष्य है। उनमें कुछ विशेषता है ही नहीं, उन्हें पता ही नहीं कि उनके आस-पास कौन रहता है।

शिव कहाँ रहते हैं यह मुझे मालूम है क्योंकि हर क्षण मैंने सृजन किया है। इस पद को प्राप्त करने के लिए तिल-तिल

करके अपने खून को जलाया है। जलाया है तो आप पूरा देश, पूरा विश्व मानता है कि यह कुछ परस्नैलिटी है। उस सृजन को करने के लिए व्यक्ति को अपने आप को जलाना ही पड़ता है।

खून जल जाता है तो वापस आ जाता है, मांस जल जाता है तो वापस आ जाता है, मगर गया हुआ समय वापस नहीं आता। अगर मैं कंकाल भी हो जाऊं, मांस भी गल जाए तो मांस वापस चढ़ जाए। मांस चढ़ाने वाले बहुत मिल जाएंगे जो मिठाई खिला देंगे, घी खिला देंगे, मालिश कर देंगे तो मांस चढ़ जाएगा।

मगर कोई मुझे ज्ञान नहीं सिखा सकता, धर्मशास्त्र नहीं सिखा सकता, धर्मशास्त्र का सार नहीं सिखा सकता। कोई भाग्य का निर्माण करके मुझे नहीं दे सकता। मुझे महानता कोई नहीं दे सकता। वह तो सब मुझे खुद को प्राप्त करना पड़ेगा, इसके लिए खुद को जलाना पड़ेगा। उसके लिए रचनात्मक चिंतन करना पड़ेगा। उसके लिए प्रेम करना पड़ेगा, किसी के हृदय में उतरना पड़ेगा और एकनिष्ठ होना पड़ेगा।

किनारे पर खड़े होकर नदी को या तालाब को भी पार नहीं किया जा सकता। आप सोचेंगे कि गुरुजी को भी देख लेते हैं, घर को भी देख लेते हैं और बाहर का काम भी देख लेते हैं, सब कुछ एक साथ कर लेते हैं-यह एकनिष्ठता नहीं है।

एकनिष्ठता का अर्थ है कि एकचित्त होकर के तीर की तरह एक लक्ष्य पर अचूक हो जाना। और जो तीर की तरह चलता है वह जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त करता है और जो सर्वोच्चता प्राप्त करता है उसे संसार देखता है, और जिसको संसार देखता है उसका जीवन धन्य होता है। और आपकी पीढ़ियां जो स्वर्ग में बैठी होती हैं, वे भी धन्य अनुभव करती हैं कि हमारे कुल में कोई तो पैदा हुआ तो पूरे भारत में विख्यात है पूरा भारतवर्ष इनको स्मरण करता है, इनकी आवाज पर लाखों एकत्रित हो जाते हैं। इनकी आवाज पर लाखों लोग नाचते लग जाते हैं, झूमने लग जाते हैं। उन्हें भी लगता है कि कुछ तो है इस बालक में कुछ है और उनको वह प्यारा अनुभव होता है।

और व्यक्ति पहले दिन से लगाकर अंतिम दिन तक बालक ही रहता है यदि सीखने की क्रिया हो, निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया हो, यदि प्यार करने की क्रिया हो और वह क्रिया भी आपके हाथ में है।

इस उपनिषद में कहा गया है कि सब कुछ आपके हाथ में है आप कैसा जीवन जीना चाहते हैं, घटिया, रोते-झींकते हुए दुख में अपने जीवन को बर्बाद करते हुए या अपने आप एकनिष्ठता प्राप्त करते हुए जीवन में प्रत्येक क्षण आनन्द प्राप्त करते हुए मुस्कुराहट के साथ में, चिन्तन के साथ में, कार्यों में डूबते हुए और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए।

कैसा जीवन आप व्यतीत करना चाहते हैं। वह आपके हाथ में है और यही आपके भाग्य का निर्माण करने वाला तथ्य होता है। इसलिए मैं हर क्षण को रचनात्मक बनाने की ओर अग्रसर रहता हूँ। यहाँ भी आया हूँ तो इससे पहले चार पेज लिखकर आया हूँ और भी लिखा है वह मौलिक लिखा है, जो कुछ बोल रहा हूँ वह मौलिक है क्योंकि मैं मौलिक व्यक्ति हूँ, नकलची व्यक्ति नहीं हूँ। मैं जूठन नहीं खाता हूँ, मैं झूठ नहीं बोलता हूँ।

लोग बोल चुके हैं वही वापस अपने शब्दों में नहीं सुनाता हूँ, जो किसी ने आज तक नहीं बोला है वह प्रवचन मैं बोलता हूँ और पिछले पचास वर्षों में किसी के द्वारा कही गयी बात मैंने नहीं सुनाई है। जो कुछ मैंने अनुभव किया है वह मैं

सुनाता हूँ, जो कोई श्लोक है उसकी मौलिक व्याख्या करके सुनाता हूँ। जो कुछ मैंने कहा है वह कालजयी है, काल उसे मिटा नहीं सकेगा।

जो श्लोक है उसकी व्याख्या जिसने लिखा है उस ऋषि ने की होगी और किसी ने नहीं की होगी। उसका तथ्य समझा नहीं होगा, उसका चिन्तन समझा नहीं होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि गीता को कृष्ण के अलावा किसी ने समझा नहीं है। उनके श्लोकों को लोगों ने समझा ही नहीं। उनकी नवीन ढंग से चिंतन व्याख्या होनी आवश्यक है यह एक जीवन का मेरा लक्ष्य है, उद्देश्य है।

आपका भाग्य दुर्भाग्य, आयु पूर्णायु, अमरत्व और मृत्यु, पूर्णता और अपूर्णता सब कुछ आपके हाथ में है, मगर उसका बेस एकनिष्ठता है। आप जीवन में एकनिष्ठ बने ऐसा ही मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

श्वेताश्वेतरोपनिषद बहुत ही महत्वपूर्ण उपनिषद है और इसका भाव विश्व आज नहीं तो कल अवश्य ही समझेगा और जब समझेगा तो यह ग्रंथ सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा होगा। इस उपनिषद में ऋषि ने अपने सारे ज्ञान को बांध कर रख दिया है और उन्होंने कहा कि व्यक्ति में कमी है ही और यह कमी रहेगी भी कि वह समझते हुए भी नासमझ बना रहता है। जानते हुए भी अज्ञानता अपने अंदर स्थापित करता रहता है, प्रकाश की किरण बिखरने पर भी वापस अंधकार में स्वयं को ठेल देता है।

ऋषि यह कहना चाहता है कि मैं समझा रहा हूँ शिष्यों को मगर शिष्य पाँच मिनट के बाद फिर इस ज्ञान की किरण पर अपने अंधकार को ढक देंगे और मेरा कहा हुआ कुछ बेकार हो जाएगा।

जो चिंतन मैंने प्रस्तुत किया है वह दो मिनट या पांच मिनट रहेगा और वापस इसके ऊपर रेत जम जाएगी और यह चिंतन समाप्त हो जाएगा। यह व्यक्ति का स्वभाव है और रहेगा। और जो इस स्वभाव को धक्का मार कर आगे निकल जाता है वह अपने आप में ऊंचाई की ओर पहला कदम रखता है।

तो ऋषि ने पहली बात यह कही कि व्यक्ति जानते हुए भी अनजान बना रहता है।

क्योंकि अनजान बना रहना उसकी प्रवृत्ति है। अनजान इसलिए बना रहता है कि वह सुरक्षित है, वह कहता है मुझे इसका ज्ञान नहीं क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं। परंतु ऐसा कहकर, वह अपने को छलावा देता है, दुनिया को मूर्ख नहीं बना रहा है अपने को मूर्ख बना रहा है।

दुनिया जैसी चीज इस संसार में है ही नहीं। दुनिया जैसा शब्द है ही नहीं संसार जैसा शब्द है ही नहीं देश जैसा भी कोई शब्द नहीं है क्योंकि देश या संसार या विश्व ये सब व्यक्तियों के समूह से बनते हैं। ऐसा नहीं कह सकते कि यह देश है। एक नक्शा है वह देश तो हो नहीं सकता। देश के लिए आवश्यक है कि लोग हो। एक निश्चित भूभाग पर रहने वाले लोग देश के निवासी कहलाते हैं। आप भारतवर्ष के लोग हैं इसलिए भारतवर्ष है। भारत में कोई मनुष्य रहेगा ही नहीं तो भारतवर्ष होगा ही नहीं।

इसलिए देश जैसी चीज नहीं मनुष्य जैसी चीज है। चाहे वह मनुष्य लूला हो, लंगड़ा हो, ज्ञानी हो, अज्ञानी

हो कैसा भी हो और अगर किसी बात को वह नहीं समझेगा तो वह भी नहीं समझेगा।

वह अंधकार में होगा तो देश भी अंधकार में होगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में देश है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में राष्ट्र है क्योंकि व्यक्ति मिलकर ही अपने आप में राष्ट्र बनते हैं।

इसलिए राष्ट्र पुरुष की कल्पना की गई है, श्वेताश्वेतरोपनिषद में, राष्ट्र, भू-भाग की कल्पना नहीं की गई। व्यक्ति राष्ट्र है, देश कोई चीज नहीं है, राष्ट्र कोई चीज नहीं है।

आप मिलकर के बैठे हैं तो समाज है। यह तेली समाज है, यह ब्राह्मण समाज है या कोई भी समाज है, तो वह समुदाय विशेष है जिसमे लोग हैं कोई। एक ही तरह के काम करने वाले हैं इसलिए वह जाति या समाज है और ये ही समाज मिल जाते हैं तो देश बन जाता तो मूलाधार तो मनुष्य है और अगर मनुष्य अपने ऊपर अंधकार की चादर ओढ़ लेगा। तो ज्ञान आ ही नहीं सकता। मनुष्य जानबूझ कर इसलिए अनजान बना रहता है क्योंकि इसमें कुछ प्रयत्न नहीं करना पड़ता इसलिए देश आगे नहीं बढ़ पाता है या तो भौतिक क्षेत्र में बढ़ जाएगा और आध्यात्मिक क्षेत्र में पीछे रह जाएगा जैसे अमेरिका है। उसके पास परमाणु बम है परन्तु मनुष्यों को प्रसन्नता देने योग्य कोई चीज नहीं है। और आपने अमेरिकियों को देखा नहीं होगा-हरदम उदास, चिंताग्रस्त, तनावग्रस्त दुःखी रहते हैं। मुस्कराहट केवल शब्दकोश में रह गई है यहां पर। व्यक्ति एक यंत्र बन गया है।

मैंने उनके समाज को देखा है दो-दो महिने एक बार नहीं दस बार उनके यहाँ रहा हूँ। वे सुबह पांच बजे उठते हैं, दौड़ते हैं। स्नान करते हैं, पत्नी भागती है, नौकरी की तरफ। उसे चिंता नहीं है कि पति उठा या नहीं उठा। और पति फिर उठता है, खुद चाय बनाता है और भाग जाता है, काम पर। बेटी भी खुद चाय बनाती है और चली जाती है क्योंकि हरेक की अलग-अलग नौकरी है। और हफ्ते में एक बार सब मिल पाते हैं, सडे के दिन। तब मालूम पड़ता है यह मेरे पिता हैं, इनका चेहरा, ऐसा है, ये मेरा बेटा है इसका चेहरा ऐसा है।

रात को कोई दस बजे आता है, कोई ग्यारह बजे आता है, कोई नौ बजे आता है, सब डिनर बाहर करते हैं। जीवन का वह सब आह्लाद, वह खुशी समाप्त हो जाती है क्योंकि भौतिक क्षेत्र में तो वे बहुत आगे बढ़ गए परंतु उनका यह जो मूल ज्ञान है वह समाप्त हो गया। और यह समाप्त हो गया तो जीवन का कोई अर्थ है ही नहीं। और अगर आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ गए और भौतिक क्षेत्र में पीछे रह गए तो भी बेकार हो गए।

इसलिए उस भौतिकता को आध्यात्मिकता द्वारा प्राप्त किया जाए। मैं आध्यात्मिकता को धर्म के अर्थ में नहीं ले रहा हूँ। आध्यात्मिकता धर्म नहीं है। धर्म तो एक अलग चीज है। आप मजबूर है कि आपने हिंदू के घर जन्म ले लिया तो आप हिंदू हैं, यदि आप मुसलमान के घर जन्म लेते हैं तो आप मुसलमान हैं। आपके हाथ में नहीं था मुसलमान बनना या ईसाई बनना या हिंदू बनना। यह तो एक संयोग है, चांस है कि हिंदू के घर जन्म ले लिया। आपकी चॉइस नहीं थी।

आदमी अंधकार की चादर ओढकर बहुत प्रसन्नता अनुभव करता है और उपनिषदकार कहता है कि इसीलिए मेरा सारा कहना व्यर्थ है। आदमी समझेगा ही नहीं और समझने की कोशिश ही नहीं करेगा और कोशिश नहीं करेगा तो मेरा
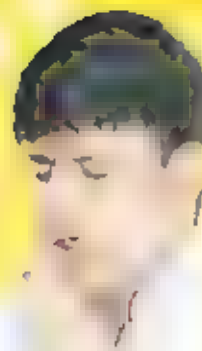
चीखना चिल्लाना व्यर्थ हो जाएगा। वह अपने शिष्यों से ऐसा कहता है।

ऋषि कहता है कि जीवन का उद्देश्य क्या है और वह कहता है कि भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्चता प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है। ऊंचाई प्राप्त करना नहीं है, सर्वोच्चता प्राप्त करना है। और उसने भौतिक आध्यात्मिक दोनों शब्द प्रयोग किए हैं।

भौतिकता का तुम्हारा अर्थ अगर बहुत विलासपूर्ण, दौलत, अय्याशी और फाइव स्टार है तो गलत है भौतिकता का अर्थ है कि कहीं किसी के सामने हाथ नहीं पसारना पड़े और जहाँ जितनी जरूरत हो मुझे प्राप्त हो जाए उसे भौतिकता कहते हैं। जितनी जरूरत हो उतना प्राप्त हो जाए लडकी की शादी के लिए किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पडे उससे ज्यादा तो अपने आप में तनाव ही तनाव है उसका कोई तनाव नहीं है क्योंकि आवश्यकता से ज्यादा होते ही तृष्णाएं आरम्भ हो जाएंगी। एक पंखा नहीं दो पंखे होने चाहिए। कूलर लगना चाहिए, ए.सी. लगना चाहिए। फिर तृष्णाए बढ जाएंगी और वापस चादर आ जाएगी अधकार की।

ऋषि ने कहा सर्वोच्चता प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है और सर्वोच्चता का प्रारभ अंदर से होता है। इसलिए यजुर्वेद में कहा गया है-

*तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु।*

जीवन की सर्वोच्चता मन है। जीवन की सर्वोच्चता मन में धारण करने की शक्ति है। जीवन की सर्वोच्चता मन में उस चिंतन को बिठाने की शक्ति है। जीवन की सर्वोच्चता उस अंधकार को परे धकेलने की क्रिया है और वह अंधकार धकेल कर ही दूर किया जाता है। निश्चय कर लिया जाता है कि मुझे ऐसा करना है जब अंधकार आए उसे धकेल दिया फिर मन में विचार आए कि यह गलत है, मुझे तो करना यह है। यह संघर्ष व्यक्ति को करना पड़ेगा तो मन से लड़ना पड़ेगा। पड़ोसियों से लड़ने से और आस-पास के लोगों से लड़ने से वह मामला हल नहीं होगा।

तो मन से हम कैसे लड़ें ? मन से लडने के लिए धारणा शक्ति हो। ध्यान धारणा और समाधि ये तीन शब्द हैं। मन में धारणा शक्ति हो कि मुझे सर्वोच्चता प्राप्त करना ही है। बस एक ही लक्ष्य, एक ही बिंदु, एक ही जीवन का चिंतन एक ही विचारधारा। और उसका आधार ईमानदारी होना है। ईमानदारी नहीं है तो सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती।

पापियों को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती, गलत कार्य करने वालों को या वेश्याओं को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती। झूठ बोलने वाले व्यापारियों या छल करने वाले व्यक्तियों को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती। वे हरदम मन में डरते हैं, सशंकित रहते हैं हरदम मन में तनावग्रस्त रहते हैं। पैसा तो है पर नींद नहीं आती। वे सर्वोच्च नहीं हैं।

सर्वोच्च की परिभाषा ऋषि ने दी है कि भौतिकता और आध्यात्मिकता में परिपूर्णता प्राप्त करना और अपने आप में पूर्ण आनंद महसूस करना।

और जो करोड़पति हैं उससे तो ज्यादा करोड़पति हैं, उससे तो ज्यादा करोडपति अमेरिका के सफाईकर्ता हैं। बीस लाख की गाड़ी में सफाईकर्ता आते हैं और सफाई करके घर को चले जाते हैं, अपनी आँखों से मैंने देखा है। जब मैं न्यूयार्क में था तो उसके घर में जो सफाईकर्ता थी वह कैडिलैक गाड़ी में आती थी। मैं बालकनी में बैठा था। उसने झाडू लगाई, बर्तन

साफ किये और गाड़ी में बैठकर वापस चली गई। मेरी आँखों देखी घटना है।

मैं वहां एक डाक्टर के घर में ठहरा था। मैंने कहा यह कौन है? वे बोले यह नौकरानी है। मैंने कहा यहां की नौकरानी अगर कैडिलेक में चलती है तो हम तो कहीं खड़े ही नहीं हैं। वे बोले यहा तो सब ऐसा ही होता है। नाली साफ करने वाला अपनी गाड़ी में आता है और साफ करके चला जाता है।

अब कहा तुलना करोगे आप उस वैभव की। सफाईकर्ता की स्टेज यह है तो व्यापारी की स्टेज क्या होगी मगर उनके मन में फिर भी संतोष नहीं है। तो फिर वह जीवन का संतोष या आनंद नहीं है। जीवन का आनंद प्रेम है। जीवन का आनंद ईमानदारी है।

जब तक कार्य करें ईमानदारी के साथ करें, रात को सोए तो मन में पूर्ण संतोष हो कि आज का दिन पूर्ण

ईमानदारी के साथ व्यतीत हुआ। चोरी न करने को ईमानदारी नहीं कहते हैं। यह परिभाषा गलत है।

ईमानदारी का अर्थ है कि आपने आज अगर चार रोटी खाई है तो चार रोटी का हक अदा कर दिया है, चार रोटी खाई तो आठ का हक अदा कर दिया चाहे अपने घर में ही सही। मैं अपने घर में हूं और 6 रोटी का हक अदा कर दूं सलाह से, कार्य से या प्रेम से। जो मेरी ड्यूटी है उस प्रकार से। अगर अस्सी साल का हूँ तो किसी न किसी तरह क्रियाशील बन करके। नौकरी कर रहा हूं, व्यापार कर रहा हूँ तो पहली बात ईमानदारी है और दूसरी बात ऋषि ने कही है निष्ठा। निष्ठा का अर्थ है कि पूर्ण लगन के साथ यह मुझे कार्य करना है। यह तनाव नहीं रहे कि मैंने समय को बरबाद कर दिया। क्योंकि समय वापस नहीं प्राप्त हो सकता। तुम करोड़ रुपये खर्च करके भी बीते हुए समय को वापस नहीं प्राप्त कर सकते।

आपकी आने वाली पीढ़ियां भी ऐसा नहीं कर सकती। आपने कल के दिन जो काम कर लिया वह कर लिया, उसको वापस नहीं ला सकते।

समय तो अपने आप में मूल्यवान है ही। निष्ठा का तात्पर्य है कि हमने उस इच्छा को, उस समय को जी लिया और ईमानदारी के साथ निष्ठा के साथ काम करके जी लिया।

और तीसरी चीज ऋषि ने बताई है सर्वोच्चता को प्राप्त करने के लिए अपने अदर एक आह्लाद की रोशनी पैदा करनी पड़ेगी और पहली दो चीजें नहीं होंगी तो अंदर आह्लाद भी नहीं होगा। क्योंकि अगर चादर ओढी है अंधकार की, आलस्य की तो कुछ नहीं हो सकता। और ये दोनों चीजे हो, ईमानदारी और निष्ठा तो उसके लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। और निष्ठा के साथ काम करना है तो मन में आह्लाद का होना आवश्यक है।

मन तो आलस्य की तरफ बढ़ेगा कि यह तो कहने सुनने की बात है। ऋषि तो यही कह रहा है कि मैं कहूँगा और आप कहेंगे कि यह सब किताबों की बात है। वह पहले ही कह रहा है कि शिष्य कहेंगे कि यू ही कह रहा है और आप इस चीज को मन में धारण करेंगे नहीं और नहीं करेंगे तो साधारण व्यक्ति बन कर रह जाएगे।

आप इस समाज में देश में गौरवान्वित नहीं हो पाएगे और गौरवान्वित होने के लिए कोई रास्ता है ही नहीं। लखपति बनने से गौरवान्वित नहीं हो सकते आप। क्योंकि आपसे पहले करोडों लखपति हैं। चांदनी चौक में कोई इतने छोटे से खोके में बैठा है, वह भी करोड़पति है।

क्योंकि खोके की आज जो पगड़ी है, वह कम से कम दस लाख है। दस लाख में तो वह खोका मिलता है, सामान तो बाद में आता है।

अब आप सोच लीजिए कि आप कहां पर हैं।

तो सम्पन्नता से महानता नहीं बनती। तो तीसरी बात यह बनी कि निश्चितता से उस अधकार को धकेलना ही है।

निष्ठा से यह सोच लेना है कि मुझे अपने जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त करनी ही है इन तथ्य के माध्यम से तो तीसरी
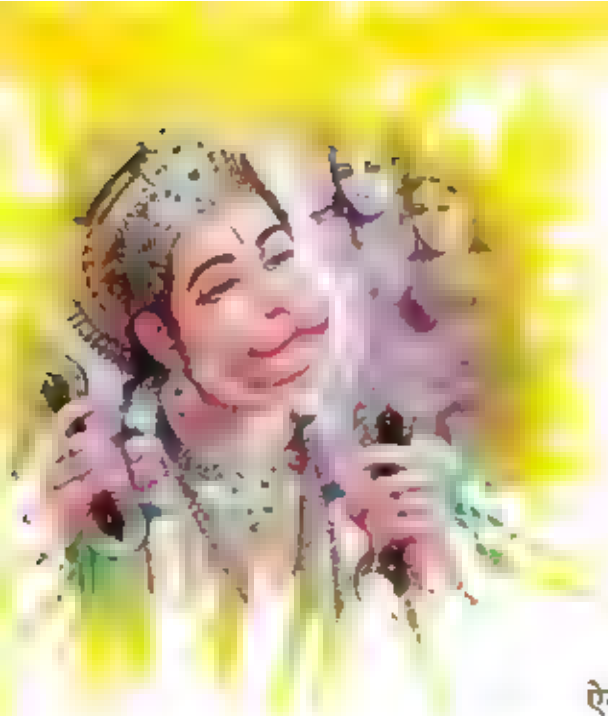
बात कि अंधकार भगा सकते हैं आह्लाद के साथ। प्रसन्नता के साथ। कोई यह सोचे कि आज बहुत काम किया कल आराम करेंगे, चार दिन यात्रा करके आया अब तान करके सोऊंगा यह आलस्य के अंधकार को और बढ़ाएगा।

हम बार-बार घुसते हैं उस अंधकार में। ऋषि कह रहा है मैं बार बार तुम्हें धकेल रहा हूं बाहर और तुम वापस उसमें घुसते हो। तुम्हारे मेरे बीच संघर्ष बस इतना ही है। मैं तुम्हें निकालता हूं और तुम बार-बार वापस अंधकार की चादर ओढ लेते हो।

इसलिए :

तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु।

तुम्हारा मन इस चादर को हटाएगा तो वह चादर हटेगी। और ऐसा करते रहोगे तो अभ्यास हो जाएगा फिर आपको काम करने में स्फूर्ति मिलेगी। फिर आपको थकावट नहीं होगी। और चौथी बात उसने बताई कि आह्लाद से प्रसन्नता, मधुरता पैदा होगी। जो स्वयं को प्रसन्न रखता हो जो आसपास के लोगों को प्रसन्न रखता है, यह अपने आप में सबसे बड़ा दान है। ज्ञान दान या लक्ष्मी दान या लंगर लगाना यह तो बहुत सैकेंडरी चीज है।

पहला दान तो यह है कि हमारे अंदर आह्लाद का ऐसा स्तोत्र हो कि हम आसपास के वातावरण को आनन्दमय बना दें। हमारे संपर्क जो आए और वह अंधकार की चादर ओढे हुए तो हम उसको उस जगह खड़ा कर दें जहां आह्लाद हो आनंद हो जहां कार्य करने की लगन हो, क्षमता हो, धुन हो।

आप सोचें कि मुझे यह काम करना है, रात को सोते समय हिसाब देना है, या तो मेरा मन मुझे धिक्कारेगा या मेरा मन कहेगा कि यह कार्य पूरा कर लिया आज का दिन सार्थक हो गया। यह परीक्षा तो आपको स्वयं करनी होगी।

और पांचवी चीज उसने कही है गुरु की आज्ञा। ऋषि यह नहीं कह रहा कि शिष्य मेरा काम करे। वह कह रहा है कि फिर कौन समझाएगा यह सब आपको ? कौन बताएगा कि अंधकार की चादर तुम्हारे ऊपर आ गई है, कौन बताएगा कि आह्लाद आया या नहीं आया ? तुम्हारी कौन सी परिभाषा है आह्लाद की ?

क्या थोड़ा सा हंसने से, या मुस्कराने से आह्लाद फूट गया अंदर से। उस आह्लाद की परिभाषा क्या हुई। दिनभर जो आपने कार्य किया उसका मूल्यांकन कौन करेगा। तुम उस अंधकार की चादर को धकेल कर आगे बढ़ गए उसका मूल्यांकन करेगा कौन ?

इसके लिए कोई न कोई व्यक्ति होना ही पड़ेगा। उस व्यक्ति को गुरु कहते हैं। यदि वह गुरु है तो वह समझाएगा कि तुम इस रास्ते पर हो, वह बताएगा कि जिंदा रहना है तो आह्लाद के साथ जिंदा रहिए नहीं तो फिर तुम्हारे ऊपर कोई दुनिया टिकी नहीं है।

तुम्हारे बिना भी दुनिया चल सकती है। आप मर जाएंगे तो कोई दुनिया रुकेगी नहीं। दुनिया तो चलेगी ही मगर आप आह्लादित हैं और पांचों गुणों के साथ जीवित हैं तो इस दुनिया में आप सर्वोच्चता के साथ हैं और आप प्रत्येक जीवनी को पढ़ लीजिए उस व्यक्ति में एक आग है, तड़प है, बेचैनी है, आह्लाद है। आगे बढ़ने की धुन है, संघर्ष करने की क्षमता है और आठ घंटे की जगह बीस घंटे काम करने की क्षमता है बर्टेंड रसेल काम करता था तो बीस घंटे काम करता था,

आइंस्टाइन काम करता था बीस घंटे, आइंस्टाइन की पत्नी जब देखती है कि आठ बज गए हैं और वह खाना खाने नहीं पहुंचे तो वह खाना परोस कर लैबोरेटरी में उसकी टेबल पर रख देती और वे काम में जुटे रहते थे।

सुबह आती तो भी काम में जुटे मिलते, वह कहती-क्या तुमने खाना खाया ही नहीं। यह काम करने की क्षमता है और इसलिए वह आइंस्टाइन बने यो तो सैकड़ों पैदा हुए, सैकड़ों मर गए। आइंस्टाइन क्यों जिंदा रहे और दूसरे लोग क्यों मर गए।

आइंस्टाइन को दो बार नॉबेल प्राइज क्यों मिला, लोगों को तो एक बार भी नहीं मिलता। इसलिए क्योंकि उनके अंदर ये पाँचों बिंदु थे। और आइंस्टाइन से सैकड़ों हजारों साल पहले ऋषि ने बता दिया था कि यह वह रास्ता है जिस पर चलकर हम वहां पहुच सकते हैं। यही हमारी मूल शक्ति है और मैं वापस ऋषि की पहली बात को दोहराता हू कि एक मिनट बाद आप वापस उस अंधकार में डूब जाएंगे, मेरा कहना बेकार हो जाएगा।

आप में भी उतनी ही क्षमता है जितनी आइंस्टाइन में थी। जितनी रसेल में थी, शैक्सपीयर में थी, मिल्टन में थी। आपने उस प्रतिमा को पहचाना नहीं। इस प्रतिभा के लिए पांच सीढ़ियाँ जिनको मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया। प्रसन्नता और प्रसन्नता के साथ काम करना और पूर्ण ईमानदारी के साथ काम करना। लगन और एकनिष्ठता के साथ काम करना। और गुरु के चरणों में समर्पित होना तो पूर्णता के साथ समर्पित होना जिससे कि रास्ता बराबर दिखाई देता रहे ऐसा नहीं हो कि हम अंधकार में चलते रहे और सोचते रहे कि हम रोशनी में हैं यह बाहर सूर्य की रोशनी रोशनी नहीं। रोशनी का अर्थ है।

तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु।

मन के संकल्प से रोशनी पैदा होनी चाहिए और इसका मूल आधार प्रसन्नता है, एक वातावरण को बनाना है। जहां भी रहें, परिवार में रहें, घर में रहें। समाज में रहें, कहीं भी जाए, चाहे राक्षसों के बीच में जाए। हमें आह्लाद बिखेरना है। और यह तब होगा जब मन बिल्कुल शुद्ध और पवित्र और दिव्य होगा कांच की तरह। अगर उस पर धूल होगी व्यभिचार की, बदमाशी की तो यह व्यर्थ होगा। और वह नुकसान आपका होगा क्योंकि आप पहली सीढी पर भी खड़े नहीं हो पाएगे, पाचवीं सीढ़ी तो आगे की बात है। और हम यह कर सकते हैं यदि हमें कुछ बनना है और ऐसा आप बन सकते हैं क्योंकि मैं आपकी प्रतिभा को जानता हूँ। मैंने सही व्यक्तियों का चयन किया है। मैं सही व्यक्ति अपने पास रखता हूँ।

मैं घास, पतवार को काट करके अलग खेत में फेंक देता हूं। गेहूँ की बाली

को जिंदा रखता हूं उसे खाद-पानी देता रहता हूँ।

किसान घासफूस को इसलिए काट देता है क्योंकि पृथ्वी की जो असली चीज है उसे घासफूस खा जाएगी और गेहूं की बाली ऊपर उठेगी ही नहीं और गेहूं की बाली को उठाने के लिए खरपतवार को काटना ही पड़ेगा।

मैं भी जो शिष्य आते हैं उनकी निराई करता रहता हूँ। मैं देखता हूं यह खरपतवार है इनको हटा दो नहीं तो यह फालतू शोषण मेरा करेगी। और फिर जिन गेहूं की बाली को मुझे उठाना है उन्हें कुछ नहीं दे पाऊंगा। क्योंकि ये सब शोषण कर लेंगे। आप मुझे प्यार करते हैं तो उतना ही प्यार मैं आपको करता हूँ क्योंकि मैं तुम्हें जीवन में सर्वोच्चता तक पहुँचाना चाहता हूँ।

*इस श्वेताश्वेतरोपनिषद के रचनाकार ने हमें सिखा दिया कि हम जमीन पर पड़े रहकर आसमान में छेद कैसे कर सकते हैं। जमीन पर खड़े होकर देवताओं के समान पूरे विश्व में कैसे वंदनीय हो सकते हैं, जमीन पर पड़े रहकर कैसे अपने माता-पिता का नाम रोशन कर सकते हैं। उस ऋषि की वाणी को मैं आपके हृदय में उतार रहा हूँ जिससे आपके हृदय का अंधकार दूर हो और प्रकाश बिखरे तो प्रकाश बिखरेगा ही, ऐसा ही मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।*

**पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी**

*परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)*

# धनदा प्रयोग

प्रयोग दीपावली के दो [illegible]
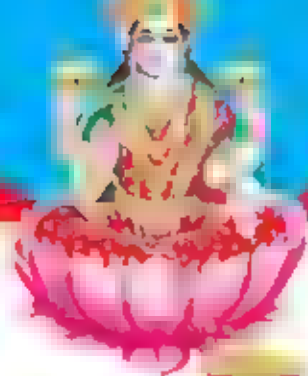
अर्थात् धन त्रयोदशी को सम्पन्न किया जाता है,

इस वर्ष दीपावली 04.11.21 को है और धन त्रयोदशी 02.11.21 को है,

अतः यह प्रयोग 02.11.21 की रात्रि को सम्पन्न करना चाहिए

इसे 'गोमती चक्र प्रयोग' भी कहा जाता है

## सामग्री

जल पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, मंत्र सिद्ध गोमती चक्र, माला, केसर ।

## विधि

रात्रि को लगभग दस बजे स्नान कर पीला आसन बिछा कर, पीली धोती पहिन कर उत्तर की तरफ मुंह कर साधक बैठ जाए। धोती के ऊपर साधक किसी भी रंग का गर्म शाल भी ओढ़ सकता है या पीली धोती ओढ़ सकता है, परन्तु कुर्ता या बनियान नहीं पहनना चाहिए। सामने लकड़ी के एक तख्ते पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त गोमती चक्र रख देना चाहिए। गोमती चक्र के दाहिनी ओर अर्थात् साधक के दाहिनी ओर तेल का दीपक लगा लेना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है।

इसके बाद निम्न मंत्र की 101 मालाएं फेरनी चाहिए। यह माला कमलगट्टे की, स्फटिक की या मूंगे की हो सकती है।

## मंत्र

**॥ॐ ह्रीं धनदायै धनधान्य समृद्धिं देहि देहि फट् स्वाहा॥**

जब 101 मालाएं पूरी हो जाए, तो साधक को चाहिए कि वह गोमती चक्र एक डिबिया में बन्द कर के रख दें। फिर दीपावली की रात्रि को जब लक्ष्मी की पूजा हो, तब उसके साथ ही इसी गोमती चक्र की पुनः पूजा करें और बाद में यह गोमती चक्र दुकान पर पैसे रखने की सन्दूक में या घर पर गहने रखने के सन्दूक में रख देना चाहिए। इससे उस वर्ष आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है। यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और सरल होने के साथ-साथ अद्भुत प्रभावयुक्त है।

*साधना सामग्री- 390*

केवल 'लक्ष्मी' शब्द का उच्चारण करने से ही जीवन में लक्ष्मी की प्राप्ति सम्भव नहीं होती, कुछ सामान्य क्रियाएं भी आवश्यक हो ही जाती हैं.....

और फिर ये प्रयोग तो जटिल या लम्बे समय तक चलने वाली साधनाएं भी नहीं, सरलतम 'आखेटक प्रयोग' हैं, यदि फिर भी कोई इनका लाभ न ले सके तो इसमें शास्त्रकारों का क्या दोष.....

# कार्तिक मास में लक्ष्मीप्राप्ति के 6 आखेटक प्रयोग

**किन्तु साधनाओं के इस विशाल जगत में अकस्मात् प्रवेश कर कुछ प्राप्त करने की लालसा रखने के स्थान पर उचित यह रहता है कि लघु प्रयोग सम्पन्न कर अपने जीवन को एक व्यवस्थित ढंग दे दिया जाए। जब व्यक्ति लक्ष्मी के** प्रति चिन्तनयुक्त होता है तभी वास्तव में वह जीवन की सम्पूर्णता की **ओर भी चिन्तनयुक्त होता है,** क्योंकि जो लक्ष्मी साधना करेगा, लक्ष्मी का चिन्तन करेगा वह केवल धन तक ही सीमित नहीं रहेगा वरन् आगे बढ़कर जीवन के अनेक पक्षों को उपनाने की क्रिया करेगा।

जीवन के विविध पक्षों में से चुनकर हम इस बार लक्ष्मी साधना के अन्तर्गत छः महत्वपूर्ण स्थितियों — व्यापार वृद्धि, ऋण मुक्ति, गृहस्थ सुख, रोग मुक्ति, विजय लक्ष्मी सिद्धि एवं मनोवांछित कार्य सिद्धि को लेते हुए पाठकों के लाभार्थ साधना जगत की श्रेष्ठतम विद्या आखेटक पद्धति के प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

## 1 व्यापार वृद्धि हेतु आखेटक प्रयोग

यदि कोई साधक व्यापार वृद्धि के प्रयासों को करने से पूर्व अपने व्यापार स्थल को एक सुरक्षा चक्र में बांध दे तो उसकी समस्या का साठ प्रतिशत से भी अधिक हल तो इसी प्रकार से हो जाता है, क्योंकि एक व्यापारी को ज्ञात-अज्ञात रूप से अपने प्रतिद्वंदियों ईर्ष्या रखने वाले पार्टनर अथवा रिश्तेदारों से घात-प्रतिघात सहने ही पड़ते हैं जिनकी कोई सीमा ही नहीं होती तब सामान्य पूजन से नहीं वरन तीव्र निवारक प्रयोगों के द्वारा स्थिति को नियंत्रित करना पड़ता है। अतः यदि समय रहते ही व्यवसायी बन्धु निवारक उपाय कर लें तो इसी में श्रेष्ठता है। इस निवारक आखेटक प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि किसी भी मंगलवार की रात्रि में अपनी दुकान को भीतर से बंद कर लाल वस्त्र बिछा कर बैठ जाए और सामने लाल वस्त्र पर ही लाल रंग से रंगे चावलों की ढेरी पर एक तांत्रोक्त नारियल रखकर तेल का दीपक लगा लें तथा मूंगे की माला से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें—

व्यापार वृद्धि मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं व्यापार लक्ष्म्यै ह्रीं श्रीं फट्॥

मंत्र जप के बाद तांत्रोक्त नारियल को सुरक्षित रख लें और जिस चावल की ढेरी पर उसे रखा था वे चावल के दाने पूरी दुकान में व कुछ दुकान के बाहर भी बिखेर दें, इससे एक सुरक्षा-चक्र निर्मित हो जाता है, साथ ही यदि कोई तंत्र प्रयोग किया अथवा कराया गया होता है तो वह भी समाप्त हो जाता है, यदि सम्भव हो तो साधक उस रात्रि में अपनी दुकान पर ही विश्राम करे और सुबह लोगों की भीड़ आने से पहले कुछ धनराशि के साथ तांत्रोक्त नारियल व माला किसी चौराहे पर रख दें। व्यापार वृद्धि का यह सरलतम और प्रत्येक बार कसौटी पर खरा उतरा अनुभूत प्रयोग है।

साधना सामग्री - [illegible]/-

## ऋण मुक्ति हेतु आखेटक प्रयोग 2

ऋण पुरुष के लिए मृत्यु के समान है लेकिन यह भी सत्य है कि व्यक्ति जीवन में विवशताओं के अधीन होकर ऋण के चक्रव्यूह में फंस जाता है। जहां खुद के भरण-पोषण की बात हो तो व्यक्ति एक बार शायद कोई समझौता भी कर ले लेकिन जहां उसके साथ घर-परिवार की जिम्मेदारी जुड़ी होती है वहां तो वह कतरा कर भी नहीं निकल सकता है और यह भी सत्य है कि ऋण की बाधा व्याप्त रहने पर फिर वह सामान्य रूप से जाती भी नहीं। यदि सामान्य रूप से ऋण की समस्या हल हो सकती अर्थात् व्यक्ति के पास धनागम का स्थायी स्रोत होता तो वह प्रारम्भ से ही इस चक्रव्यूह में क्यों फंसता? और तब तक एक उपाय शेष रह जाता है कि व्यक्ति को आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सके जिससे वह ऋण-मुक्त होता हुआ अपना खोया सम्मान प्राप्त कर जीवन-यापन कर सके।

प्रस्तुत ऋण मुक्ति प्रयोग वास्तव में आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग ही है और इस हेतु आखेटक पद्धति में बहुत सरल विधान स्पष्ट किया गया है। ऋण बाधा निवारण यंत्र (धारण) प्राप्त कर उसे अपने सामने रख किसी भी रात्रि में मूंगे की माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। किन्तु यह आवश्यक है कि समस्त सामग्री आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग द्वारा सम्पुटित एवं मंत्रबद्ध भी हो।

ऋणमुक्ति मंत्र

(आकस्मिक धनप्राप्ति मंत्र)

॥ ॐ श्रीं ऐश्वर्य लक्ष्म्यै ह्रीं नमः॥

मंत्र जप के उपरान्त यंत्र को धारण कर लें तथा माला को विसर्जित कर दें इस प्रकार प्रयोग सम्पन्न करने पर शीघ्र ही स्वप्न आदि के माध्यम से व्यक्ति को आकस्मिक धन प्राप्ति का कोई न कोई उपाय सूझता ही है अथवा इस प्रयोग के माध्यम से गुप्त धन की प्राप्ति भी सम्भव होती है।

साधना सामग्री- 600/-

## 3 पूर्ण गृहस्थ सुख हेतु अलौकिक प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख भी लक्ष्मी का ही एक स्वरूप है क्योंकि घर ही व्यक्ति का आश्रय स्थल होता है। व्यक्ति अपने कर्मक्षेत्र में जिस ऊर्जा से गतिशील होता है उसका मूल, उसका घर परिवार ही होता है। यह घर-परिवार की पूर्णता अनेक पक्षों से मिलकर बनती है जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है कि क्या व्यक्ति के घर में पारस्परिक मेल-मिलाप और प्रेम है अथवा नहीं? इस बात के अभाव में व्यक्ति का जीवन नरक तुल्य ही हो जाता है क्योंकि सारे समाज से, बाहरी वातावरण की कटुताओं से थक कर व्यक्ति अपने घर में ही चैन लेना चाहता है और वहां भी उसे यदि मन के अनुकूल सुख चैन, शान्ति न मिले तो उसका मन टूट जाता है। गृहस्थ जीवन में धन, सम्मान, पुत्र, पौत्र आदि के साथ प्राथमिक आवश्यकता इसी कलह निवारण की होती है जिससे व्यक्ति को उन्नति के लिए उचित आधार मिल सके। साथ ही यदि घर पर कोई तांत्रिक प्रयोग किया गया हो तो वह भी समाप्त हो सके।

पूर्ण गृहस्थ सुख पाने के इच्छुक व्यक्तियों को इसके लिए एक छोटा सा प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिए। पूर्ण पारिवारिक सुख की आधारभूता लक्ष्मी स्वर्णा लक्ष्मी है और किसी भी सोमवार को स्वर्णा लक्ष्मी से सम्बन्धित एक लघु प्रयोग करने से व्यक्ति को निश्चित ही मनोवांछित सुख-सौभाग्य प्राप्त होता है। साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित स्वर्णा लक्ष्मी यंत्र प्राप्त कर उसे अपने सामने रखे और चार श्रीशंखभवा द्वारा उसका पूजन करे तथा मूल स्वर्णा लक्ष्मी मंत्र की तीन माला मंत्र जप कमलगट्टे की माला से करें। इस प्रयोग को पति-पत्नी एक ही साधना सामग्री से कर सकते हैं और उचित रहता है कि पति-पत्नी दोनों संयुक्त रूप से इस साधना को सम्पन्न करें।

गृहस्थ सुख मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सौभाग्य लक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं फट्

मंत्र जप के उपरान्त चारों श्रीशंखभवा को सम्भाल कर रख लें, स्वर्णा लक्ष्मी यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। चारों श्रीशंखभव चारों रत्नों के प्रतीक हैं। कमलगट्टे की माला को यंत्र पर चढ़ा दें और भविष्य में इसका प्रयोग अन्य साधना में न करें।

साधना सामग्री 600/-

## 4 रोग मुक्ति हेतु अलौकिक प्रयोग

जीवन की सबसे बड़ी सम्पदा स्वास्थ्य की मानी गई है और जिन्हें ईश्वर की ओर से यह सौगात मिली हो उन्हें देखकर ही इसकी महत्ता समझी जा सकती है। किसी स्वस्थ व्यक्ति की खिलखिलाती हंसी और जीवन के सभी सुखों को भोगने की क्षमता देखकर ही समझा जा सकता है कि मुक्त जीवन का क्या आनन्द और चैतन्यता होती है। यह प्रयोग मूल रूप से सिद्ध लक्ष्मी के विशिष्ट वरदायक स्वरूप को लेकर रचा गया प्रयोग है जिससे सिद्ध लक्ष्मी की ही साधना इस प्रकार से की जाती है कि व्यक्ति दैहिक, दैविक और भौतिक बाधाओं से सर्वथा मुक्त होकर जीवन के चारों पुरुषार्थ प्राप्त कर सके।

सिद्ध लक्ष्मी यंत्र, रोग मुक्ति गुटिका, चार सिद्धिफल एवं हकीक की सफेद माला इस साधना की आवश्यक सामग्री है, जो रोगमुक्ति मंत्रों द्वारा सिद्ध हो। किसी भी बुधवार की प्रातः अपने सामने समस्त सामग्री रखें सभी का कुंकुम अक्षत से पूजन करें एवं निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें। यदि किसी विशेष रोग से पीड़ित हों तो मंत्र जप से पूर्व मन में संकल्प करें कि मैं 'अमुक' रोग से मुक्त होने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

रोग मुक्ति-मंत्र ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

मंत्र-जप के उपरान्त सभी सामग्री एक सफेद वस्त्र में बांधकर सुरक्षित रख लें और अगले वर्ष ठीक उसी दिन उसे विसर्जित कर दें। कई साधक इस प्रयोग को प्रत्येक वर्ष नई साधना सामग्री के साथ पुनः पुनः करके स्वयं को एवं अपने परिवार को निरन्तर रोग मुक्त बनाए रख सकते हैं।

साधना सामग्री 600/-

## 5 विजय लक्ष्मी सिद्धि हेतु अलौकिक प्रयोग

कहते हैं जिसको जीवन में विजय लक्ष्मी की सिद्धि मिल जाती है फिर वह जीवन में कहीं अटकता व उलझता नहीं है एक प्रकार से उसका जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय की प्राप्ति हेतु नये-नये मार्ग मिलते ही जाते हैं। विशेषकर राज्यपक्ष से निरन्तर सम्बन्धित होते रहने वाले व्यक्तियों के जीवन में विजय लक्ष्मी की पूर्ण सिद्धि होनी आवश्यक ही होती है। व्यापारी वर्ग, ठेकेदार एवं विधि व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति इसी श्रेणी में आते हैं और इसकी पूर्ण सिद्धि हेतु केवल एक ही उपाय परीक्षित माना गया है, जो इस आलौकिक पद्धति से प्राप्त होता है। यों तो राज्य पक्ष की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त करने की अन्य विधियां भी हैं किन्तु विजय लक्ष्मी पूर्ण रूप से सिद्धिप्रद होकर कदम-कदम पर मार्ग प्रशस्त करती चले, इस हेतु प्रस्तुत पद्धति ही सम्पूर्ण मानी गई है।

इस साधना में लघु मोती शंख, ताम्र पत्र पर अंकित विजय लक्ष्मी यंत्र आवश्यक सामग्री है। इन दोनों सामग्रियों को अपने पूजन में स्थापित कर साधक यदि स्फटिक माला से निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप कर लेता है तो उसे पूर्णरूप से श्री सम्पन्नता और वैभव प्राप्त होने की क्रियाएं बनने लगती हैं तथा केवल राज्य पक्ष से ही नहीं वरन् दैनिक जीवन से सम्बन्धित अनेक पक्षों में भी लाभ मिलने लगता है।

राज्यलाभ-मंत्र ह्रीं श्रीं ऐं ऐं श्रीं ह्रीं

साधना की पूर्णता के पश्चात् यंत्र एवं माला विसर्जित कर देनी चाहिए तथा शंख को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए। विशेष अवसरों पर साधक इसे पीले वस्त्र में लपेट कर अपने साथ भी ले जा सकते हैं।

साधना सामग्री 660/-

**आखेटक प्रयोग......**

**अर्थात् एक बार में ही सफलता प्राप्त कर लेने की क्रिया, जो नाथ योगियों के ही एक विशिष्ट वर्ग द्वारा रचे गए, तीक्ष्ण एवं तुरन्त फलदायक...**

# 6 मनोवांछित कार्य सिद्धि हेतु आखेटक प्रयोग

वस्तुतः यह प्रयोग आखेटक पद्धति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयोग है क्योंकि जहां अन्य प्रयोग एक विषय विशेष से सम्बन्धित है वहीं इस प्रयोग के अन्तर्गत साधक अपनी मनोकामना की कोई भी वस्तु अथवा स्थिति प्राप्त कर सकता है।

जीवन की सभी इच्छाओं की कदाचित साधना सम्भव नहीं होता। इसी कारणवश आखेटक पद्धति में इस दुर्लभ विधान की रचना की गई है। व्यक्ति की ऐसी कामना प्रेम से सम्बन्धित भी हो सकती है, मनोवांछित विवाह से सम्बन्धित भी हो सकती है अथवा यश, ऐश्वर्य, शत्रुनाश या किसी विशिष्ट कार्य को पूर्ण करने हेतु भी हो सकती है और व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने मन की कामना को निःसंकोच रूप से इस प्रयोग के माध्यम से पूर्ण करे। इस साधना में जिस आवश्यक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है उसे मनोकामना शंख की संज्ञा दी गई है, जो एक विशेष प्रकार का शंख होता है और समुद्र से प्राप्त होने के कारण लक्ष्मी का पूर्ण स्वरूप माना जाता है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि में इस शंख को अपने सामने रखकर अपनी मनोवांछित कामना को कागज पर स्पष्ट रूप से लिखकर शंख के नीचे रख दें और स्फटिक की माला से निम्न मनोकामना मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें।

### मनोकामना मंत्र

**ॐ मांगल्य लक्ष्म्यै सिद्धिं देहि देहि नमः।**

मंत्र-जप के उपरान्त जिस कागज पर अपनी मनोकामना लिखी थी उसे शंख के भीतर रखकर उसका मुख गीले आटे से बंद कर दें तथा उसे किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब मनोकामना पूर्ण हो जाए तो इस शंख को विसर्जित कर दें तथा किसी मंदिर में जाकर कुछ दक्षिणा आदि भेंट कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें।

**साधना सामग्री– 570/–**
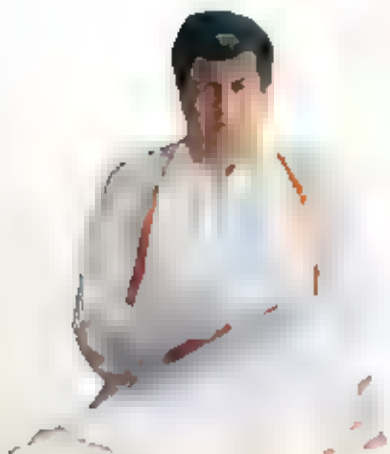
# शरद पूर्णिमा

## एक चिरप्रतीक्षित साधना पर्व है

चन्द्रमा ने अपनी सारी पूर्णिमाएं तो दे दी अलग-अलग पर्वों को, लेकिन बस एक पूर्णिमा चुराकर रख ली है खुद के लिए। खुद को और भी अधिक रसीला बनाकर कुछ बिखरने के लिए, कुछ बचाने के लिए नहीं, कुछ संजोने के लिए नहीं, बस बिखेरने के लिए ही और चांद से ज्यादा बिखरा भी कौन है? चांदनी से ज्यादा छलका भी कौन है? उसके साथ में तारों से भी ज्यादा कौन चुनमुनाया है? इसका तो कोई लेखा-जोखा ही नहीं।

यूं तो चांद को लेकर शिकवों की भी कमी नहीं उसकी चांदनी की चुभन में जलने वालों की भी कमी नहीं। लेकिन एक चांदनी ऐसी भी है जिसको लेकर चांदनी में जलने वालों को भी कोई शिकवा-शिकायत नहीं रह जाती और यह है शरद की पूर्णिमा यानी कि आश्विन माह की पूर्णिमा जब बारिशें थम गई होती हैं और एक अलग-सा अमृत छलक पड़ता है सारे वातावरण में।

तभी तो शरद पूर्णिमा का नाम लिया नहीं, होंठों पर मुस्कुराहट तैर गई। एक अनोखी रात, कोई विलक्षण क्षण, जबकि बहुत कुछ घटने लगता है धरती से आसमान के बीच और यही तो माना गया है कि इस रात में जो भी, इसकी प्रकाश किरणों में भीगा वह साक्षात अमृत तुल्य हो गया। इसी से कोई किसी प्रकार से, तो कोई अपने ढंग से इस रात का विलक्षण प्रभाव समेट ही लेना चाहता है।

शरद पूर्णिमा की रात वास्तव में एक ही रात नहीं होती, यह तो अमृत घट जैसी बात होती है और इस रात में छलके अमृत कणों को बस यूं ही नहीं प्राप्त किया जा सकता, इसके लिए तो कोई और युक्ति लगानी पड़ती है, और लगानी ही चाहिए क्योंकि यह जिस चैतन्यता से भरी रात होती है वही तो कायाकल्प साधना की भी रात होती है। कायाकल्प साधना के इच्छुक साधकों के चिरप्रतीक्षित क्षण होते हैं।

## काया का कल्प अर्थात् शरीर का ही नहीं,
### मन का भी सम्पूर्ण रूप से परिवर्तन,
### सारे के सारे जीवन का परिवर्तन

और इस परिवर्तन को अपने जीवन में लाने के लिए जो उपाय है,
वह है भी कितना सरल !

**परम्परागत ढंग में तो इस रात को हर कोई चांद की किरणों के सामने दूध की बनी खीर रखता ही है।**

लेकिन इसी खीर को यदि एक विशेष विधि से मंत्रसिक्त भी कर दें, तो प्रभाव निश्चित रूप से कई गुना बढ़ ही जाता है और यही क्रिया करते हैं हिमाचल प्रदेश में शिमला के पास के एक छोटे से गाव के निवासी। पिछली कई पीढ़ियों से वे इसी रात में अपने सामने खीर या दूध के बने किसी अन्य मिष्ठान्न को पात्र में रखकर विशिष्ट चंद्रमणि माल्य से एक विशेष मंत्र का सतत् जप एक निश्चित काल में करते हैं और तब उस खीर को शेष रात्रि के लिए चांद की किरणों के सामने पुनः छोड़ कर दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही ग्रहण कर लेते हैं, फिर प्राप्त कर लेते हैं एक ऐसा प्रभाव, जो उनके स्नायु-मंडल को तरोताजा कर देता है। वे जिस मंत्र का जप करते हैं वह मंत्र है-

**मंत्र - ।। ॐ ह्रीं श्रियै नमः ।।**

कहते हैं इस साधना का रहस्य मूलरूप से तिब्बती साधना पद्धति से मिलता है और चन्द्रमणि माल्य-इसको तो वे आजीवन अपने हृदय से लगाकर रखते हैं। दुर्लभ सफेद चन्द्रमणि के टुकड़ों से बनी यह माला जिसके भी शरीर का स्पर्श करती है उसे सदैव शीतलता और ताजगी अनुभव होती ही रहती है। यह ऐसी विशेष माला है जो पीढ़ी दर पीढ़ी भी प्रयोग में लाई जा सकती है और इसके प्रभाव में कोई भी न्यूनता नहीं आती। इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है वह काल, जो मूल साधना का अंग होता है, और जो प्रतिवर्ष बदलता ही रहता है। इसका उल्लेख किसी पंचांग से नहीं वरन् एक गुह्य पद्धति द्वारा जाना जाता है। इस वर्ष यह श्रेष्ठ समय रात्रि 11.12 से 11.36 के मध्य होगा और इसी काल में इस साधना को सम्पन्न करने से इसके प्रभाव को प्राप्त किया जा सकता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि परिवार का मुख्य सदस्य अकेले ही इस साधना को परिवार के सभी सदस्यों के लिए सम्पन्न कर सकता है, यद्यपि उसे प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग चन्द्रमणि माल्य प्राप्त करना आवश्यक होता है।

साधना सामग्री- 300/-

## जानु शिरासन

**विधि** - सर्वप्रथम दोनों टांगों को आगे फैला कर भूमि पर सीधा बैठ जाएं, इसके बाद किसी एक पैर को घुटने से मोड़ कर एड़ी को गुदा और उपस्थ के मध्य 'सीवन' पर लगाएं तलवा साथ वाली टांग जो सीधी रखी हुई उसकी जांघ से लगाकर रखें, इस प्रकार की स्थिति में दोनों टांगों के बीच 90 अंश का समकोण जैसा बन जायगा। अब श्वास को बाहर निकालें और पेट को अन्दर खींचे फिर दोनों हाथों से सामने वाले सीधे पैर के पंजे को कस कर पकड़ें और सिर को झुकाकर पैर को छूने का प्रयास करें इस अवस्था में कुम्भक जैसी स्थिति बन जाएगी 30-40 सेकण्ड रुककर सांस भरते हुए वापस आयें यही प्रक्रिया टांगों की स्थिति बद हुये एक बार पुनः दोहराये।

**लाभ** - इसके अभ्यास से शरीर रोग मुक्त होता है पेट की गैस निकलती है चर्बी घटती है मधुमेह में लाभ पहुँचता है। पाचन क्रिया ठीक होती है गठिया में आराम मिलता है। सार्इटिका दर्द में लाभ होता है, सम्पूर्ण शरीर कान्तिमय बनता है। इस आसन का नियमित अभ्यास करने से मधुमेह ब्लडप्रेशर जैसे गम्भीर रोगों में अत्यन्त लाभ होता है, वायु सम्बंधी दोष दूर होते है। एवं साधक के अंदर शारीरिक शुद्धता बढ़ती है। लम्बी आयु एवं स्वस्थ जीवन इस आसन से प्राप्त किया जा सकता है।

## शलभासन

शलभ का अर्थ है टिड्डी। इस आसन को करते समय शरीर की आकृति बिल्कुल टिड्डी के समान बन जाती है

**विधि** : सर्वप्रथम जमीन पर पेट के बल लम्बे लेट जाइये। चेहरे को सामने कर ठोड़ी को भूमि पर टिका दें। दोनों हाथों को जंघाओं के नीचे इस प्रकार रखें कि हथेलियां ऊपर की ओर रहें, दोनों ओर की कोहनियां पेट से सटी रहेंगी या पेट के नीचे रहेंगी

अब पीछे से टांगों को सीधा रखते हुये श्वास भरते हुए नाभि से नीचे वाले भाग को ऊपर उठायें। ध्यान रहे टांग मुड़े नहीं फिर कुछ क्षण रुकने के बाद वापिस आ जाएं और कुछ क्षण शरीर को विश्राम दें, इसे 3 बार दोहराये

शुरू-शुरू में इस आसन को करने में काफी कठिनाई होगी परन्तु धीरे-धीरे आसन अभ्यास हो जाने पर आसानी से किया जा सकता।

**लाभ** : शलभासन द्वारा जिगर, गुर्दे उदर, तिल्ली और आंतों को लाभ होता है, रीढ़ की हड्डी और पेशियां शक्तिशाली और लचकीली बनती है जिनके जोड़ों और घुटनों में दर्द रहता है उनके लिए यह आसन बहुत लाभदायक है

यह आसन कमर दर्द के रोगियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है मोटे पेट वालों के लिए शीघ्र लाभ पहुँचता है। शुद्ध वायु फेफड़ों में प्रवेश करती है जिससे रक्त शुद्ध होता है रक्त प्रवाह सही तरह से होने लगता है कब्ज और वायु विकार दूर होता है।

**शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है**

**स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है**

शरीर के प्रत्येक अंग को सुडौल बनाना आवश्यक है

मन को हर समय जवान और स्वस्थ बनाये रखना है तो अपनाइये

**और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग**

## गुरू सिद्धि दिवस
## 18.10.21

आज के युग में यह आवश्यक है कि साधक को सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो, किसी एक सिद्धि को प्राप्त करने के लिए या किसी एक साधना सिद्ध करने से ही सब कुछ नहीं हो जाता। आवश्यकता इस बात की है, कि कोई ऐसा रहस्य हो, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण साधनाओं में तत्क्षण सिद्धि प्राप्त हो।

'भार्गव उपनिषद' में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि समस्त सिद्धियों को पूर्णता के साथ सिद्ध करने का एक मात्र साधन 'नारायण हृदय प्रयोग' ही है, लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग नारायण हृदय प्रयोग ही है। जीवन की पूर्ण उन्नति सुख, और सौभाग्य प्राप्त करने का एक प्रयोग ''नारायण हृदय'' ही है

महर्षि वेदव्यास ने एक स्थान पर कहा है, कि यदि बिना ''नारायण हृदय साधना'' किये लक्ष्मी साधना की भी जाती है, तो वह व्यर्थ होती है

नारायणस्य हृदय सर्वाभीष्टफलप्रदम्।
लक्ष्मी हृदयक स्तोत्र यदि चैतद्विनाकृतम् ।।
तत्सर्व निष्फल प्रोक्त लक्ष्मी: क्रुध्यति सर्वत ।
एतत्सकलित स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ।।

अर्थात यदि बिना नारायण हृदय प्रयोग किये लक्ष्मी साधना की जाती है, तो उसे अनुकूलता प्राप्त नहीं होती, उसके सारे कार्य निष्फल होते हैं, ऐसा न करने पर लक्ष्मी क्रोधित होती है, और उसे सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती, इसीलिए यह नारायण हृदय समस्त मनोकामनाओं को पूर्णता प्रदान करने वाला है।

### सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए
# नारायण हृदय प्रयोग

गुरु गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को लक्ष्मी सिद्धि के लिए समझाते हुए कहा था कि यदि केवल नित्य एक बार 'नारायण हृदय' का पाठ हो जाता है, या यदि कोई साधक नित्य एक बार 'नारायण हृदय' का पाठ करता है या सुनता है तो उसके घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है।

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा।
यः पठेच्छृणुयान्नित्य तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ।।

श्रीमद्भागवत पुराण में एक स्थान पर बताया गया है -

श्रद्धा मैत्री दया शांतिः तुष्टिः पुष्टिः क्रियोन्नतिः।
बुद्धिर्मेधा तितिक्षा ह्रीः मूर्तिर्धर्मस्य पत्नय ।।

अर्थात सृष्टि के आदिकाल में जब धर्म की उत्पत्ति हुई तो उनकी तेरह पत्नियों का वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण में आया है। इनके नाम है - 1. श्रद्धा, 2. मैत्री, 3. दया, 4. शांति, 5.तुष्टि, 6.पुष्टि, 7.क्रिया, 8.उन्नति, 9.बुद्धि 10.मेधा, 11.तितिक्षा, 12.लज्जा और 13.मूर्ति।

ये धर्म की आधार भूत स्वरूपा है, जिनसे समस्त सनातन धर्म और विश्व का संचालन हो रहा है, पुराणों के अनुसार -

श्रद्धा से शुभ, मैत्री से प्रसाद, दया से अभय, शान्ति से सुख, तुष्टि से मद प्रसन्नता, पुष्टि से स्मय मुस्कान, क्रिया से योग, उन्नति से दर्प, बुद्धि से अर्थ, मेधा से धारणा - शक्ति स्मृति, तितिक्षा से क्षेम, लज्जा से प्रश्रय और मूर्ति से नर-नारायण।

शास्त्रों के अनुसार मूर्ति का तात्पर्य सम्पूर्ण संसार का कल्याण है, मूर्ति का तात्पर्य जीवन की पूर्णता है, मूर्ति का तात्पर्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है, मूर्ति का तात्पर्य सम्पूर्ण सिद्धि है। इसी मूर्ति से नर-नारायण का जन्म हुआ, फलस्वरूप 'नारायण हृदय' का पाठ करने से सम्पूर्ण सिद्धियां, सफलता, और श्रेष्ठता प्राप्त हो पाती है।

अठारह पुराणों के रचयिता महर्षि वेद व्यास ने कहा है, मूर्ति के कई नाम है, और कलियुग में यदि मूर्ति अर्थात सिद्धि से प्रादुर्भाव नारायण हृदय का पाठ नहीं करते, समझ लो, वे संसार में कुछ भी सफलता अर्जित नहीं कर पाते-

प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे च काले।
न त्वां भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते।।

अर्थात कलियुग के आ जाने से लोगों का खराब समय प्रारम्भ होगा, उस समय भी यदि वे 'नारायण हृदय' का पाठ नहीं करते है, तो समझ लेना चाहिए कि वे प्राणी अवश्य ही संसार में ठगे जाते है।

भगवत्पाद शंकराचार्य ने इसका विवेचन करते हुए अपने शिष्यों को समझाया है, कि जहां हाथों से शुभ कार्य नहीं होता वहां 'नारायण हृदय' का पाठ करने से शुभता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके माध्यम से लोगों के प्रति मैत्री भावना दया और मन में पूर्ण शान्ति अनुभव होती है, 'नारायण हृदय' का नित्य एक पाठ करने से घर में सम्पूर्ण सिद्धियां और सफलता अनुभव होती है। केवल यही एक ऐसा प्रयोग है, जिसके द्वारा बुद्धि की प्रखरता आती है फलस्वरूप मानव जीवन की निरन्तर उन्नति होती रहती है, जहां मेरी बुद्धि काम नहीं करती वहां यह हृदय मेरी बुद्धि बन कर मेरी इच्छा पूरी करता है, जहां मेरा बल बेकार हो जाता है, वहां यह नारायण हृदय 'विजया' बन कर विजय श्री मेरे गले में पहनाती है, यह 'नारायण हृदय' कहीं पर लक्ष्मी के रूप में, कहीं सरस्वती तो कहीं चण्डी के रूप में सहयोगी बनता है। इसके माध्यम से साधक धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों को अनायास प्राप्त कर लेता है।

इस स्तोत्र की शक्तिमत्ता सिद्ध करते हुए देवी भागवत में बताया गया है।

कीर्तिर्मतिः स्तुति-गती करूणा दया त्वम्।
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमला जया च।।
पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वम्।
तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरूपा रमा च।।

अर्थात् यही 'नारायण हृदय' कीर्ति है, सुबुद्धि है, करूणा और दया है, लक्ष्मी और विजय है, पुष्टि और तुष्टि है, तथा जीवन में पूर्ण सिद्धि और सफलता है।

## नारायण हृदय प्रयोग

इसका प्रयोग दो प्रकार से हो सकता है, एक तो साधक नित्य इसका पाठ करे, और 108 दिन तक पाठ करे, तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, दूसरा किसी भी गुरूवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर इस नारायण हृदय स्तोत्र के 108 पाठ कर फिर किसी ब्राह्मण को या कन्या को
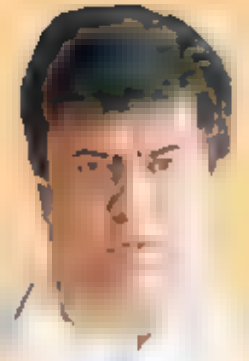
भोजन करावे तो यह साधना सिद्ध होती है।

तीसरे किसी भी गुरुवार को इस नारायण हृदय का निरन्तर उच्चारण करते हुए 1008 घृत की आहुतियां यज्ञ में दें, तो उसके सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं और जीवन में तत्क्षण सफलता प्राप्त होती है।

साधक अपने पूजा स्थान में भगवान 'नारायण' का सुन्दर चित्र स्थापित कर दे, और षोडशोपचार पूजन करके फिर उसके सामने यह साधना प्रारम्भ करें। इस साधना के लिये यों तो किसी भी गुरुवार को प्रयोग किया जा सकता है। साधक चाहे तो सोलह गुरुवार को अर्थात् प्रत्येक गुरुवार को इस 'नारायण हृदय' के 108 पाठ करें, फिर अगले गुरुवार को पुनः पाठ करें इस प्रकार सोलह गुरुवार तक ऐसा करने से 'नारायण हृदय' पुरश्चरण सम्पन्न होता है और उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति निश्चित हो जाती है।

यदि विशेष सिद्धि या किसी विशेष कार्य को तत्क्षण ही सम्पन्न करना हो, तो साधक शुक्रवार की रात को दीपक जला कर हाथ में संकल्प ले कर कहे कि मैं अमुक कार्य तत्क्षण सफलता के लिये यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं और उसी रात्रि को इस 'नारायण हृदय' के 108 पाठ सम्पन्न कर ले, तो तुरन्त ही उस सम्बन्धित काम के अनुकूल फल प्राप्त हो जाते हैं। आगे के पृष्ठों में मैं कर न्यास, ध्यान आदि देता हुआ 'नारायण हृदय' को स्पष्ट कर रहा हूं।

## ।। नारायण हृदयम् ।।

श्री गणेशाय नमः

ॐ अस्य श्रीनारायण हृदयस्तोत्र मन्त्रस्य भार्गव ऋषि,
अनुष्टुप छन्द, श्री लक्ष्मीनारायणो देवता, श्री लक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थेजपे विनियोगः।

### अथ करन्यासः

ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ नारायणः परो देवेति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परं धामेति अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ नारायणः परो धर्म इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ विश्वं नारायणः परं इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

### अथ ध्यानम्

उद्यदादित्यसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्।
शंखचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम्।।
ॐ नमो भगवते नारायणाय इति मंत्रं जपेत्।

### श्री वेदव्यास उवाच

श्री मन्नारायणो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ।।1।।
नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः। नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते ।।2।।
नारायणः परं धाम ध्याता नारायणः परः। नारायणः परोधर्मो नारायण नमोऽस्तु ते।।3।।
नारायणपरो धर्मोविद्या नारायणः परा। विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ।।4।।
नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः। जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते।।5।।
रविर्नारायणं तेजश्चन्द्रो नारायणं महः। वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ।।6।।

नारायण उपास्यः स्याद्गुरूर्नारायणः परः। नारायणः परो बोधो नारायण नमोऽस्तु ते।7।।

नारायणः फलं मुख्य सिद्धिर्नारायण. सुखम्। सर्वं नारायणः शुद्धो नारायण नमोऽस्तु ते।।8।।

नारायणस्त्वमेवासि नारायण हृदि स्थितः। प्रेरकः प्रेयमाणाना त्वया प्रेरितमानसः।।9।।

त्वदाज्ञा शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम्। नानोपासनमार्गाणां भावकृद्भावबोधकः ।।10।।

भावकृद्भावभूतस्त्वं मम सौख्यप्रदो भव। त्वन्मायामोहितं विश्व त्वयैव परिकल्पितम्।।11।।

त्वदधिष्ठानमात्रेण सैव सर्वार्थकारिणी। त्वमेवैतां पुरस्कृत्य मम कामान् समर्पय।।12।।

न मे त्वदन्यःसन्त्राता त्वदन्य न हि दैवतम्। त्वदन्य न हि जानामि पालक पुण्यरूपकम् ।।13।।

तावत्सासारिको भावो नमस्ते भावनात्मने। तत्सिद्धिदो भवेत्सद्यः सर्वथा सर्वदा विभो।।14।।

पापिनामहमेकाग्र्य दयालूना त्वमग्रणी.। दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये।।15।।

त्वयाऽप्यहं न सृष्टश्चैन्न स्वात्तव दयालुता। आमयो वा न सृष्टश्चेदोषधस्य वृथोदय. ।।16।।

पापसघपरिक्रान्तः पापात्मा पापरूपधृक्। त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्राता मे जगतीतले ।।17।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च गुरूस्त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।18।।

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा। यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मी स्थिरा भवेत् ।।19।।

नारायणस्य हृदय सर्वाभीष्टफलप्रदम्। लक्ष्मीहृदयक स्तोत्र यदि चैतद्विनाकृतम्।।20।।

तत्सर्वं निष्फल प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वतः। एतत्सकलितं स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम्।।21।।

लक्ष्मीहृदयक स्तोत्र तथा नारायणात्मकम्। जपेद्यः सकलीकृत्य सर्वाभीष्टमवाप्नुयात्।।22।।

नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा तत. परम्। लक्ष्मीहृदयक स्तोत्र जपेन्नारायण पुनः ।।23।।

पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीहृद जपेत्। पुनर्नारायणाहृदं सम्पुटीकरणं जपेत्।
एव मध्ये द्विवारेण जपेल्लक्ष्मीहृद हि तत्।24।।

लक्ष्मीहृदयक स्तोत्रं सर्वमेतत्प्रकाशितम्। तद्वज्जापादिक कुर्यादितत्संकलित शुभम्।।25।।

स सर्वकाममाप्नोति आधिव्याधिभय हरेत्। गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत्।।26।।

इति गुह्यतम शास्त्रमुक्तं ब्रह्मादिकैः पुरा। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपयेत्साधयेत्सुधीः।।27।।

तत्रैतत्पुस्तक तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम्। भूतप्रेतपिशाचाश्च बेतालन्नाशयेत्सदा।।28।।

लक्ष्मीहृदयप्रोक्तेन विधिना साधयेत्सुधी.। भृगुवारे च रात्रौ तु पूजयेत्साधयेत्सुधीः।।29।।

गोपनात्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्ववित्।
नारायणाहृदं नित्यं नारायण नमोऽस्तु ते ।।30।।

।। इत्यथर्वणरहस्योत्तरभागे नारायणहृदय सम्पूर्णम्।।

नित्य प्रातः एक बार 'नारायण स्मरण'
का पाठ करने से घर में सुख-शान्ति एवं सफलता प्राप्त होती है'

## प्रखर शक्ति स्वरूपा

# नवदुर्गा की साधना का रहस्य

वर्ष की दो प्रकट नवरात्रियों में से आश्विन नवरात्रि ही वास्तविक रूप से शक्ति साधना का उचित अवसर मानी गई है, जबकि चैत्र नवरात्रि (वासन्तीय नवरात्रि) तो महोत्सव की भावना समेटे है।

**प्रस्तुत है इसी चैतन्य मुहूर्त पर शक्ति के सर्वाधिक प्रखर स्वरूप**

## नवदुर्गा की साधना का रहस्य

मातृ-शक्ति की उपासना सम्पूर्ण विश्व को मूलतः भारत की ही देन है और प्रत्येक चिन्तनशील सम्प्रदाय मातृशक्ति की पूजा अपने ढंग से करता है। इसके पीछे भावनात्मक रूप से नारी जाति के प्रति सम्मान की भावना तो है ही, साथ ही स्त्री पूजन या मातृ शक्ति-पूजन के द्वारा ही साधना जगत के गूढ़तम रहस्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं एवं बताया गया है कि तन्त्र की पूरी की पूरी पद्धति मातृ-शक्ति की आराधना पर ही तो आधारित है। यूं भी यदि सामान्य रूप से देखें तो इस बात को माँ से अधिक उचित कोई भी नहीं जानता कि उसकी संतान को कब और किस वस्तु की आवश्यकता सबसे अधिक है। संतान एक बार अपना कष्ट बताने में असमर्थ भी हो सकती है किन्तु मां की दृष्टि से संतान का कोई भी कष्ट अदृश्य रह ही नहीं सकता और उसके पास प्रत्येक स्थिति के लिए अलग-अलग उपाय भी होते हैं। वह जानती है कि कब और कैसे अपनी संतान को प्रसन्नता दी जा सकती है। साधना जगत भी इसी बात पर आधारित है, क्योंकि साधक तो एक स्तर तक ही अपने बल से चल पाता है, आगे शक्ति ही तो उसका हाथ पकड़ कर मार्ग पूरा कराती है।

जब भी मातृ-शक्ति की बात आती है, उसकी उपासना और साधना की चर्चा होती है, तब स्वतः ही किसी भी शक्ति उपासक के नेत्रों व हृदय में अत्यन्त आह्लाद के साथ माँ भगवती दुर्गा का मनोहारी बिम्ब उपस्थित हो जाता है, उसके ओठों पर माँ भगवती दुर्गा का ही नाम अत्यन्त मधुरता से थिरक उठता है, और वह अत्यन्त व्यग्रता से नवरात्रि के उस पर्व की प्रतीक्षा करने लगता है जिसके एक-एक शक्तिमय दिन को सार्थक कर सके, भीग सके और दुर्गामय हो सके।

माँ भगवती जगदम्बा की तो अनेक प्रकार से उपासना सम्भव है, दस महाविद्या रूप में, त्रिगुणात्मिका स्वरूप में महालक्ष्मी, महाकाली एवं महासरस्वती स्वरूप, किन्तु माँ भगवती दुर्गा की साधना किए बिना साधक का हृदय तृप्त नहीं हो पाता है। इसके पीछे यही रहस्य है कि माँ भगवती जगदम्बा के दुर्गा स्वरूप के अतिरिक्त कोई ऐसा दूसरा स्वरूप है ही नहीं जो इस प्रकार से करुणा, मातृत्व और दुर्गति के नाश हेतु तीव्रबल एक साथ संजोए हो। उग्रता एवं मृदुता की समन्वित मूर्ति का ही नाम है दुर्गा, जो अपने भक्तों की दुर्गति का नाश करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं।

माँ दुर्गा की साधना का पूर्ण विवरण सितम्बर माह की पत्रिका के पेज 36 पर विस्तृत रूप में दिया गया है। साधक उनके प्रत्येक दिन के अलग-अलग स्वरूपों की साधना इस शरद नवरात्रि पर कर सकते हैं। यदि किसी कारण से साधक

इस साधना से वंचित हो जायें तो नीचे दिया गया देवी भागवत में वर्णित मां भगवती दुर्गा का स्मरण पाठ नित्य 5 बार नौ दिनों तक अवश्य करें। इस स्मरण का महत्व स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। इस पद का पाठ कर माँ दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस पद के नित्य पाठ के साथ ही साथ सम्स्कृत से अनभिज्ञ पाठकों को इसमें निहित श्रद्धा व भावना की भावभूमि मानस में प्रतिबिम्बित हो सके, इसी हेतु इस पद के अन्त में अनुवाद के स्थान पर संक्षिप्त भावार्थ भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां, सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्ता,रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।1।।

प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड, शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां, चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्।।2।।

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं, धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां, मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णो।।3।।

अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचक नाम स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्।।4।।

उमा उषा च वैदेही रमा गंगेति पंचकम्।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा।।5।।

कृत्वा समाधिस्थितया धिया ते, चिन्ता नवाधारनिवासभूताम्।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसारयात्रा मनुवर्तयिष्ये।।6।।

ससारयात्रामनु वर्तमानं, तवाज्ञया श्रीत्रिपुरेश्वरेशि।
स्पर्धातिरस्कार कलिप्रमाद-भयानि मे नात्र भवन्तु मातः।।7।।

जानामि धर्मं न च मे प्रवित्तिः - जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया हृषिकेशि हृदिस्थयाहं, यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।8।।

मजुसिंजितमजीर वाममर्थं महेशिनुः, आश्रयामि जगन्मूल यन्मूल सचराचरम्।।9।।

सर्वचैतन्यरूपा तामाद्याविद्या च धीमहि, ता सर्वेप्रणमाम्येति बुद्धि या न. प्रचोदयात्।।10।।

शरद के चन्द्र की किरणों की भांति उज्ज्वल कांति वाली मां भगवती, जिनके नीलवर्णीय सहस्र हस्त विविध आयुधों से युक्त हैं तथा जिनके चरण लाल कमल की भांति उज्ज्वल हैं व विविध आभूषणों से भूषित माँ जगदम्बा दैत्यों का विनाश एवं मुनिजन व देवताओं को भी मोहित करने में समर्थ हैं, वे ही भक्तों की अभिलाषा को पूर्ण करने वाली पापों के पुंज को नष्ट करने में समर्थ हैं। संसार में आवागमन के क्रम को भंग करने वाली मूल शक्ति का मैं नित्य चिन्तन, मनन व प्रणाम अर्पण करता हूँ।

माँ मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए कि मैं नित्यप्रति प्रातः उठने पर समाधिस्थ बुद्धि के द्वारा हृदयपूर्वक चिन्तन कर उस दिन की यात्रा में आपकी इच्छा के अनुरूप अनुवर्तन करूं, क्योंकि मैं तो अपनी शक्ति से धर्म को जानते हुए भी उसमें प्रवृत्त नहीं हो पाता, अधर्म को भी जानता हूं किंतु उससे निवृत्त नहीं हो पाता। अब तो इस संसार में उन्हीं का आश्रय लेता हूं जो महेश्वर का बायां अर्धांग हैं एवं विष्णु की परामाया भी। उन्हीं की कृपा से फिर मुझे इस जगत में स्पर्धा, तिरस्कार, कलिप्रमाद व भय व्याप्त नहीं होगा।

अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती एवं मन्दोदरी—इन पांच नामों का नित्य प्रति स्मरण करने से पापों का विनाश होता है तथा उमा, ऊषा, सीता, रमा और गंगा इन नामों के नित्य प्रति प्रातः स्मरण से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

# शिष्य धर्म

त्व विचित भवता वदैव देवाभ्यवाप्तोतु भवत सदैव।
ज्ञानार्थ धूल भवर महिता विहसि शिष्यत्व एव भवता भगवद् क्षमापि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र है। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या है ये गुण? आइए जानें

- शिष्य के हृदय में हरदम गुरु की चेतना व्याप्त रहती है ठीक उस प्रकार जैसे हनुमान के हृदय में राम की छवि। हनुमान ने कहा कि मेरे हृदय में केवल एक चेतना पुंज व्याप्त है और उन्होंने अपना सीना फाड़ कर दिखा दिया कि राम के सिवा उनके हृदय में किसी के लिए स्थान नहीं।
- शिष्य गुरु से उसी प्रकार प्रेम करता है जिस प्रकार मार्कण्डेय शिव से प्रेम करते थे। साधना का अर्थ ही है प्रेम, अपने इष्ट से अपने गुरु से और उस प्रेम के व्यक्त करने की क्रिया में काल-समय भी बाधक नहीं हो सकता। ऐसा मार्कण्डेय ने सिद्ध करके दिखा दिया। ऐसा ही प्रेम शिष्य का गुरु से हो।
- शिष्य और गुरु के बीच थोड़ी भी दूरी न हो। इतना शिष्य गुरु से एकाकार हो जाए कि फिर मुंह से गुरु नाम या गुरु मंत्र का उच्चारण करना ही न पड़े। जिस प्रकार राधा के रोम-रोम से सदा कृष्ण कृष्ण . . .उच्चरित होता रहता था उसी प्रकार शिष्य के रोम-रोम से गुरुमंत्र उच्चरित होता रहे - सोते, जागते, चलते, फिरते।
- शिष्य को स्मरण रहे कि सद्गुरुदेव सदा उसकी रक्षा के लिए तत्पर है। कोई क्षण नहीं जब सद्गुरु उसका ख्याल न रखते हो। जिस प्रकार हिरण्यकश्यप के लाख कुचक्रों के बाद भी प्रह्लाद का बाल भी बांका न हुआ, उसी प्रकार शिष्य की आस्था है तो संसार की कोई भी शक्ति उसका अहित नहीं कर सकती।

- व्यक्ति के जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य होता है कि वह अपने जीवन में सद्गुरु से मिले और उससे भी बड़ा सौभाग्य होता है जब वह सद्गुरु को पहचान ले तथा उसके प्रति समर्पित हो जाए।
- बहुत कम लोग सद्गुरु के पास पहुंच पाते हैं। गुरु तो जीवन में बहुत मिल सकते हैं परंतु एक उच्च कोटि का सद्गुरु मिलना तभी संभव होता है जब व्यक्ति के पूर्व जन्म के पुण्यो का उदय हो जाए।
- परंतु केवल सद्गुरु से मिलने या उसकी जय जयकार करने से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता, उसके लिए तो फिर आपको समर्पण की कला सीखनी पड़ेगी, श्रद्धा एवं विश्वास पैदा करना पड़ेगा।
- गुरु स्वार्थ से प्रेरित हो सकता है परंतु सद्गुरु को शिष्य से कोई स्वार्थ होता ही नहीं। वह अपने हित की चिंता किए बिना सदा शिष्यो के कल्याण के लिए तत्पर रहता है इसलिए सद्गुरु मिल जाए तो व्यक्ति को बिना संकोच के अपना जीवन उसके हाथ में सौंप देना चाहिए।
- सद्गुरु का जब जीवन में प्रवेश होता है तो बहुत उथल पुथल होती है और ऐसा स्वाभाविक है क्योंकि सद्गुरु शिष्य के कर्मों को नष्ट करता है। इस समय लग सकता है कि जीवन बहुत अनिश्चित सा हो गया है परंतु व्यक्ति में अगर साहस, धीरता, गंभीरता है तो वह सद्गुरु के कहे अनुसार अग्रसर होता रहता है तथा आखिर में स्वयं एहसास करता है कि सद्गुरु से उसे क्या प्राप्त हुआ, सद्गुरु ने उसके जीवन को कैसे निखारा।
- व्यक्ति जन्मों तक साधना और तपस्या करता रहे, आराधना और भक्ति करता रहे परंतु वह पूर्णता तभी प्राप्त कर पाता है जब सद्गुरु से वह मिले और वे उसका मार्ग दर्शन करें।

दीपावली पर्व

# 04.11.21

# महालक्ष्मी पूजन कोई भी साधक पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकते हैं

## ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि पूरे परिवार के साथ ही महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न हो,

**साधक या तो वृषभ लग्न में या सिंह लग्न में लक्ष्मी पूजन करते हैं, क्योंकि ये दोनों ही लग्न स्थिर हैं और शास्त्रों में विधान है कि स्थिर लग्न में ही महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न किया जाना चाहिए।**

**इस वर्ष दीपावली 04.11.21 को है,**

**ज्योतिष के अनुसार वृषभ लग्न या सिंह लग्न के मुहूर्त में ही साधक को महालक्ष्मी पूजन कार्य सम्पन्न करना चाहिए।**

### साधना पैकेट

1 तांत्रोक्त महालक्ष्मी यंत्र
2 तांत्रोक्त महालक्ष्मी माला (अघोर सपर्या मंत्रों से आपूरित)
3 बाधा निवारक भैरव गुटिका
4. महालक्ष्मी फल
5 लक्ष्मी चित्र
6 सुपारी (गणपति)
7. रोग मुक्ति हकीक
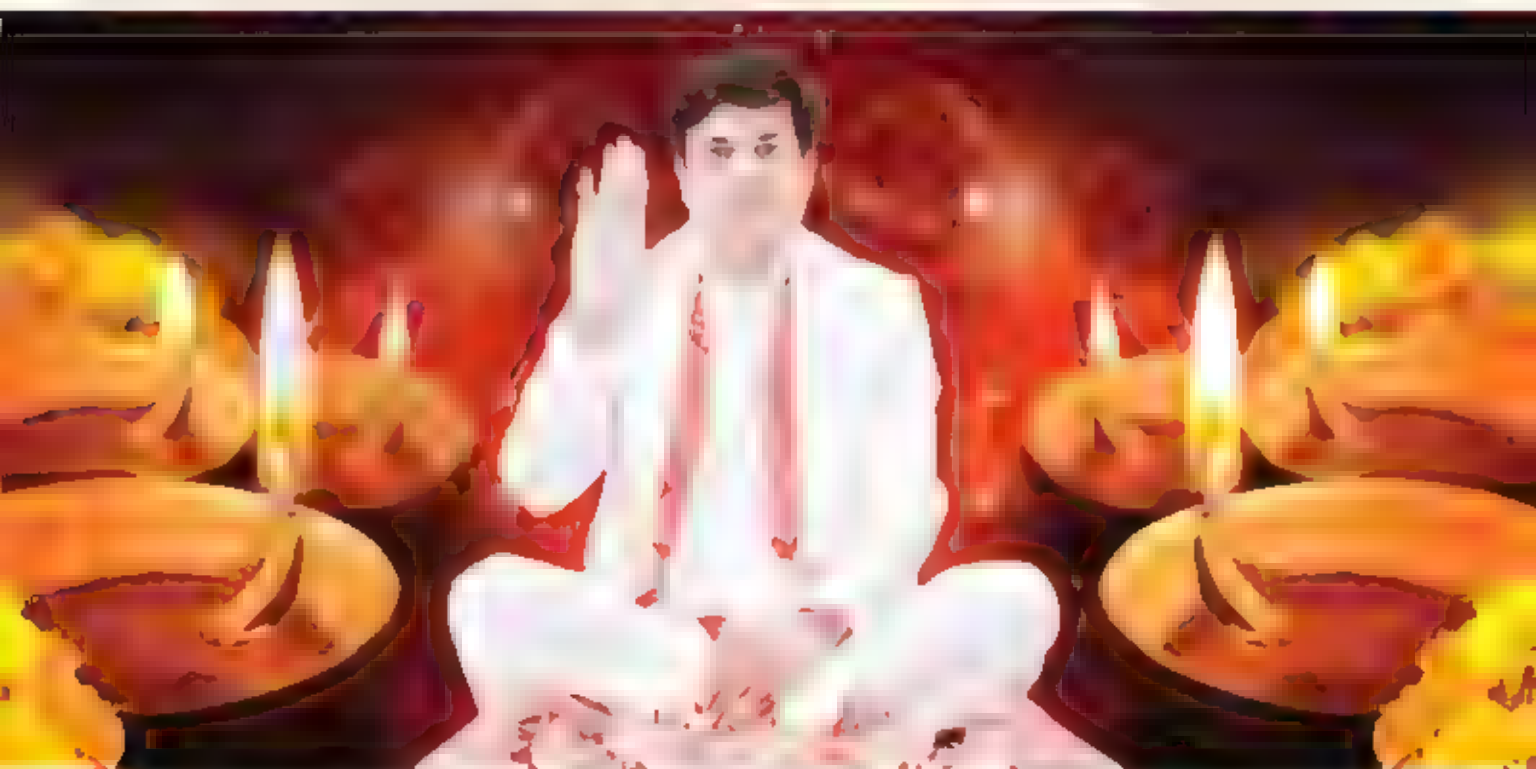
### पूजन सामग्री

कुंकुम, केशर, अबीर, गुलाल, मौली, चावल, नारियल, लौंग, इलायची, सिन्दूर, अगरबत्ती, दीपक, रूई, माचिस, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शक्कर), यज्ञोपवीत, पंचमेवा, फल, कलश, कुएं का जल, गंगाजल, श्वेत चन्दन, पान, पंच पल्लव, कमल-पुष्प, पकाई हुई खीर, मिश्री, सरसों, कपूर, पीला वस्त्र, लक्ष्मी को पहिनाने योग्य वस्त्र, इत्र, सुपारी, तुलसी-पत्र काली मिर्च, गूगल, श्रृंगार-प्रसाधन, दूध का प्रसाद आदि।

# महालक्ष्मी पूजन

सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर पवित्रीकरण करें–

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि ॥

साधक सर्वप्रथम सामने पृथ्वी पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर और 'फट्' मन्त्र से चावलों की ढेरी उस पर बनाकर कलश स्थापन करें और फिर निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश के जल में तीर्थों का आह्वान करें।

गंगे च यमुने स्वास्तिक चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी, जले स्मिन् सन्निधि कुरु॥

फिर कलश का कुंकुम, पुष्प आदि से पूजन निम्न मन्त्र से करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवति। यशेष–तीर्थाल–वाले
शिव–जटाधिरूढ गंगे गंगाम्बिके स्वाहा॥

इसके बाद पात्र पर हाथ रख कर गंगा का आह्वान करें, उस पर नारियल रखे, गंगा जल एवं पुष्प प्रक्षेप करें और पूजन मुद्रा से कलश का गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि से पूर्ण पूजन करें।

फिर कलश के जल से 'फट्' मन्त्र का उच्चारण बारह बार बोल कर दसों दिशाओं को रक्षित करें और पूजन करें।

फिर अपने हाथ में सरसों लेकर अपने सिर के ऊपर और परिवार के सभी सदस्यों के सिर के ऊपर घुमा कर चारों तरफ बिखेर दे जिससे कि पूरे वर्ष भर किसी प्रकार की बीमारी, कष्ट या दु:ख न हो सभी विघ्न दूर हो

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इसके बाद दीपक जला दे, फिर पुष्प हाथ में लेकर निम्न रूप से वास्तु पुरुष, दीपक आदि देवताओं का पूजन करें।

ॐ वास्तु पुरुषाय नम — दीं दीपनाथाय नम
ॐ भद्रकाल्यै नम: — ॐ भैरवाय नम
ॐ लम्बोदराय नम: — द्वां द्वार देवताभ्यो नम
रक्ष रक्ष हुं आसन फट् स्वाहा — पवित्र वज्र भूमे हुं फट् स्वाहा

फिर पृथ्वी पर स्वस्तिक का तिलक कर उस पर आसन बिछा कर उसका पूजन करें।

भूमि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

फिर साधक आसन पर पद्मासन मुद्रा में बैठे और गुरुदेव को प्रणाम करें और गुरु पूजन करें।

दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम ॥
गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नम
पाद्यं स्नानं तिलक पुष्पं धूप
दीप नैवेद्य च समर्पयामि नम ॥

गुं गुरुभ्यो नम: गं गणपतये नम: मं महा लक्ष्म्यै नम

इसके बाद बाये कोने पर भैरव गुटिका रख कर उसके सामने अक्षत, पुष्प आदि समर्पित करते हुए, भैरव को प्रणाम करें–

ॐ ह्रां ह्रीं स: प्रकाश–शक्ति सहिताय
मार्तण्डभैरवाय नम: स्वाहा।

**रोग मुक्ति हकीक**—निम्न मंत्र बोलते हुये भैरव गुटिका के पास ही रोग मुक्ति हकीक स्थापित करें एवं निम्न मंत्र बोलते हुये कुंकुम की पांच बिन्दी लगायें—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौं अमृत्यु लक्ष्म्यै नम
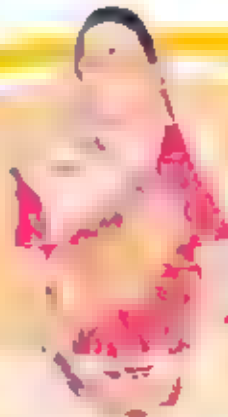
इसके बाद पात्र में गणपति (सुपारी) को स्थापित करें।

पहले दोनों हाथ जोड़कर गणपति का ध्यान करें–

गजाननं भूत गणाधिसेवितं,
कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणं।
उमासुतं शोक विनाश कारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्
ॐ गणेशाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

निम्न मन्त्र से पूजन पुष्प समर्पित करें।

विघ्नेश्वराय नमस्तुभ्यं मन्त्राभीष्ट फल प्रद
मया सम्प्रार्थिता निम्नान पूजाया निर्विघ्नाय।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें–

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अस्मिन पवित्र क्षेत्रे (जगह का नाम) अमुक वासरे (दिन का नाम लें) अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें), अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) यथा मिलितोपचारै श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे तदङ्गत्वेन गणपति पूजनं च करिष्ये

मैं गणपति और लक्ष्मी का पूजन अपने घर में सुख, सम्पत्ति, सौभाग्य और ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए कर रहा हूं।

फिर अपने सामने एक थाली पर कुंकुम से स्वास्तिक का चिह्न बनायें और पुष्प रखकर उस पर तान्त्रोक्त महालक्ष्मी यंत्र एवं महालक्ष्मी फल को स्थापित करें एवं सामने महालक्ष्मी चित्र भी स्थापित करें।

दाहिनी ओर घृत का दीपक और बाईं ओर तेल का दीपक प्रज्वलित करें तथा 'र' बीज का उच्चारण कर दीप शिखा को स्पर्श करते हुए मध्य में घण्टी स्थापित करें और उसके सामने पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद **'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै फट्'** मूल मन्त्र से लक्ष्मी को पुष्पांजली समर्पित करें और पूजन करें। फिर तीन बार प्राणायाम करें।

इसके बाद रेचक प्राणायाम के द्वारा निम्न मन्त्र से अपने शरीर को लघु आकार प्रदान करें

| | |
|---|---|
| य संकोच– | शरीर शोषय स्वाहा |
| र संकोच– | शरीर दह दह पच पच स्वाहा |
| व परम– | शिवामृत वर्षय वर्षय स्वाहा |
| ल शाम्भव – | शरीर उत्पादयोत्पादय स्वाहा |

र हंस सो हमवतरावतर शिव पदार्जीव सुषुम्णा पथेन प्रविश मूल श्रृंगाटकमुल्लासोल्लास ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंस सोऽहम् स्वाहा

इस प्रकार अपने शरीर की भूत सिद्धि कर महालक्ष्मी पूजन के योग्य बना कर पूजन प्रारम्भ करें–

अब श्री महालक्ष्मी के मूल मन्त्र का विनियोग करें–

## विनियोग

अस्य श्री महालक्ष्मी मन्त्रस्य श्रीभृगु ऋषि। गायत्री छन्द श्रीमहालक्ष्मी देवता श्री बीजं ह्रीं शक्ति ईं कीलकं। ममेह जन्मनि श्रीमहालक्ष्मीप्रसाद सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोग

### ऋष्यादि-न्यास

श्रीभृगु ऋषये नमः शिरसि गायत्री छन्दसे नमः मुखे श्रीमहालक्ष्मी देवताये नमः हृदये श्री बीजाय नमः गुह्ये र शक्तये नमः पादयो। ईं कीलकाय नमः नाभौ ममेह जन्मनि श्री–महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगाय नमः सर्वांगे

## कर न्यास-अंग न्यास

| मन्त्र | कर-न्यास | अंग-न्यास |
|---|---|---|
| श्रां | अंगुष्ठाभ्यां नमः | हृदयाय नमः |
| श्रीं | तर्जनीभ्यां नमः | शिरसे स्वाहा |
| श्रूं | मध्यमाभ्यां नमः | शिखायै वषट् |
| श्रैं | अनामिकाभ्यां नमः | कवचाय हुं |
| श्रौं | कनिष्ठिकाभ्यां नमः | नेत्र त्रयाय वौषट् |
| श्रः | करतल करपृष्ठाभ्यां नमः | अस्त्राय फट् |

इसके बाद अपने हृदय में अष्टदल की भावना करके उसके मध्य में भगवती लक्ष्मी को स्थापित कर उसका ध्यान करें–

कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिम गिरी
प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानां
श्रियम्। बिभ्राणां वरमब्ज युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्
क्षौमाबद्ध–नितम्ब–बिम्ब–ललितां वन्दे रविन्द स्थिताम्।

इस प्रकार ध्यान कर पंचोपचार से महालक्ष्मी का पूजन करें

**जल स्नान** – ॐ नमो भगवती अशेष तीर्थालवाले गंगे गंगायमुने स्वाहा।

**लक्ष्मी आह्वान** – ह्रीं ऐं महा लक्ष्मि ईश्वरि परम स्वामिनी ऊर्ध्व शून्य प्रवाहिनी सोम सूर्याग्नि भक्षिणि परमा काश-भासुरे आगच्छ आगच्छ विश विश, पात्रं प्रति गृह्ण गृह्ण फट् स्वाहा

**अमृत पान पूजन** – ॐ आद्य प्रह षोडश कलात्मने सोम मण्डलाय श्रीमद्धा पात्रामृताय नमः

**पाद्य** – ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं महा लक्ष्म्यै पाद्यं कल्पयामि नमः

**प्राण प्रतिष्ठा** – आ ह्रीं क्रों यं रं लं वं श ष स हों ॐ क्षं स हसः आमुष्या साधेना महा लक्ष्म्याः प्राणा इह प्राणा [illegible] लक्ष्म्याः जीव इह स्थित। आ ह्री महा लक्ष्म्याः सर्वेन्द्रियाणि आ ह्री महा लक्ष्म्याः वाङ् मनश्चक्षु श्रोत्रत्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण पद प्राणा इहागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।

**श्रृंगार** – इसके बाद मूल मन्त्र से श्रृंगार पूजन करें। आभूषणों से श्रृंगार, सुगन्धित तेल, तीर्थों के जल से अभिषेक, उत्तम वस्त्र धारण, हरी कुचकी, रक्त उत्तरीय एवं महालक्ष्मी को अन्य अंगों में आभूषणों की भावना से श्रृंगार करें और भावना करें कि लक्ष्मी नारायण सहित स्थापित हो

इस प्रकार मूल भावना करते हुए लक्ष्मी को अमृत पात्र भेंट करें।

अमृतासव चषक कल्पयामि नमः।

फिर ताम्बूल, कपूर, लवंग आदि भेंट करें।

एला लवंग कपूर कस्तूरी केसरादीभ समर्पयामि।

**कुंकुम-केसर** - कुंकुम, केसर समर्पित करें–

कुंकुम गोरोचन कस्तूरि कपूर-श्वेत-
कृष्ण रक्त चन्दन समर्पयामि।

**गंध** - इत्र चढ़ायें–श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्ध समर्पयामि।

**अक्षत** - चावल चढ़ायें–श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान समर्पयामि।।

**पुष्प** - ऋतु कालोद्भव पुष्प चम्पक पद्म बिल्वपत्र शतपत्र समर्पयामि

इसके बाद कुंकुम, चावल तथा पुष्प मिलाकर यंत्र पर चढ़ायें।

**धूप** - श्री महालक्ष्म्यै नमः धूप आघ्रापयामि,

**दीप** - श्रीमहालक्ष्म्यै दीप दर्शयामि नमः।

**नैवेद्यं** - श्रीमहालक्ष्म्यै नैवेद्य निवेदयामि स्वाहा

**ताम्बूल** - लौंग, इलायची युक्त पान समर्पित करें–

श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूल समर्पयामि।।

**दक्षिणा** - दक्षिणा द्रव्य समर्पित करें–

श्री महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि।।

इसके बाद यंत्र के साथ रखी सामग्री का भी संक्षिप्त पूजन करें।

फिर साधक तांत्रोक्त महालक्ष्मी माला से ग्यारह माला निम्न मंत्र का जप करें–

**।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै फट् ।।**

सद्गुरुदेव ने बताया है कि यह मंत्र छोटा होते हुए भी अघोर सपर्या तांत्रोक्त महालक्ष्मी पूजन पद्धति से पूजित प्राण प्रतिष्ठित किया गया है अतः इसका प्रभाव अन्यतम है।

इसके बाद साधक पात्र में अष्टदल बनाकर पांच या नौ बत्तियाँ घृत से भिगो कर 'ह्रीं' बीज से जला कर परिवार के साथ आरती करें।

## आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि दिन सेवत, हर विष्णु धाता।

ॐ जय लक्ष्मी....

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

जिस घर तुम रहती तह, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वैभव सब तुमसे आता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।

ॐ जय लक्ष्मी...

फिर दोनों हाथ जोड़ कर परिवार सहित अपने आपको समर्पित करता हुआ समर्पण करें।

इसके बाद साधक पूरे परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण करें एवं प्रसाद वितरण कर आनंदपूर्वक भोजन ग्रहण करें। रात्रि में कोई अन्य साधना भी कर सकते हैं।

साधना सामग्री-660/-

# तांत्रोक्त महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त

।। ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णु पत्नयां च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।

हे महालक्ष्मी! इस शुभ अवसर पर आप मेरे घर में स्थायी निवास करें। हे विष्णु पत्नी लक्ष्मी! आप विद्या, बुद्धि बल एवं वैभव प्रदान करें, जिससे हम सुखी, सम्पन्न एवं यशस्वी बन सकें।

कार्तिक मास की अमावस्या
अर्थात् दीपावली पर्व पर रात्रि के समय भगवती महालक्ष्मी सद्गृहस्थों के घरों में विचरण करती है, ऐसा ब्रह्म पुराण में कहा गया है।

इस बार दीपावली 4 नवम्बर 2021, दिन गुरुवार को है,
इसलिए इस दिन ध्यानपूर्वक अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके इस पर्व को मनाने से महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और स्थायी रुप से निवास करती हैं।

आज के समय में लक्ष्मी ही वह केंद्र बिन्दु है जो भौतिक जीवन की निराशा एवं नीरसता समाप्त करने में महत्वपूर्ण है। लक्ष्मी के अभाव में भौतिक जीवन नरक के समान हो जाता है और व्यक्ति का अधिकांश समय जीवन की समस्याओं से जूझते हुये ही व्यतीत हो जाता है। उसके मन में यही प्रश्न उठता है कि मैं अपनी दरिद्रता कैसे समाप्त करूँ। इसमें दैवी शक्तियों का आश्रय लेकर हम अपने जीवन को बदल सकते हैं। लक्ष्मी साधना के लिए कार्तिक माह एक महत्वपूर्ण समय है जिसमें दीपावली पर्व का मुहूर्त तो अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है अत: हमें इस दिन के स्थिर लग्न के मुहूर्त का लाभ लेते हुए पूरे परिवार के साथ बैठकर पूर्ण विधि-विधान से लक्ष्मी पूजन अवश्य ही करना चाहिए। पत्रिका में तांत्रोक्त महालक्ष्मी पूजन विधान दिया गया है, इससे सम्बन्धित सभी पूजन सामग्री आप हमारे जोधपुर कार्यालय से मंगवाकर इस विशिष्ट मुहूर्त पर महालक्ष्मी पूजन अवश्य ही सम्पन्न करें।

# महालक्ष्मी पूजन : शुभ समय

| शहर | | वृषभ लग्न मुहूर्त | | सिंह लग्न मुहूर्त |
|---|---|---|---|---|
| जोधपुर | शाम | 06.30 से 8.26 | रात्रि | 12.59 से 03.14 |
| दिल्ली | शाम | 06.09 से 8.04 | रात्रि | 12.39 से 02.56 |
| मुम्बई | शाम | 06.42 से 08.42 | रात्रि | 01.08 से 03.16 |
| कोलकता | शाम | 05.34 से 7.33 | रात्रि | 12.02 से 02.13 |
| चेन्नई | शाम | 06.21 से 08.23 | रात्रि | 12.44 से 02.47 |
| चण्डीगढ़ | शाम | 06.07 से 08.01 | रात्रि | 12.38 से 02.58 |
| लखनऊ | शाम | 05.57 से 07.53 | रात्रि | 12.27 से 02.42 |
| देहरादून | शाम | 06.02 से 07.57 | रात्रि | 12.34 से 02.53 |
| पटना | शाम | 05.42 से 07.39 | रात्रि | 12.11 से 02.25 |
| जमशेदपुर | शाम | 05.43 से 07.41 | रात्रि | 12.10 से 02.22 |
| रांची | शाम | 05.45 से 07.43 | रात्रि | 12.13 से 02.25 |
| गंगटोक (सिक्किम) | शाम | 05.25 से 07.22 | रात्रि | 11.55 से 02.11 |
| गुवाहटी | शाम | 05.15 से 07.12 | रात्रि | 11.44 से 01.59 |
| गोरखपुर | शाम | 05.47 से 07.44 | रात्रि | 12.17 से 02.32 |
| वाराणसी | शाम | 05.51 से 07.48 | रात्रि | 12.20 से 02.34 |
| भुवनेश्वर | शाम | 05.48 से 07.47 | रात्रि | 12.14 से 02.24 |
| रायपुर | शाम | 06.03 से 08.02 | रात्रि | 12.30 से 02.40 |
| इन्दौर | शाम | 06.24 से 08.23 | रात्रि | 12.52 से 03.03 |
| नागपुर | शाम | 06.14 से 08.13 | रात्रि | 12.40 से 02.50 |
| अहमदाबाद | शाम | 06.37 से 08.35 | रात्रि | 01.04 से 03.16 |
| हैदराबाद | शाम | 06.22 से 08.23 | रात्रि | 12.47 से 02.54 |
| बैंगलोर | शाम | 06.32 से 08.34 | रात्रि | 12.55 से 02.58 |
| जम्मू | शाम | 06.10 से 08.04 | रात्रि | 12.43 से 03.05 |
| जयपुर | शाम | 06.17 से 08.14 | रात्रि | 12.47 से 03.03 |
| काठमाण्डू (नेपाल) | शाम | 05.53 से 07.49 | रात्रि | 12.23 से 02.39 |
| पोखरा (नेपाल) | शाम | 05.57 से 07.53 | रात्रि | 12.28 से 02.45 |
| विराटनगर (नेपाल) | शाम | 05.47 से 07.44 | रात्रि | 12.17 से 02.32 |
| नेपालगंज | शाम | 06.07 से 08.03 | रात्रि | 12.37 से 02.54 |

## आश्चर्यजनक

# व्यापार वृद्धि प्रयोग

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को सम्पन्न किया जाता है,

इस वर्ष इस प्रयोग के लिए रात्रि की सिंह लग्न के मुहूर्त का समय विशेष महत्वपूर्ण है, यदि इस समय में यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय, तो निश्चय ही व्यापार वृद्धि में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

## सामग्री

जलपात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, व्यापार सिद्धि यन्त्र, केसर, स्फटिक माला

## मंत्र

**॥ ॐ ह्रीं धनधान्य समृद्धि दरिद्रविनाशिनी महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ॐ नमः॥**

## विधि

साधक या प्रयोगकर्ता आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पात्र में 'व्यापार सिद्धि यत्र' रख दें, पहले उसे जल से धो लें, फिर पोंछ कर उस पर केसर का तिलक करें, और सामने स्थापित कर उसके सामने दूध का बना प्रसाद रखें, और अगरबत्ती तथा घी का दीपक प्रज्वलित करें, फिर 'स्फटिक माला' से उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरें।

इसके बाद प्रातः काल होने पर इस यंत्र को अपने घर के पूजा स्थान में, दुकान पर अथवा फैक्ट्री में स्थापित कर दें। ऐसा करने पर उसके व्यापार में निरन्तर उन्नति होती रहती है, और जब तक वह यंत्र दुकान में, कार्यालय या फैक्ट्री में अथवा घर में स्थापित रहेगा, तब तक उसे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहेगी।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इस प्रयोग से सैकड़ों लोगों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया है।

**साधना सामग्री- 450/-**

# स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

[illegible]

इस प्रयोग को सिद्ध करने पर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होती है और उसे जीवन में किसी भी दृष्टि से असफलता या परेशानी नहीं रहती।

## सामग्री

लघु दक्षिणावर्ती शंख, केसर, जलपात्र, अगरबती, दीपक, लाल वस्त्र

## मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं महालक्ष्मी धनदा यक्षिणी
कुबेराय मम गृहे स्थिरो ह्रीं ॐ नमः ॥

इस वर्ष इस प्रयोग को सम्पन्न करने का समय दीपावली को 4.11.21 को दिन में 4.28 से 5.32 के बीच है। यह समय इस दृष्टि से अत्यधिक सफलतादायक है। या रात्रि को स्थिर लग्न में भी इसे सम्पन्न कर सकते हैं।

साधक अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दें, जो कि मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो और उस पर केसर से स्वस्तिक बना लें तथा कुंकुम से तिलक कर दें।

ऐसा करने के बाद स्फटिक माला से उपरोक्त मंत्र की तीन मालाएं फेरें। ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है। मंत्र प्रयोग पूरा होने के बाद लाल वस्त्र में शंख को बांध कर घर में किसी अच्छे स्थान पर रख दें। जब तक वह शंख घर में रहेगा तब तक उसके जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहेगी।

वास्तव में यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इस वर्ष तो एक विशेष योग दीपावली के दिन निर्मित हुआ है अतः उपरोक्त बताये हुए समय में यदि यह प्रयोग सिद्ध क्या जाय तो अधिक दृष्टि से विशेष सफलतादायक कहा जा सकता है।

*साधना सामग्री 660/-*
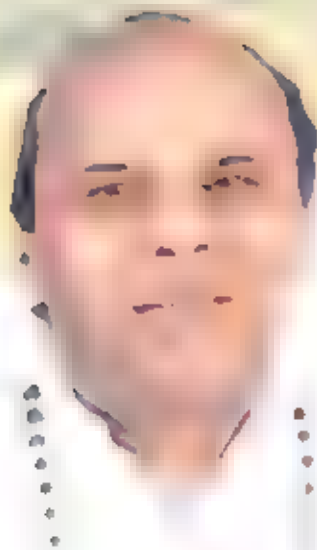
# जीवन का मूल्य

**एक बार सिकंदर से एक फकीर ने कहा कि, तूने इतना बड़ा साम्राज्य बना लिया, इसका कुछ सार नहीं है। मैं इसे दो कौड़ी का समझता हूँ।** सिकंदर को बहुत गुस्सा आया। उसने उस फकीर से कहा इस बात को तुम्हें सिद्ध करना होगा अन्यथा मरने के लिए तैयार हो जाओ। तुमने मेरा अपमान किया है। मेरे जीवन भर का श्रम और तुम कहते हो कुछ भी नहीं, दो कौड़ी का भी नहीं।

उस फकीर ने कहा तो ऐसा समझो कि एक रेगिस्तान में तुम भटक गए हो। तुम्हें जोर की प्यास लगी है। तुम मरे जा रहे हो। मै मौजूद हूँ, मेरे पास पानी से भरी मटकी है लेकिन मैं कहता हूँ कि एक गिलास पानी दूँगा और कीमत में आधा साम्राज्य लूंगा, तुम दे सकोगे।

सिकंदर बोला कि, अगर मैं रेगिस्तान में प्यास से मर रहा हूँ तो मैं आधा क्या पूरा साम्राज्य दे दूगा। तो उस फकीर ने कहा, बस बात खत्म हो गयी, बस तुम्हारे साम्राज्य की कीमत है एक गिलास पानी और तुम कहते हो दो कौड़ी कैसे, मैं कहता हूँ कि दो कौड़ी भी नहीं है क्योंकि पानी तो मुफ्त में मिलता है।

तो सिर्फ जीवन बचाने के लिए सिकंदर अपना पूरा साम्राज्य देने को राजी है। लेकिन हमें तो प्रभु ने पूरा जीवन दिया है तो क्या कभी हमने उसे धन्यवाद दिया। हम हमेशा सिर्फ उसे कोसते रहते हैं।

सद्‌गुरुदेव ने एक बार कहा था कि तुम्हें प्रभु ने क्या नहीं दिया। तुम्हारा हृदय-प्रेम से आपूरित है, तुम्हारे कंठ से गीत पैदा हो सकते हैं। तुम्हें नाक, कान, जिव्हा जैसे महत्वपूर्ण अंग और पूरा का पूरा शरीर दिया है जो अमूल्य है। तुम्हें उसे धन्यवाद देते हुये सिर्फ उसे चैतन्य करना है जो कि तुम्हारे खुद के कर्मो से सुप्त अवस्था में चला गया है। यह जीवन बेशकीमती है या कभी तुमने सोचा है कि आँखें कितनी महत्त्वपूर्ण हैं। तुम संसार के अपूर्व सौन्दर्य को देख सकते हो। इनकी कीमत जानना चाहते हो तो किसी अंधे आदमी से पूछो, वह कहेगा कि मैं सब-कुछ देने को तैयार हूँ, बस आँखें मिल जाएं।

**इसलिए उस प्रभु को धन्यवाद देते हुये पूरे विश्वास के साथ सुप्तावस्था से जाग्रत अवस्था मे आने का प्रयास करो। तुम्हारे अन्दर अनन्त संभावनाएँ भरी पड़ी हैं, जिसे 'मंत्र साधना' द्वारा जगाया जा सकता है।**

**तुम पूरे मन एवं विश्वास के साथ साधना तो करो। मै तो प्रति क्षण तुम्हारे पीछे खड़ा हूँ।**

**लेकिन इसके लिए तुम्हें इस शरीर एवं इस मन पर नियंत्रण करना होगा और जिस क्षण तुम जाग्रत अवस्था मे आ जाओगे और मुझे पहचान लोगे तब तुम्हारे पास मुझे देने के लिए आँसुओ के सिवाय और कुछ नहीं होगा।**

• **राजेश गुप्ता 'निखिल'**

**मेष** प्रारम्भ के 3-4 दिन अनुकूल अनुकूल नहीं हैं। बाधायें महसूस करेंगे। दूसरों की बातों में न आयें। वाहन सावधानी से चलायें। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी परन्तु अशांति का वातावरण रहेगा। अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे धीरे-धीरे परिस्थितियां अनुकूल होंगी। माह के [illegible] में सम्मान मिलेगा अदालतों के चक्कर से छुटकारा मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूल समय है। किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें रुपये उधार न दें दाम्पत्य जीवन मधुरतापूर्ण रहेगा। प्लान सोच-समझ कर बनायें, आवश्यक होने पर ही यात्रा करें। परिवार में मतभेद दूर होंगे। अन्तिम दिनों में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। कोई बड़ी जिम्मेदारी आ सकती है। लालच से दूर रहें, उचित परिणामों की प्राप्ति होगी। वाणी में मधुरता रखें। इस माह आप **श्रीगणेश दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियां** 5 6 7, 13, 14, 15, 23, 24, 25

**वृष** -माह का प्रारम्भ संतोषप्रद रहेगा। परेशानियां दूर होंगी, पुत्र का व्यापार में साथ मिलेगा। सोचे गये कार्य पूरे होते दिखाई देंगे। नौकरीपेशा लोग अपने अफसर से बहस न करें परेशानी में आ सकते हैं। फालतू के झंझटों से दूर रहें। रुके रुपयों की प्राप्ति सम्भव है। वाणी में मधुरता रखें कार्य सम्भव होंगे। दूसरे सप्ताह के अंत में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। कर्मचारियों से आपका अच्छा व्यवहार आपकी प्रतिष्ठा बढ़ायेगा। विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। किसी घनिष्ट मित्र से मुलाकात होगी। कोई बड़ा टेंशन आ सकता है। कानूनी दायरे में फंस सकते हैं, सतर्क रहें। आखिरी दिनों में समाज में सम्मान मिलेगा। किसी के बहकावे में न आयें मित्रों पर विश्वास न करें, सावधान रहें। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें

**शुभ तिथियां** 7 8, 9, 16 17 25 26 27

**मिथुन** माह का प्रारम्भ उत्तमप्रद रहेगा। भौतिक सुख में वृद्धि होगी। इस समय के निर्णय भविष्य में लाभ देंगे। विद्यार्थियों की रुचि अपनी पढ़ाई में रहेगी। आर्थिक परेशानियां कम होंगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा। अचानक तबियत खराब होने से परेशान होंगे। कोई सहयोग नहीं करेगा। जमीन जायदाद के मामले सुलझेंगे। माह के मध्य के बाद कोई भी कार्य सोच विचार कर करें वरना नुकसान हो सकता है। किसी भी वाद विवाद से दूर रहें। अपने ही नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेंगे कहीं भी बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें, पति पत्नी में तनाव रहेगा विद्यार्थी वर्ग वांछित सफलता पा सकेंगे। माह के अंत में मित्रों का सहयोग मिलेगा, जीवनसाथी का व्यापार में सहयोग मिलेगा। सरकारी कर्मचारी की पदोन्नति एवं स्थानान्तरण प्रसन्नता देगा आप इस माह **गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियां** 1, 2, 9, 10, 11 18, 19, 20, 28, 29

**कर्क** सप्ताह का प्रारम्भ सुखप्रद है। परिस्थितियाँ अनुकूल बनेगी जीवनसाथी के साथ जीवन सुखमय रहेगा। कार्य के सिलसिले में यात्रा लाभ देगी। नये मित्र बनेंगे। चलते फिरते रास्ते में किसी से वाद विवाद होने पर क्रोध पर नियंत्रण रखें। कोई भी निर्णय सोच समझ कर लें। अटके रुपये प्राप्त होंगे। माह के मध्य में कोई अनहोनी घटना हो सकती है। किसी की बातों में न आयें। प्यार में सफलता मिलेगी। नये मकान में प्रवेश हो सकता है। पैतृक सम्पत्ति का बटवारा राजीखुशी हो जायेगा। कोई भी कार्य जल्दबाजी में न करें वरना किसी उलझन में फंस सकते हैं। शत्रु नुकसान पहुँचाने की भरपूर कोशिश करेंगे। माह के अंत में सोची गई मनोकामना पूर्ण हो सकती है बाहर की यात्रा भी हो सकती है। **पचार्ण दीक्षा** प्राप्त करें

**शुभ तिथियां** 3 4 5 11 12 13 20, 21 22 30 31

**सिंह** सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। योजना सफल नहीं हो पायेगी। शत्रु हावी रहेंगे। कारोबार में भी नुकसान हो सकता है। इसके बाद हालात सुधरेंगे बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे कैरियर के लिये गये निर्णय भविष्य में फल देंगे। भाई का सहयोग मिलेगा सोच-समझकर कार्य करें। माह के मध्य में कोई वाद-विवाद सुलझ जायेगा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। मार्केट में प्रभाव बढ़ेगा नौकरीपेशा लोगों के प्रमोशन का समय है, आप किसी गलत कार्य में संलग्न न हो बदनामी हो सकती है। इस समय स्वास्थ्य का ध्यान रखें अपना कर्म करें फल अवश्य मिलेगा। माह की अन्तिम तारीख में आवेश में आकर कुछ ऐसा कर लेंगे, जो आपके लिए नुकसानदेय होगा अतः सावधान रहें अन्यथा शत्रु यह देखकर खुश होंगे। दोस्तों का साथ मिलेगा। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियां** 5, 6, 7, 13 14 15 23 24 25

**कन्या** माह के प्रारम्भ में शुभ परिणाम मिलेंगे। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। शत्रुओं के दबाव में न आयें। कोई पुराने वाद विवाद का निपटारा होगा अड़चने आयेंगी, भाई की सहायता से कार्य सफल होंगे। विद्यार्थी वर्ग मनचाहे रिजल्ट से प्रसन्न रहेगा। अचानक कोई अशुभ समाचार मिल सकता है नौकरीपेशा लोगों को अधिकारी वर्ग से

सहयोग मिलेगा। विरोधियों को आप शांत कर सकेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नकारात्मक विचारों से दूर रहें। अनर्गल कार्यों से भी दूर रहें, बदनामी मिल सकती है। आखिरी सप्ताह में आय की आवक रहेगी। रुके पैसे भी प्राप्त होंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। आवेश में न आयें, अपना ही नुकसान कर लेंगे। आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 7,8,9,16,17,25,26,27

**तुला** - माह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आप अपने परिश्रम से सफलता पा लेंगे। नौकरीपेशा लोगों को उच्च अधिकारियों से सहयोग मिलेगा। इस समय नये कार्य से बचें, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिवार में सहयोग मिलेगा। मध्य का समय उतार-चढ़ाव का है। योजनायें सोच-समझ कर बनायें पिछले विवाद सुलझा सकेंगे, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। नई खरीदारी होगी तीसरा सप्ताह अनुकूल नहीं है। मामले उलझेंगे टेंशन रहेगी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी अन्तिम सप्ताह में प्रेम के मामले में गलतफहमी रहेगी, स्वास्थ्य पर ध्यान दें। कोई अपमानित भी कर सकता है। धैर्य एवं संयम से काम लें। बिगड़े कार्य सुधार सकेंगे आय के स्रोत बढ़ेंगे आप **महादुर्गा साधना** प्राप्त करें

**शुभ तिथियाँ** - 1,2 9,10,11,18,19,29,30

**वृश्चिक** - सप्ताह का प्रारम्भ खुशी भरा रहेगा, स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों को स्वयं करें अचानक कहीं से धन लाभ हो सकता है फालतू बातों से दूर रहें, शत्रुओं से सावधान रहें। वाहन चालन में सावधानी रखें, परिवार में असहयोग का वातावरण रहेगा, कोई घटना आपको परेशान करेगी। संतान पक्ष से सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में बाधाएं दूर होकर प्रसन्नता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूल समय है। तीसरे सप्ताह में कुछ अशुभ हो सकता है किसी के बहकावे में न आयें किसी भी तरह का गलत कदम न उठायें। अपने बलबूते पर कार्य करने से सुधार होगा। जमीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएं सुलझेंगी। शत्रु परेशान करने की कोशिश करेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क बनेंगे। इस माह आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 3,4,5,11,12,13,20,21,22,30,31

**धनु** प्रारम्भ के कुछ दिन संतोषप्रद नहीं रहेंगे। जीवन में कोई कष्ट आ सकता है। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। वरना गृहस्थ में कलह होगी। नया वाहन इन दिनों न खरीदें। रोजगार के अवसर बनेंगे। आप खराब परिस्थितियों में भी हार नहीं मानेंगे। दूसरे सप्ताह में स्वास्थ्य खराब हो सकता है आर्थिक स्थिति भी डावांडोल रहेगी। शत्रु परेशान करेंगे। इस समय सोच-समझकर निर्णय लें। किसी व्यक्ति से मुलाकात यादगार रहेगी समाज में सम्मान मिलेगा नौकरीपेशा लोग शांत एवं संयम में रहें। हड़बड़ी में कार्य करने की प्रवृत्ति से बचें। यात्रा से कष्ट सम्भव है धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा, विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होगी। कोई खुशखबरी मिल सकती है, संतान पक्ष का सहयोग रहेगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। आप **रोग मुक्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 5,6,7,13,14,15,23,24,25

**मकर** - सप्ताह का प्रारम्भ संतोषकारी रहेगा। सोचे गये कार्यों में सफलता मिलेगी। बाद के समय में कोई मुसीबत अचानक आ सकती है अशांति का वातावरण बन जायेगा परन्तु आप संयम से कार्यों को पूरा कर लेंगे। कोर्ट कचहरी में अनुकूलता रहेगी। परिश्रम से ही सफलता मिलेगी वाहन धीमी गति से चलायें। शत्रुओं से सावधान रहें।

| | | |
|---|---|---|
| **सर्वार्थ सिद्धि योग** | अक्टू. | 6 15,19 21 25 28 |
| **रवि योग** | अक्टू. | 9 12 15 18 19 27 |
| **गुरु पुष्य योग** | अक्टू. | 28 (प्रातः 9.41 से 29 अक्टू. प्रातः 6.49 तक) |

निर्णय सोच समझ कर लें। दाम्पत्य जीवन में नोक झोंक रहेगी, नये मकान में प्रवेश हो सकता है। किसी की बातों में न आकर स्वयं निर्णय लें। समय थोड़ा प्रतिकूल है टेंशन न लें अन्यथा स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बिगड़े कार्यों को मेहनत से सुधार सकेंगे। संतान व्यापार में सहयोग करेगी। किसी से राह चलते वाद विवाद न करें। माह के अन्त में जीवनसाथी से मधुर व्यवहार होगा। आप इस माह **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

**शुभ तिथियाँ** 7,8 9 16 17 25,26 27

**कुम्भ** - प्रारम्भ शुभ कार्यों से होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। जमीन-जायदाद के मामले सुलझ जायेंगे। बुद्धि विवेक से सफलतापूर्वक मामले सुलझा लेंगे, नौकरीपेशा लोगों को ऑफिस में संयम का व्यवहार करना चाहिए। फिजूल खर्चों से बचें। बाहरी यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। परिश्रम का लाभ मिलेगा। अत्यधिक विश्वासी धोखा दे सकता है। राजनीतिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी विद्यार्थी वर्ग वांछित सफलता पायेगा भोग की प्रवृत्ति पर अंकुश लगायें। प्रतिष्ठा में आंच आ सकती है आखिरी तारीखों में जल्दबाजी से काम बिगाड़ लेंगे, कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। धर्म स्थल की यात्रा से शांति मिलेगी। आप **हनुमान चालीसा** का पाठ करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1,2,9,10,11,18,19,20,29,30

**मीन** - प्रारम्भ के दिन सकारात्मक परिणाम देंगे। प्रोपर्टी के कार्य में सफलता मिलेगी। शत्रु शांत रहेंगे मुश्किल में भी मंजिल पा लें संघर्ष तो रहेगा। बाधा महसूस करेंगे कार्यक्षेत्र में जीत होगी विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई से विचलित रहेगा प्रेम में सफलता मिलेगी परिश्रम से सफलता अवश्य प्राप्त होगी सहयोगी एवं शुभचिंतकों का सहयोग आगे बढ़ने में मदद करेगा। कुछ अधूरे कार्य इस समय पूरे होंगे आखिरी सप्ताह उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। इस समय नया कार्य प्रारम्भ न करें शत्रु हावी रहेंगे। फालतू खर्चों से बचें समय का सदुपयोग करें जटिलताएं स्वतः दूर होंगी। दूसरों की मदद करेंगे। इस माह आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 3,4,5,11,12,13,20,21,22,30,31

**[illegible]**

| | | |
|---|---|---|
| 06 10 21 | बुधवार | सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या |
| 07 10 21 | गुरुवार | नवरात्रि प्रारम्भ |
| 10 10 21 | रविवार | उपांग ललिता व्रत |
| 12 10-21 | मंगलवार | सरस्वती पूजन दिवस |
| 13 10 21 | बुधवार | दुर्गा अष्टमी |
| 15 10 21 | शुक्रवार | विजय दशमी |
| 16.10-21 | शनिवार | पापांकुशा एकादशी |
| 19 10-21 | मंगलवार | शरद पूर्णिमा |
| 21 10 21 | गुरुवार | कार्तिक मास प्रारम्भ |
| 24-10 21 | रविवार | करवा चौथ |
| 28 10 21 | गुरुवार | अहोई अष्टमी |

# यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत है जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित है, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

## अक्टूबर-21

11. शिव मन्दिर में पाँच पुष्प अर्पण करें।
12. प्रातः पूजन के बाद 21 बार निम्न मंत्र का जप करें- ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।।
13. ॐ दुं दुर्गाय नमः- का 11 बार जप करके जाएं।
14. आज कन्याओं को भोजन करायें।
15. आज पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
16. सितम्बर-21 पत्रिका में प्रकाशित पापशमन प्रयोग सम्पन्न करें।
17. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
18. सुबह गुरु मंत्र का 16 माला मंत्र जप करके जाएं।
19. पीपल के पत्ते पर दूध की बनी मिठाई रखकर मन्दिर में चढ़ा दें।
20. माँ लक्ष्मी की आरती करके जाएं।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु गीता का पाठ करें।
22. आज निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं- ॐ ह्रीं ॐ ।।
23. बाहर जाने से पूर्व एक कागज पर ॐ शनिश्चराय नमः लिखकर अपनी जेब में रखें। अगले दिन इसे जला दें।
24. आज सूर्य को अर्घ्य देकर सात प्रदक्षिणा करें।
25. प्रातः उठते ही पृथ्वी माता को स्पर्श करके नमस्कार करें।
26. बजरंग बाहु (न्यौ. 90/-) सामने रखकर ॐ हनुमतये नमः का 21 बार उच्चारण करके धारण कर लें।
27. ॐ अन्नपूर्णायै नमः मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
28. आज बाहर जाते वक्त नारायण गुटिका (न्यौ. 150) लेकर जाएं, सफलता मिलेगी।
29. आज पक्षियों को दाना डालें।
30. काले उड़द की दाल दान करें।
31. गायत्री मंत्र की 1 माला मंत्र जप अवश्य करें।

## नवम्बर-21

1. आज गाय की पूजा करके उसे रोटी खिलायें।
2. आज गुरु मंत्र के बाद किसी लक्ष्मी मंत्र की 1 माला जप करें।
3. आज घर की सफाई कर कूड़े को ॐ ऐं घृं नमः मंत्र बोलकर उसे (दरिद्रता) जला दें।
4. आज सुबह द्वार पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं एवं सपरिवार गुरु पूजन करें।
5. आज ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
6. प्रातः ॐ जुं सः मंत्र का 10 मिनट जप करें।
7. बाहर जाने से पूर्व 1 चुटकी भर काले तिल पांच बार सिर पर घुमाकर बाहर फेंक दें।
8. भगवान गणपति को दूर्वा चढ़ायें।
9. प्रातःकाल सपरिवार बैठकर ॐ ऐं ॐ का 10 मिनट जप करें।
10. आज सूर्य षष्ठी है, भगवान सूर्य का अर्घ्य प्रदान करें।

## रूप चतुर्दशी

### सौन्दर्योत्तमा

# रूप अनंग सिद्धि साधना

सौन्दर्य और अनंग की परिपूर्णता भगवान श्रीकृष्ण

के रासलीला महोत्सव में देखी जा सकती है।

**ऐसा सौन्दर्य, आकर्षण और गोपियों के समान अनंग प्रेम, सौन्दर्य और सम्मोहन की साधना से संभव है,**

जिससे प्राप्त होता है,

एक मोहित कर देने वाला आकर्षण, आकर्षण युक्त पुरुष और स्त्री ही आनन्द निमग्न रहते हैं। संसार के सुखों का भोग करते हैं, ऐसा दिव्य मुहूर्त है रूप अनंग चतुर्दशी।

सौन्दर्य किसी नारी अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान है। जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।

आज सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयास करता है तरह-तरह के विटामिन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूढने के प्रयास मे रत है, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही है। हां, यह जरूर है कि सर्जरी के माध्यम से चेहरे व शरीर की झुर्रियों को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यन्त महंगी है, और अत्यन्त कष्ट साध्य भी है, जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

यदि हम अपना थोड़ा-सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा अविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता लगेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूंढ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषियों धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया कि-

- आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?
- कैसे अपने आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है?
- किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?
- किस प्रकार अपने पूर्ण शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है?

'कायाकल्प' का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दें, 50 वर्ष के प्रौढ़ को भी 25 वर्षीय पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दे, क्योंकि व्यक्ति तन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारो से बूढ़ा हो जाता है और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है.... जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य वृद्धि है।

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कही जाती है। जितने भी ग्रन्थ, वेद, पुराण लिखे गये हैं, उन सब मे सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है।

मैंने अपने जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुन्दर साधिकाओं और संन्यासियों को देखा है एक से बढ़कर एक सुन्दरियो व अप्सराओ को भी साधनारत होते देखा है, जो अपनी देहयष्टि को पूर्ण यौवनवान और चैतन्यवान बनाये रखने के लिए साधनारत रहती है।

अनिन्द्य अद्वितीय च सौन्दर्य यान्ति निश्चितम्।
साधना सौन्दर्याख्याय काक्षन्त्यपसरोऽपि यत्।।

'निश्चित रूप से साधना के द्वारा भी अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएं भी सुन्दरत्तम बनने के लिए सौन्दर्य साधना करती है।'

'सौन्दर्य साधना' ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जिसे अप्सराओं ने भी सिद्ध किया, वैसे तो पूर्ण यौवनवान और सौन्दयवान बनने के लिए 16 प्रकार की अप्सराओ की साधनाओ का ही महत्व पुराणो में प्रतिपादित किया गया है, किन्तु जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं अप्सरायें भी लालायित हों, उस सौन्दर्य की तो मात्र कल्पना ही की जा सकती है

और ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य का प्राप्त होना, जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की सम्पूर्णता है।

इस साधना को स्त्री व पुरुष दोनों ही सम्पन्न कर अपने शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर सकते हैं, जहां पुरुष यह साधना कर ऊंचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक दिव्य और तेजस्वी आंखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं और उसके साथ ही साथ दृढ़ता, पौरुषता, साहस प्राप्त कर ऐसे सौन्दर्य का मालिक बनता है, जो दर्शनीय हो, शौर्य और साहस का प्रतिबिम्ब हो, वहीं स्त्रियां भी सांचे में ढला हुआ भरा-पूरा शरीर, गोरा रंग एवं एक ऐसा शरीर जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, प्राप्त कर लेती है।

## साधना विधि

1. कामदेव के मंत्रों से प्रतिष्ठित 'सौन्दर्य यंत्र', 'रूपा माला' और 'नीलकर्ण मुद्रिका' इन तीनों सामग्रियों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर ले।
2. यह साधना दिनांक 03.11.21 के दिन प्रारंभ करें या फिर माह के किसी भी शुक्रवार के दिन इस साधना को प्रारम्भ करें।
3. रात्रि को 8.30 से 11.30 के मध्य यह साधना करें।
4. साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।
5. स्वयं भी स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें।
6. अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके ऊपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक सुन्दर कलश रखें, उसके ऊपर पीला चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।
7. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद आसन पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।
8. इसके बाद यंत्र को जल से धोकर पोंछ लें और यंत्र पर इत्र छिड़क दें तथा अपने ऊपर भी इत्र छिड़कें, धूप व दीप से वातावरण को सुगन्धमय बनायें।
9. यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करें, इसके बाद यंत्र पर केसर से पांच बिन्दी लगाएं, जो पांच प्राणों की प्रतीक है, क्योंकि सौन्दर्य का प्रतिस्फुरण इन्हीं प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।
10. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।
11. ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं।
    ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।

    इस मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियां लगायें तथा मुद्रिका पर भी एक एक बिन्दी लगायें।
12. अक्षत चढ़ायें-

    अक्षतान् धवलान् देवि शालीयांतन्दुलास्तथा।
    आनीतास्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

    यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।
13. इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें-

    नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च।
    पुष्पांजलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

    यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ा दें।
14. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें 'हे देवी! आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित हों।'

सौन्दर्य भवतीरहोके, माधुर्य ओजस तेजस्तथैव।
रूपोज्ज्वला रूपदिव्या प्रपन्ना याचे च नित्यं त्वं देहि मातः।।

'हे मां' आप सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी हैं, ओज और तेज सभी दिव्य गुण आप में समाहित हैं, मैं आप से इसी रूपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूं।'

15. इसके बाद निम्न मंत्र का 'रूपमाला' से 51 माला मंत्र जप रात्रि में 3 दिन तक करें-

### मंत्र

**।। ॐ श्रीं सौन्दर्याभिवाप्तये श्रीं नमः।।**

16. जप समाप्ति के बाद गुरुपूजन करें व इच्छानुसार गुरु मंत्र जप करें।
17. तीन दिन तक मंत्र जप करें, इसके बाद समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अत्यन्त ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है। साधना के थोड़े दिन बाद ही आप अपने भीतर विशिष्ट गुणों का आविर्भाव अनुभव करेंगे तथा शनैः शनैः सौन्दर्य वृद्धि अनुभव होने लगेगी और दूसरों के साथ साथ स्वयं को भी इस बात का एहसास होने लगेगा। इस साधना को गम्भीरतापूर्वक पूर्ण श्रद्धा से करें।

साधना सामग्री- 570/-

## सौभाग्य प्राप्ति सिद्धि दिवस

**09.11.21**

सोये हुए सौभाग्य को जगाया जा सकता है

# जीवन में पूर्ण भाग्योदय प्राप्त किया जा सकता है

इस संसार में और आपके इस जीवन में सुख, सौन्दर्य, आनन्द चारों तरफ फैला हुआ है.

लेकिन बहुत कम व्यक्तियो को ही यह आनन्द जीवन का रस, निश्चिन्तता, शान्ति प्राप्त होती है।

### सौभाग्य का तात्पर्य है कि

**जीवन में आनन्द, कार्यों की पूर्णता, पारिवारिक शान्ति, मान-सम्मान में वृद्धि, श्रेष्ठता, कलह से मुक्ति, योग्य व्यक्तियों का सहयोग, बाधाओं से मुक्ति और प्रत्येक कार्य की पूर्णता में तीव्रता।**

जीवन रथ दो पहियों पर चलता है, पहला पहिया कर्म है और दूसरा भाग्य, जब कर्म को भाग्य का सहयोग प्राप्त होता है, तब जीवन की मधुरता में और भी अधिक वृद्धि हो जाती है तब जीवन जीने का आनन्द आ जाता है, जीवन के सुख भाग्यहीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकते, चाहे वह कितना ही कर्मशील क्यों न हो, कर्म और भाग्य का संयोग सोने में सुहागे जैसी स्थिति बना देता है, जहां कर्म व्यक्तित्व में दृढ़ता लाता है, वही भाग्य आपके कार्यों की शीघ्र पूर्णता में सहयोग देता है, अनायास धन की प्राप्ति बिना प्रयास के उन्नति प्राप्त होना, शत्रुओं का तेज निर्बल होना, भाग्य का ही अंग है। गृहस्थ सुख में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होना, अच्छी पत्नी अथवा अच्छा पति प्राप्त होना, भाग्य का ही कारण है, लेकिन जीवन में श्रेष्ठ भाग्य-सौभाग्य की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है, साधना में इतनी शक्ति है कि जीवन में मधुरता आ सकती है, उन्नति प्राप्त हो सकती है, लक्ष्मी प्राप्त हो सकती है, भाग्य सुख से ऐसी स्थिति प्राप्त हो सकती है जिससे बिगड़े भाग्य भी संवर जाते हैं।

# सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

कार्तिक शुक्ल पंचमी (9 11 2021) को "सौभाग्य प्राप्ति दिवस" है

इस (9 11 2021) दिन कुछ ऐसे विशेष ग्रह सयोग बने हैं
जिसके कारण इस दिन एक विशेष प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए.
यह भाग्य बाधा नाश और भाग्योदय प्राप्ति प्रयोग है

**जिसके कारण अतृप्त इच्छाएं पूर्ण हो सकती हैं, अनायास धन प्राप्ति हो सकती है, जीवन में ऐसी श्रेष्ठ स्थितियां बन सकती है, जिनकी आपको कल्पना ही नहीं थी।**

भाग्य सिद्धि दिवस (9 11.21) के दिन यह प्रयोग सायकाल सूर्यास्त के पश्चात अर्थात् आठ बजे के बाद ही प्रारभ करे. इस प्रयोग में भाग्योदय देवी ललिताम्बा के बीज मंत्रों से शुभ मुहूर्त में सम्पुट 'सौभाग्य गुटिका एवं सौभाग्य फल' स्थापित करना आवश्यक है।

सायंकाल में स्नान कर शुद्ध साफ वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठे और एक ओर मिट्टी के बडे दीपक में बड़ी बत्ती बना कर घी का दीपक जलाएं. पूरे पूजा प्रयोग एवं पूरी रात्रि में यह दीपक जलते रहना चाहिए और दूसरी ओर बडा कलश रखें. इस कलश में जल भरा हुआ होना चाहिए अपने सामने सौभाग्य गुटिका स्थापित कर उस सौभाग्य गुटिका को सौभाग्य फल अर्पित करें. साथ ही उस समय प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ फल भी चढाए. इस प्रयोग में केवल केसर को ही प्रयोग में लाते हुए सौभाग्य गुटिका, सौभाग्य फल, कलश एवं दीपक पर तिलक लगाएं और फिर स्वय अपने भी केसर से तिलक करें. अब ललिताम्बा देवी सिद्ध सौभाग्य गुटिका के चारों ओर कुंकुम से एक चक्र बना कर चावल अर्पित करें और पुष्प भी चढ़ाएं तथा ललिताम्बा देवी से अपने जीवन में पूर्ण भाग्यवृद्धि, सौभाग्य वृद्धि हेतु, कार्य में पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति हेतु प्रार्थना करते हुए निम्नलिखित बीज मंत्र को सफेद हकीक माला से ग्यारह माला जप करें।

**मंत्र**

**।। ॐ ह्रीं गौर्यै वर वरद ह्रीं नमः।।**

अब सौभाग्य फल को तो अपने पूजा स्थान में गणेश जी के चित्र के सामने अर्पित कर दें और सौभाग्य गुटिका को एक रेशमी कपडे की थैली में बाँध कर रख दें. चढाये हुए फल स्वयं तथा अपने परिवार के सदस्यों के साथ उसी स्थान पर प्रसाद रूप में ग्रहण कर लें।

जब भी किसी विशेष कार्य हेतु रवाना हों, जैसे कि इण्टरव्यू, बडे अधिकारी से मिलने हेतु या महत्वपूर्ण यात्रा हेतु जाते समय, इस सौभाग्य गुटिका को जो कि रेशमी थैली में बंधी है, या तो अपनी जेब में रख लें अथवा अपने बैग में रख लें, इससे अनुकूल स्थिति प्राप्त होती है।

प्रतिदिन के कार्यों हेतु इस सौभाग्य गुटिका को साथ में न रखें. प्रतिदिन पूजन के पश्चात् अथवा अपने नित्य पूजन के पश्चात् अपनी दोनों आँखों तथा ललाट अर्थात् सिर के मध्य में सौभाग्य गुटिका का स्पर्श अवश्य करें।

साधना सामग्री - 450/-

# गोवर्धन पूजा

05.11.21

जिसके सम्पन्न करने से

## घर में जहाँ अन्न, दूध आदि

कभी कम नहीं पड़ता वहीं

# भगवान कृष्ण के गोवर्धन स्वरूप

## की कृपा से प्राकृतिक आपदाओं से भी सुरक्षा होती है

**कार्तिक मास में दीपावली के बाद अन्नकूट की पूजा की जाती है, जिसे गोवर्धन पूजा भी कहते हैं। 05 11 21 को प्रातःकाल शरीर पर तेल लगाकर फिर स्नान करना चाहिए। दैनिक पूजा के बाद गाय की पूजा करनी चाहिए।** गाय को समृद्धि का प्रतीक माना गया है और समृद्धि में वर्धन या वृद्धि करने वाले भगवान कृष्ण को गोवर्धन भी कहा गया है। यदि घर में गाय हो तो गाय के शरीर पर लाल एवं पीला रंग लगाना चाहिए, उसकी सींग पर तेल लगाना चाहिए। फिर उस घर में बने भोजन का प्रथम अंश खिलाना चाहिए। यदि घर में गाय न हो तो किसी भी गाय की पूजा की जा सकती है।

इसके बाद **'गोवर्धन पूजा' (अन्नकूट पूजा)** करनी चाहिए। इसके लिए गाय के गोबर से पर्वत की आकृति देकर एक छोटा सा गोवर्धन पर्वत बना लें, इस पूजा के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यदि गोबर उपलब्ध न हो, तो अन्न (चावल या गेहूँ आदि) की ढेरी के रूप में भी गोवर्धन पर्वत बनाया जा सकता है। इस प्रकार अन्न की ढेरी से बने गोवर्धन को ही अन्नकूट कहते हैं।

गोवर्धन पूजा का अपना विशेष महत्व है। प्राकृतिक विपत्तियों से सावधान रहने की सूचना 'गोवर्धन पर्वत' की कथा से मिलती है। अधिकांश स्वादिष्ट पदार्थ गाय के दूध से ही बनते हैं, गाय को धन में अन्न और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। गो पूजन, गोवर्धन पूजा या अन्नकूट पूजा से घर में अन्न, दूध आदि की कमी नहीं होती है। भगवान कृष्ण इस दिन अपनी पूजा करने वाले की अकाल, भूकम्प, अतिवृष्टि, अग्नि आदि प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा करते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गोवर्धन पर्वत उठाकर उन्होंने [illegible] की थी।

# गोवर्धन पूजा

प्रातः शुभ मुहूर्त में अपने आसन पर बैठ जाए। गोवर्धन पर्वत के चारों ओर हल्दी एवं कुंकुम का लेप बनाकर तीन गोल घेरे बनाएं। इस घेरे के बाहर आठ दिशाओं में आठ स्वस्तिक बनाए। प्रत्येक स्वस्तिक एवं **गोवर्धन** पर एक-एक पुष्प निम्न मंत्र बोलते हुए अर्पित करें –

**।। ॐ ह्रीं ह्रीं गोवर्धनाय भद्राय**
**ऐं ऐं ॐ नमः।।**

Om Hreem Hreem Govardhanaay
Bhadraay Ayeim Ayeim Om Namah

इसके बाद गोवर्धन के सम्मुख एक दीपक प्रज्वलित करें, धूप जला दें। फिर पर्वत को चारों ओर मौली से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए बांध दें तथा तीन गांठ लगाए। फल, बताशा आदि नैवेद्य रूप में अर्पित करते हुए भगवान कृष्ण का स्मरण करें। उपरोक्त मंत्र का पांच मिनट जप करें और चढ़ाए हुए नैवेद्य को प्रसाद रूप में स्वीकार करें एवं शाम को निम्न साधना सम्पन्न करें–

## गोपीजन वल्लभ साधना

वैष्णव सम्प्रदाय में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा साधना ही सर्वोपरि मानी जाती है। भगवान श्रीकृष्ण अपना नाम जपने वाले भक्त-साधकों का अनेकों प्रकार से मनोरथ पूर्ण करते हैं, परंतु अपने सभी नामों में जो नाम उन्हें सबसे अधिक प्रिय है, वो है – 'गोपीजन वल्लभ' है। इस नाम की मंत्र साधना करने से भगवान श्रीकृष्ण शीघ्र ही प्रसन्न होकर साधक पर कृपा करते है। उपरोक्त प्रकार के पूजन के उपरांत 05.11.2021 को ही सायं 3.00 बजे से कृष्णत्व माला से 11 माला निम्न मंत्र का जप प्रारंभ कर आने वाले ग्यारह दिनों तक नित्य 11 माला मंत्र जप करें आपको शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

**गोपीजन वल्लभ मंत्र**

**।। ॐ क्लीं कृष्णाय गोपीजन वल्लभाय क्लीं नमः।।**

Om Kleem Krishnnaay Gopeejan
Vallabhaay Kleem Namah

कृष्णत्व माला – 310

# अद्वितीय बीस सूत्र

सद्गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में

## लक्ष्मी सिद्धि के बीस सूत्र
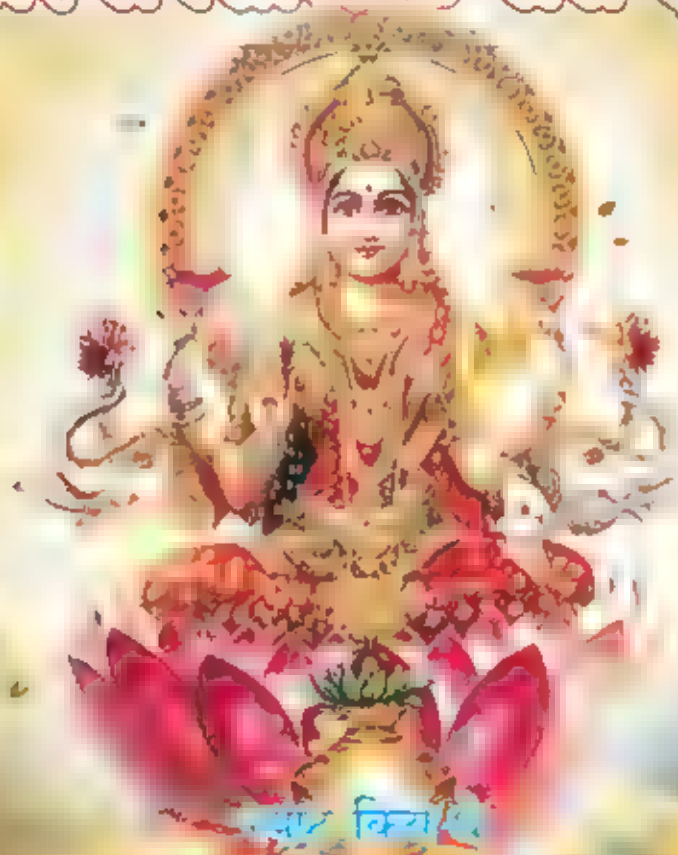
इन्हें जीवन में अपनाएं फिर

## लक्ष्मी, श्री, कांति, समृद्धि

को आपके घर आना ही पड़ेगा

1. **जीवन में सफल रहना है या लक्ष्मी को स्थापित करना है तो प्रत्येक दशा में सर्वप्रथम दरिद्रता विनाशक प्रयोग** करना ही होगा। यह सत्य है कि लक्ष्मी धनदात्री है, वैभव प्रदायक है लेकिन दरिद्रता जीवन की एक अलग स्थिति होती है और इस स्थिति का विनाश अलग ढंग से सर्वप्रथम करना आवश्यक होता है।
2. लक्ष्मी का एक विशिष्ट स्वरूप है 'बीज लक्ष्मी'। एक वृक्ष की ही भांति एक छोटे से बीज में सिमट जाता है—लक्ष्मी का विशाल स्वरूप। बीज लक्ष्मी साधना में भी उतर आया है, भगवती महालक्ष्मी के पूर्ण स्वरूप के साथ-साथ जीवन में उन्नति का रहस्य।
3. लक्ष्मी समुद्र तनया हैं, समुद्र से उत्पन्न हैं उनकी और समुद्र से प्राप्त विविध रत्न सहोदर हैं उनके, चाहे वह दक्षिणावर्ती शंख हो या मोती शंख, गोमती चक्र, स्वर्ण पात्र, कुबेर पात्र, लक्ष्मी प्रकाम्य, श्रीफलमय वर-वरद लक्ष्मी चैतन्य सभी उनके प्रतीक ही हैं और इनकी गृह में उपस्थिति आह्लादित करती है। लक्ष्मी को विवश कर देती है, उन्हें गृह में स्थापित कर देने को।
4. समुद्र मंथन से प्राप्त रत्न 'लक्ष्मी' का वरण यदि किसी ने किया तो वे साक्षात् भगवान विष्णु। अपने पति की अनुपस्थिति में लक्ष्मी किसी भी गृह में झांकने तक की भी कल्पना नहीं करती और भगवान विष्णु की उपस्थिति का प्रतीक है, शालीग्राम, अनन्त महायंत्र एवं शंख। शंख, शालीग्राम एवं तुलसी का वृक्ष—इनसे मिलकर बनता है पूर्ण रूप से भगवान लक्ष्मी नारायण की उपस्थिति का वातावरण।
5. लक्ष्मी का नाम कमला है, कमलवन उनका आवास ही अथवा उनका आसन सब कमल ही है और सर्वाधिक प्रिय है—लक्ष्मी का पद्म। कमल-गट्टे की माला स्वयं धारण करना आधार और आसन देना है लक्ष्मी को अपने शरीर में अपना प्रभाव समाहित करने के लिए।
6. लक्ष्मी की पूर्णता होती है विघ्न विनाशक श्री गणपति की उपस्थिति से, जो मंगल कर्ता है और प्रत्येक साधना में प्रथम पूज्य। भगवान गणपति के किसी भी विग्रह की स्थापना किये बिना लक्ष्मी की साधना तो ऐसी है ज्यों कोई अपने धन भण्डार में भरकर उसे खुला छोड़ दे।
7. लक्ष्मी का वास वहीं सम्भव है जहां व्यक्ति सदैव सुरुचिपूर्ण वेशभूषा में रहे, स्वच्छ और पवित्र रहे तथा आन्तरिक रूप से निर्मल हो। गंदे मन, असभ्य और बकवादी व्यक्तियों के जीवन में लक्ष्मी का वास सम्भव ही नहीं।
8. लक्ष्मी का आगमन होता है जहां पौरुष हो, जहां उद्यम हो, जहां गतिशीलता हो। उद्यमशील व्यक्तित्व ही प्रतिरूप होता है भगवान श्री नारायण का जो प्रत्येक क्षण गतिशील है, पालन में संलग्न है। ऐसे ही व्यक्तियों के जीवन में लक्ष्मी गृहलक्ष्मी बनकर, सन्तान लक्ष्मी बनकर आयु, यश, श्री कई-कई रूपों में प्रकट होती है।
9. जो साधक गृहस्थ हैं उन्हें अपने जीवन में हवन को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए और प्रत्येक माह कमल गट्टे का बीज और शुद्ध घृत के द्वारा आहुति प्रदान करना फलदायक होता है
10. अपने दैनिक जीवन क्रम में नित्य महालक्ष्मी की किसी ऐसी साधना-विधि को सम्मिलित करना है जो आपके

## जीवन में नित्य महालक्ष्मी के चिंतन, मनन और ध्यान के साथ-साथ यंत्रों का स्थापन भी केवल महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक है श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र और कुबेर यंत्र इन तीनों के समन्वय से एक पूर्ण क्रम स्थापित होता है।

**अनुकूल हो और यदि इस विषय में निर्णय-अनिर्णय की स्थिति हो तो नित्य प्रति सूर्योदय काल में निम्न मंत्र की एक माला का मंत्र जप तो** कमल गट्टे की माला से अवश्य ही करना चाहिए।

### मंत्र

**ॐ श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद मम गृहे आगच्छ आगच्छ महालक्ष्म्यै नमः**

11. किस लक्ष्मी साधना को अपने जीवन में अपनायें और उसे किस मंत्र से सम्पन्न करें, इसका उचित ज्ञान तो केवल आपके गुरुदेव के पास ही है और योग्य गुरुदेव अपने शिष्य की याचना पर उसे महालक्ष्मी दीक्षा से विभूषित कर वह गूढ़ साधना पद्धति स्पष्ट करते हैं जो सम्पूर्ण रूप से उसके संस्कारों के अनुकूल हो।
12. अनुभव से यह ज्ञात हुआ है कि बड़े-बड़े अनुष्ठानों की अपेक्षा यदि छोटी साधनाएं, मंत्र-जप और प्राण प्रतिष्ठायुक्त यंत्र स्थापित किये जाएं तो जीवन में अनुकूलता तीव्रता से आती है और इसमें हानि की भी कोई सम्भावना नहीं होती।
13. जीवन में नित्य महालक्ष्मी के चिंतन, मनन और ध्यान के साथ-साथ यंत्रों का स्थापन भी केवल महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक है। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र और कुबेर यंत्र इन तीनों के समन्वय से एक पूर्ण क्रम स्थापित होता है।
14. जब कई छोटे-छोटे प्रयोग और साधनाएं सफल न हो रही हों तब भी लक्ष्मी की साधना बार-बार अवश्य ही करनी चाहिए।
15. पारद निर्मित प्रत्येक विग्रह अपने आप में सौभाग्ययुक्त होता है चाहे वह पारद महालक्ष्मी हो या पारद शंख अथवा पारद श्रीयंत्र। पारद शिवलिंग और पारद गणपति भी अपने आप में लक्ष्मी तत्व समाहित किये होते हैं।
16. जीवन में जब भी अवसर मिले, तब एक बार भगवती महालक्ष्मी के शक्तिमय स्वरूप कमला महाविद्या की साधना अवश्य ही करनी चाहिए जिससे जीवन में धन के साथ-साथ पूर्ण मानसिक शांति और श्री का आगमन सम्भव हो सके।
17. धन का अभाव चिंताजनक स्थिति में पहुंच जाये और लेनदारों के तानों और उलाहनों से जीना मुश्किल हो जाता है, तब श्री विद्या महाविद्या साधना करना ही एकमात्र उपाय शेष रह जाता है।
18. जब सभी प्रयोग असफल हो जाएं तब अघोर विधि से लक्ष्मी प्राप्ति का उपाय ही अंतिम मार्ग शेष रह जाता है लेकिन इस विषय में एक निश्चित क्रम अपनाना पड़ता है।
19. कई बार ऐसा होता है कि घर पर व्याप्त किसी तांत्रिक प्रयोग अथवा गृह दोष या अतृप्त आत्माओं की उपस्थिति के कारण भी वह सम्पन्नता नहीं आ पाती जो कि अन्यथा सम्भव होती है, ऐसी स्थिति को समझ कर 'प्रेतात्मा शांति' करना ही बुद्धिमत्ता है।
20. उपरोक्त सभी उपायों के साथ-साथ सीधा सरल और सात्विक जीवन, दान की भावना, पुण्य कार्य करने में उत्साह, घर की स्त्री का सम्मान और प्रत्येक प्रकार से घर में मंगलमय वातावरण बनाये रखना ही सभी उपायों का पूरक है क्योंकि इसके अभाव में यदि लक्ष्मी का आगमन हो भी जाता है तो स्थायित्व संदिग्ध रह जाता है।

# तांत्रोक्त महालक्ष्मी दीक्षा

## दीक्षा

एक वरदान है मानव को और किसी अद्वितीय व्यक्तित्व अथवा सद्गुरु में ही इतनी क्षमता होती है, जो सहजता से इसे प्रदान कर सकते हैं। एक भाग्यशाली व्यक्ति ही श्रेष्ठ गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सुख-सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति का आधार मात्र दीक्षा ही है, जो आज के युग में शीघ्र प्रभावकारी एवं शीघ्र फलदायी है..... और जब तक कामना पूर्ति नहीं है, तब तक जीवन अधूरा ही है।

प्रत्येक मनुष्य का यह स्वप्न होता है, कि वह अल्प समय में ही सुख-सम्पन्नतापूर्ण जीवन जी सके, उसे अधिक लाभ प्राप्त हो जाए, उसका परिवार समस्त प्रकार की सुख-सुविधाओं का भोग कर सके, एक मधुरता का वातावरण बन सके . . . और धन प्राप्त करना, ऐश्वर्य, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करना अपने-आप में कोई तुच्छता नहीं है और ऐसा सोचना अनुचित भी नहीं है, क्योंकि वह चाहता है, कि मैं अल्प समय में ही सब कुछ प्राप्त कर लूँ।

जीवन में भौतिक अभावों के कारण ही आज समाज में परिपूर्णता दृष्टिगोचर नहीं होती, और शास्त्रों में वर्णित धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन

संसार में जो भी सम्पन्नता है, सभी बाह्य रूप से अर्जित की हुई होती है, इसीलिए उनसे मिलने वाली सफलता संदिग्ध होती है, किन्तु तान्त्रोक्त महालक्ष्मी दीक्षा द्वारा व्यक्ति के अन्दर निहित त्रिशक्ति क्रिया, ध्यान और इच्छाशक्ति जाग्रत होने पर उसे स्वयं ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होने लगती है।

चारों पुरुषार्थों में से आज अर्थ को ही सर्वप्रथम महत्त्व दिया जाने लगा है, हर कोई इसे ही प्राप्त करना चाहता है, क्योंकि वह धनपति बनना चाहता है और इसके लिए वह जी तोड़ परिश्रम करता है, इधर-उधर भागता फिरता है, परन्तु उसका परिश्रम सार्थक नहीं हो पाता, इसके लिए वह विभिन्न उपाय टोने-टोटके, मंदिर, गिरिजाघर, गुरुद्वारे आदि में जाकर मन्नत मांगता है, ईश्वर से प्रार्थना करता है तथा पूजा-आराधना आदि से सम्पन्न करता है, किन्तु फिर भी उसे सफलता नहीं मिल पाती।

अध्यात्म की ओर यदि दृष्टि डालें, तो ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं, जो लक्ष्मी से संबंधित साधनाएं ही करना ज्यादा पसंद करते हैं, जिससे कि वे अपने जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, समृद्धि, यश, मान, श्री, वैभव आदि से परिपूर्ण हो इस भौतिक जगत में अपने गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ संचालित कर सकें।

किन्तु जब आप हर उपाय करके थक जाएं, जब आपको लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों की साधना करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो और आपके प्रयास बार-बार विफल हो रहे हों, तो आपको चाहिए कि आप अल्प समय में ऐसी कोई युक्ति अपनाएं, जिससे आप अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकें।

और आज के युग में दीक्षा ही एक मात्र ऐसा समाधान है, जो मानव जीवन के लिए उपयोगी है।

आज के इस अर्थवादी युग में जो धनवान है, वही प्रतिष्ठित है, वही सम्मानजनीय है और जो निर्धन है, गरीब है, उनका समाज में कोई विशेष स्थान नहीं है, ऐसे में धन के अभाव के कारण व्यक्ति को बहुत सी परेशानियों, समस्याओं, संकटों का सामना प्रतिपल करना पड़ता है, जिसके कारण वह हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है और उसके मन में इस भावना का उदय होना ही, उसकी मृत्यु की ओर अग्रसित होना है। आज सभी आज एक बड़ी संख्या में व्यक्ति ऐसे हैं, जो धनाभाव के कारण मृत्यु तुल्य जीवन जी रहे हैं, क्योंकि उन्हें ऐसा कोई योग्य गुरु मिला ही नहीं, जो उन्हें इनके संकटों से उबार सके और न ही आजकल ऐसे गुरु सहज सुलभ रह गये हैं, जो इस योग्य हों।

और ऐसे में एक सामर्थ्यवान गुरु ही व्यक्ति को पूर्णता की ओर गतिशील कर सकते हैं, अन्य नहीं। निर्धनता, बेरोजगारी तथा अन्य दुःख-ताप आदि उसके पूर्व जन्मकृत दोषों व पाप कर्मों का ही फल है, किन्तु 'महालक्ष्मी दीक्षा' को प्राप्त कर इन समस्याओं से मुक्त हुआ जा सकता है।

'तान्त्रोक्त महालक्ष्मी दीक्षा' मस्तक पर पड़ी दुर्भाग्य की लकीरों को मिटा देने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, जिसे प्राप्त कर व्यक्ति का जीवन सफलता की ओर अग्रसर हो जाता है। इस महत्वपूर्ण दीक्षा को प्राप्त करने के पश्चात लक्ष्मी का आगमन स्थायी रूप से उस साधक, शिष्य अथवा व्यक्ति के घर में होता ही है, इस दीक्षा के प्रभाव से शीघ्र ही धनागम के स्रोत स्वतः ही खुलने लग जाते हैं, व्यापार में वृद्धि होने लगती है, साथ ही आकस्मिक रूप से भी धन की प्राप्ति होने लगती है।

महालक्ष्मी, साधक व शिष्य के जीवन के समस्त पूर्व जन्मकृत पाप-दोषों का नाश करने वाली देवी है, इन्हें पाप-ताप संहारिणी भी कहा जाता है, जो समस्त पाप दोषों का निवारण कर व्यक्ति के भाग्य को ही परिवर्तित कर देती है, फिर उसे जीवन में अधिक परिश्रम के साथ ही लक्ष्मी की कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि ये उसे वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य सभी कुछ तो प्रदान करने में समर्थ हैं।

धन-सम्पदा और वैभव-विलास की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी हैं, इसलिए जीवन में पूर्णता प्राप्ति हेतु इस दीक्षा का सर्वोपरि स्थान है, अतः शास्त्रों आदि में इसका विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है।

# जीवन है, तो सब कुछ है, आयु है, स्वास्थ्य है,

तभी संसार में किसी अन्य वस्तु की कल्पना की जा सकती है, इसी को कहा गया है–

## 'जान है तो जहान है'

और इसी तथ्य को बहुत पूर्व ही ऋषियों ने अनुभव कर जड़ी–बूटियों एवं अन्य पदार्थों के औषधीय गुणों को संकलित किया और जन्म दिया एक अद्भुत शास्त्र को जिसकी तुलना वेद जैसे सर्वोच्च ग्रंथ से की गई और नाम दिया गया आयुर्वेद।

# आयुर्वेद में तुलसी

भारतीय संस्कृति में सहस्रों वर्षों से वृक्षों, वनस्पतियों और प्राकृतिक सृष्टि के अन्य अंगों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे वैदिक साहित्य–चिंतन में भी मानव–जीवन की समृद्धि और स्वस्थता के लिए वनस्पति के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। प्राचीन वेदों के समकक्ष एवं उपवेद माने जाने वाले आयुर्वेद में भी वृक्षों–वनस्पतियों के औषधियुक्त गुणों को स्वीकार करके शारीरिक तथा मानसिक आरोग्य की सुरक्षा में उनके बहुमूल्य योगदान को स्वीकार किया गया है। इसीलिए हम अपने दैनिक जीवन में वृक्षों और वनस्पतियों का मूल्यांकन धार्मिक श्रद्धा एवं आदर के साथ करते हैं।

हमारे ग्राम्य जीवन में तो वृक्ष और वनस्पतियाँ सामाजिक जीवन के अविभाज्य अंग माने गए हैं। अतएव अधिकांश धार्मिक उत्सवों में वृक्ष पूजा होती थी धार्मिक दृष्टि से और श्रृंगार के लिए वृक्ष महत्वपूर्ण बन गए थे। नीम, पीपल, बरगद, अशोक आदि वृक्ष हमारे जीवन के अंग बन गए थे। इन समस्त वृक्षों - वनस्पतियों में सर्वाधिक धार्मिक, आध्यात्मिक, आरोग्यलक्षी एवं शोभा की दृष्टि से तुलसी को मानव - जीवन में महत्वपूर्ण पवित्र तथा श्रद्धेय स्थान मिला है।

प्रत्येक हिन्दू के घर–आंगन में तुलसी का पौधा होना घर की शोभा, घर के संस्कार, पवित्रता तथा धार्मिकता का अनिवार्य और एकमात्र प्रतीक है।

प्रदूषित वायु के शुद्धीकरण में भी तुलसी का योगदान श्रेष्ठ है। तुलसी के गुण और विशेषताएँ–

एक कहावत है :

जिस घर होवे तुलसी और गाय
उस घर रोग कभी न जाय

पुराणों में तुलसी को विष्णुप्रिया नाम से भी पुकारा गया है।

जिस घर में तुलसी का पौधा है वह घर तीर्थ के समान है। (स्कंद पुराण, पद्म पुराण)

इसकी गंध जहाँ तक जाती है वहाँ का वातावरण और उसमें रहने वाले प्राणियों को वह पवित्र और निर्विकार बनाती है। (पद्म पुराण)

ग्रहण के समय तुलसी की पत्तियों को खान–पान में डालने की परम्परा है। इसका कारण है कि तुलसी की पत्तियाँ कीटाणुनाशक होती हैं।

### बच्चों के रोग

- बच्चों के सर्दीवाले ज्वर में गर्म किया हुआ एक छोटा चम्मच तुलसी का रस शहद में मिलाकर पिलायें।
- सूखी खांसी में तुलसी की कोंपलें और अदरक समान मात्रा में पीसकर शहद के साथ चटायें।
- तुलसी -पत्र का रस पांच–दस बूंद पानी में मिलाकर प्रतिदिन पिलाने से स्नायु तथा हड्डियों की मजबूती बढ़ती है।
- तुलसी के स्वरस को थोड़ा–सा गर्म करके देने से बच्चों के उदरकृमियों का नाश होता है एवं यकृत संबंधी रोग मिटते हैं।

### अजीर्ण

- तुलसी का स्वरस 10 ग्राम, काली मिर्च का चूर्ण 5 ग्राम तथा शहद 5 ग्राम मिलाकर पीने से मंदाग्नि मिटती है।
- तुलसी की ताजी पत्तियों का रस 10 ग्राम प्रतिदिन प्रातःकाल

लेने से अजीर्ण और कब्जियत में लाभ होता है एवं वायु विकार नष्ट होता है।

## सर्दी-जुखाम, ज्वर

- कफ सूख जाने पर तुलसी का स्वरस, प्याज तथा अदरक का रस और शहद समान मात्रा में मिलाकर लें। इससे बलगम मुक्त होकर निकल जायेगा और लाभ होगा।।
- सर्दी में 5 ग्राम तुलसी का स्वरस काली मिर्च के दो दानों का चूर्ण तथा 5 ग्राम शक्कर मिलाकर सेवन करने से खासी सर्दी की जकड़न तथा जीर्ण-ज्वर मिट जाते हैं।
- ज्वर होने की दशा में तुलसी, लौंग, सोंठ या अदरक, काली मिर्च एवं गुड़ का काढ़ा बनाकर सुबह और रात को पीयें। पीने के बाद 1 घण्टे तक पानी न पियें।
- काली मिर्च, तुलसी और गुड़ का काढ़ा बनाकर उसमें नींबू का रस मिलाकर, दिन में तीन-तीन घण्टे के अन्तर से गर्म-गर्म पियें फिर कम्बल ओढ़ कर सो जायें यह काढ़ा मलेरिया को दूर करता है।
- तुलसी-अदरक का रस शहद के साथ सेवन करने से सर्दी, ज्वर और निमोनिया में लाभ होता है।

## चर्म रोग

- तुलसी की पत्तियों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद-खाज मिट जाती है।
- तुलसी की पत्तियाँ सरसों के तेल में डालकर पकाएं एवं जल जाने पर तेल को छानकर रख लें। यह तेल चर्म रोगों में लाभप्रद है।।
- तुलसी की पत्तियों को गंगाजल में पीसकर लगाने से त्वचा के चकत्ते थोड़े समय में ही मिट जाते हैं।

## स्त्री रोग

- तुलसी की पत्तियों का स्वरस 20 ग्राम चावल के माँड़ के साथ सेवन करने से तथा दूध-भात का पथ्य लेने से प्रदर रोग दूर होता है।
- गर्भाशय की शुद्धि के लिए पानी के साथ तुलसी के बीज पीसकर मासिक धर्म के समय तीन दिन तक पिलायें इससे गर्भधारण करने में भी सहायता मिलती है एवं गर्भाशय निरोगी होता है।

## पुरुष रोग

- तुलसी के बीजों को पीसकर शहद के साथ लेने से स्वप्नदोष, मधुप्रमेह आदि धातुसंबंधी विकार दूर होते हैं।
- 50 ग्राम तुलसी के बीज और 60 ग्राम शक्कर का चूर्ण बनाकर प्रतिदिन 5 ग्राम चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन करने से धातु दुर्बलता दूर होती है।
- तुलसी के बीज पीसकर गुड़ में मिलाकर मटर के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक गोली खाकर ऊपर से गाय का दूध चार माह तक पीने से पाचन शक्ति में सुधार होता है और नपुसकता दूर होती है।

## वात रोग

- तुलसी के स्वरस में काली मिर्च का चूर्ण और शहद मिलाकर पीने से वातरोग मिटता है।
- तुलसी का स्वरस और अदरक का रस 5 5 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से थोड़े ही दिनों में वात रोग में आराम मिलता है

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें )

## सौन्दर्य प्रदाता

सुदर होना एवं सुन्दर बने रहना सभी को अच्छा लगता है। सुदरता की उत्पत्ति आरोग्य से ही होती है जिसमें तुलसी का महत्वपूर्ण स्थान है तुलसी के दो उत्तम गुण हैं- सौन्दर्य वर्धन और आरोग्य वर्धन।

सवेरे नहा-धोकर स्वच्छ आसन पर तुलसी के पौधे के अत्यन्त निकट इस प्रकार बैठें कि पौधे से निकलने वाली गंध आपकी सांसों में प्रविष्ट हो। इसके बाद गहरी सांसें लीजिए प्राणायाम कीजिये इसकी सुगंध शरीर के भीतर जितनी गहराई तक जा सके जाने दीजिए। यह दिव्य गंध आपके रक्त को शुद्ध कर देगी।

तुलसी की पत्तियाँ रक्त शोधक है प्रतिदिन कुछ पत्तियाँ पीसकर सम मात्रा में शहद मिलाकर खाने से रक्त शुद्ध होता है और सौन्दर्य में वृद्धि होती है।

यदि चेहरे पर दाग-धब्बे हों तो तुलसी की पत्तियों के रस में थोड़ा नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाये एवं सूख जाने पर स्वच्छ पानी से धो लें इससे चेहरा स्वच्छ और उज्ज्वल बन जाता है।

# Kuber Sadhana

# UNLIMITED WEALTH

Kuber blesses the Sadhak with material success and wealth. Through his grace the chances of coming into wealth unexpectedly and suddenly increase. And no matter how much one spends, money keeps flowing in.

| 9 | 16 | 3 | 8 |
|---|---|---|---|
| 7 | 4 | 13 | 12 |
| 15 | 10 | 9 | 2 |
| 5 | 6 | 11 | 14 |

The great Tantra expert Ravan when he wished to convert Lanka in to a city of gold sought the help of Kuber. In fact Kuber was the true owner of Lanka and the magnificent city came into existence due to his powers. Kuber was in fact the brother of Ravan, but in his early childhood he took to worship of Lord Brahma through whose grace he became the ruler of all wealth on earth.

All ancient texts encourage the use of Kuber Sadhana for the gain of wealth. In fact several texts state that true and lasting prosperity in possible only throught the grace of Kuber.

There are three chief gains from Kuber Sadhana. Firstly Kuber is pleased and blesses one with material success and wealth. Secondly the chances of coming into wealth unexpectedly and suddenly through lotteries etc. increase. Thirdly no matter how much one spends, money keeps flowing in provided of course one uses the wealth for constructive purposes and not for destructive or antisocial activites.

It might well seem to be a simple and short Sahana but it's effect is simply amazing if one tries it with true belief and faith. One can even try this ritual with one's spouse.

It is best to try this ritual on **Amavasya** day (day proceding the moonless night) **or a Sunday**. Rise early morning well before sunrise. Have a bath and wear clean yellow clothes. Then sit on a yellow mat facing North. Cover a wooden seat with yellow cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it make a mound of rice grains. On the rice grains place a **Kuber Yantra**. Around the Yantra place **four Mahalakshmi Phals**. Then light a ghee lamp with four wicks.

Take a plate and in it with vermilion draw the undergiven Yantra of numbers. Place it on the right side of the plate containing the Kuber Yantra. Then offer prayers to Lord Ganpati chanting **Om Gam Ganpataye Namah** five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana.

Thereafter chant thus meditating on the form of Kuber.

**Manuj Baahya Vimaanparisthitam Garud Ratna Nibham Nidhi Naayakam. Shiva Sakhaa Mukutaadi Vibhooshitam Var Gade Dadhatam Bhaj Tundilam**

Then with a **rock crystal (sfatik) rosary** chant 8 rounds of the following secret Mantra-

**Om Yakshaay Kuberaay Dhan Dhaanyaadhipataye Akshaya Nidhi Samriddhim Me Dehi Daapay Swaahaa.**

After this make 108 oblations with ghee in the holy fire (Yagna fire) each time chanting the above Mantra. After Sadhana tie all worship articles rosary, Yantra and the four Phals in a yellow cloth and place it in the place where you keep your money or valuables at home. It is said that if one tries this Sadhana on each Amavasya every month for a year then one attains to life long prosperity and affluence.

Sadhana Articles - 570/-

## Any Sunday

# Good Bye Misfortune

# Amazing Power of Tantra

*The ancient Indian scriptures are full of bewildering feats performed by great Yogis and Avatars. Many seem to be a figment of imagination. But was it so? Or did they really possess astounding powers? And if they did why can't we? To us it might seem unbelievable but it is a fact that Hanuman once flew over the ocean to reach Lanka. Lord Krishna did heave up the mighty Govardhan mountain to save his people from torrential rains. Vishwamitra did start the creation of another universe altogether. What was behind their wondrous powers?*

It was Tantra. Today the word is much feared and unknowingly people confuse Tantra with base rituals for propitiating evil spirits. Tantra is a science of seeking the help of the benefic powers prevalent around us whom we know as gods and goddesses. A knife or a gun could well be misused but real Tantra can never be, for the divine powers would never agree to harm anyone or put into action destructive plans.

Tantra in fact is an all pervading science through which solution to any problem can be had through creative means. Tantra is an art, a medium of linking oneself with nature. It is the name of an organised system through which even the impossible could be achieved without in any way disturbing the natural equilibrium. It is a means of linking to the powers of the soul and making quick and sure progress in life.

One of the most efficacious part of Tantra is **Surya Vigyan** or the science of the Sun. Sun we know is the very basis of life. Astrologically and spiritually sun represents the soul. It denotes fame, fortune, success, power and progress. By linking oneself to its subtle powers one could bring an end to all misfortune in one's life.

Presented here is a wonderful Sadhana based on Surya Vigyan and Tantra. It comes as a wonderful divine boon for those who ever face problems, hurdless and misfortune in their lives. It can be seen in the lives of several people that no matter how hard working, honest and intelligent they are good luck seems to shun them. If such is your case and if nothing seems to work in warding off bad luck and misfortuness and if you face constant hurdles and problems in every task you undertake then this is the Sadhana for you.

It is best to try this **Durbhaagya Naashak Sadhana** (Sadhana for destroying misfortune) on a **Sunday** early before sunrise. Early in the dawn have a bath and wear fresh red clothes. Sit on a red mat facing East. Cover a wooden seat with red cloth. Then in a copper plate place **Surya Yantra**. Light a ghee lamp. Offer red flowers, vermilion, rice grains on Yantra, then take water in the right palm and pledge thus — I (speak your name) am doing this Sadhana for the removal of these problems in my life (specify the problems).

Then let the water flow to the floor.

Next chant one round of Guru Mantra and seek the blessings of Sadgurudev for success in the Sadhana. ***Always remember that no matter which Sadhana you are trying, without grace of the Guru success can never be attained.*** And if you have full devotion in the Guru he can assure success even if there creep in inadvertent flaws in your Sadhana. Thereafter chant five rounds of this Mantra with **Durbhaagya Naashak roasary**.

***Om Hreem Hreem Kleem Hreem Hreem Om***

After the Sadhana take water in a copper tumbler and put rice grains and vermilion in it. Then go out and offer it to the rising sun. The power of the Sadhana combined with the subtle powers of the sun would burn all your misfortunes even as the fire of meditation burns away all one's weaknesses. The same day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

**Sadhana Articles — 450/-**

## 2-3 अक्टूबर 2021

# गुरु-शिष्य मिलन समारोह

**शिविर स्थल**

**रोटरी भवन, पालमपुर-काँगड़ा (हि.प्र.)**

आयोजक सिद्धाश्रम साधक परिवार, हिमाचल प्रदेश-पालमपुर-आर.एस. मिन्हास-8894245685, संजय सूद-9816005757, शशी संगराय, देवगौतम-9894075015, वृन्दागौतम, सुनन्या, सीमा चन्देल-9459351566, बलवन्त ठाकुर, ओंकार राणा-9816578166, मिलाप चन्द, कुशला देवी, कुसुम, राजेन्द्र कटोच, जोगिन्द्र सिंह, कर्मचन्द, कल्याण चन्द, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, सुनील नाग-9736550347, राजू,रणजीत मुंगरा, धर्मशाला-संध्या-9805668100, केसर गुरुंग-9882512558, जुल्फीराम, नगरोटा सूरियां-ओमप्रकाश-9418256074, कुशल गुलेरिया, अमर्जीत पठानिया, सुभाष चन्द शर्मा, जीतलाल कालिया, नरेश शर्मा, मस्तराम, मोला, जनरैलसिंह, प्रकाश पठानिया, श्रेष्ठा गुलेरिया, नूरपुर-पीताम्बर राम, नरेश शर्मा, दिनेश निखिल, आशीष, चौंतड़ा-संजीव कुमार-8894513703, विकास सूद, हमीरपुर-निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, डॉ. गगन, प्रवीण धीमान, ताहू-सागरदत्त, चमन, प्रभदयाल, सरकाघाट-अशोक कुमार-9816202666, मोहनलाल शास्त्री, रोशनलाल, संसारचन्द, सुन्दरनगर-जयदेव शर्मा-9816314760, बंशीराम ठाकुर, नरेश शर्मा, तिलकराज, नीलम निखिल, निर्मला शर्मा (बलद्वाड़ा), श्याम सिंह, कुल्लू-रत्तो राम, तपे राम, धुमारवीं-ज्ञानचन्द एडवोकेट, डॉ. सुमन, हेमलता कौण्डल, धर्मदत्त, मोहनलाल, स्नेहलता, सन्तोष कुमार, बद्दी-कृष्ण कुमार शाण्डिल, अश्वनी गौतम, सुशील भरोल, शिमला- चमनलाल कौण्डल, टी.एस. चौहान, सुरेन्द्र कंवर, तुलसीराम कौण्डल, दसूआ टांडा (पंजाब)-रघुवीरसिंह एवं पार्टी

## 15 अक्टूबर 2021

# गुरु-शिष्य मिलन समारोह

**शिविर स्थल :**

**हनुमानगढ़ी, नैमिषारण्य, जिला-सीतापुर**

(सीतापुर से 38 कि.मी. एवं लखनऊ से 80 कि.मी. दूर है)

आयोजक मंडल-लखनऊ-अजयकुमार सिंह-9415324848, डी.के. सिंह-9532040013, प्रदीप शुक्ला-9415266543, सतीश टंडन-93361 50802, मनोज नायक-9125238612, जयंत मिश्रा-84170 53550, पंकज दुबे-9450156879, दानसिंह राणा-9415766833, हरीशचंद्र पांडे, टी.एन. पांडे, रश्मि श्रीवास्तव, मधुलिका श्रीवास्तव, पारुल -मनीष श्रीवास्तव, डॉ. प्रवीण सिंह, निधि-नवनीत शर्मा, बृजेश श्रीवास्तव, स्वाती त्रिपाठी, रामकुमार रावत, कृष्णासिंह राठौर, अरुणेश गुप्ता, सुनील मल्होत्रा, अवधेशश्री वास्तव, अनिल श्रीवास्तव, पंकजकल्पना शुक्ला, जितेंद्र साहू, गायत्री देवी, कुशा मिश्रा, विजयसिंह पिंकू, संतोषसिंह अत्रु, बृजेश सिंह, प्रोफेसर शैलेश टंडन, सूरजसिंह, अमितसिंह, आशीषसिंह राठौर, रामप्रकाशसोनू, अवधेश शर्मा, जगदीश पांडे, छवि सिन्हा, के. जितेंद्र कुमार, उर्मिला राय, अरुण शाक्य

## 17 अक्टूबर 2021

# गुरु-शिष्य मिलन समारोह

**शिविर स्थल**

**उत्सव माहेश्वरी समाज, जनोपयोगी भवन,अल्का सिनेमा के सामने वाली रोड, विद्याधर नगर थाने के सामने, जयपुर (राज.)**

आयोजक मण्डल-रघु शर्मा-9351508118, कैलाश चन्द सैनी-9928402426, सत्यनारायण शर्मा-9352010718, पूरणमल सैनी-7737588044, अनिल शर्मा-9414467062, महावीर टेलर-93140 76003, सुरेश चौधरी-9829087426, दामोदर शर्मा-9828866969, गोपाल कुमावत-9982204583, शंकर सिंह नरूका-8058496254, धनुषधारी उपाध्याय -9829189384, दीनदयाल सैन-9636654386, राजेन्द्र टेलर-81044 81607, डॉ. दीपक टेलर-8233573490, कल्याण सहाय शर्मा, रामलाल चौधरी-9351889052, सुभाष पारीख-91618 74006, सौरभ शर्मा-9461973963, महेश चौधरी-9414922770, ब्रजमोहन शर्मा-99292 20055, राजेन्द्र पारीख-9829620621, सुआराम सैनी-9314074515, किशन सैनी-9351307189, बाबूलाल शर्मा-9950704254, ओमप्रकाश कुमावत-9351414123, चन्द्रप्रकाश सैनी-7737683920, मदनलाल सैनी-9314801912, भगवान सहाय शर्मा-9314930879, नाथूलाल चौधरी-9828182098, कजोड़मल सैनी-8875555955, जितेन्द्र सैन-9950254357, मांगीलाल-9828284321, पुखराज प्रजापति-87699 63427, डॉ. धीरेन्द्र सिंह सोलंकी-93522 40065, हरिसिंह चौधरी-9829034361, एडवोकेट मीनाक्षी पारीख-8696089300, शंकरलाल सैनी-9785810909, रत्न गुप्ता-96368 86554, रामावतार प्रजापत-9403070988, नितेश अग्रवाल-89478 32871, चन्द्रसिंह ओला-9001482203, बजरंग लाल गार्वाड़िया-9929 677699, गुमान सिंह (गुड्डा गोठड़ा)-9928267353, धर्मेन्द्र शर्मा-9694659167, राजेन्द्र यादव-8385947615, बनवारी कुमावत-93514 37497, कैलाश चन्द सैनी-9414055123, सूरज गोस्वामी-95716 32326, कैलाशचन्द प्रजापति-9352516599, जगदीश चौधरी-96943 33339, हुकमचन्द शर्मा-9314873617, मोहनलाल शर्मा-9214000778, सुरेश शर्मा-9587451923, गंगापुर सिटी- ओमप्रकाश शर्मा-8890606832, तरुण-75009 21120, पवनकुमार सैन-9667011855, मोहनलाल सैनी-9829146912, सरोज सैनी-9950546913, लक्ष्मी नारायण स्वामी-92141 47262, रायसिंह-9982537565, रिया अग्रवाल -9001211919, रामअवतार सैनी, रमेशचन्द कुमावत-9929192282, राजेन्द्र कुमावत-9351569563, श्रवण कुमार शर्मा-8590058592, संजय शर्मा-9782928101, बाबूलाल सैनी, बाबूलाल कुमावत-9887620271, चित्तौड़गढ़- राजेन्द्र वैष्णव-9166573506, मगन कुमार वैष्णव-7073517090, गोपाल वैष्णव, अजमेर-सुशीला देवी, उदयपुर-बंशीलाल मेनारिया- 9460924938, लक्ष्मण माली, परम शिवम शर्मा, चम्पालाल लुहार-9928524213, नानालाल माली, सोगरमल माली, रमेश वैष्णव, राकेश अग्रवाल, शंकर लाल रावत, रतन लाल सैनी, पुष्कर-रतन-9680029986, सिद्धाश्रम साधक परिवार महुआ-शिवराम मीणा-7055064356, दिलीप कुमार सैन-76100 12124, मंगलचंद सैनी-9784958637, आलोक-9468130390, अरुण श्रीवास्तव-94168 82596, पवनसिंह चौहान-7015899061, भिवाड़ी-रमेश राठौर-96718 10627, विनोद जैन-8764337634, राजा सैन (भरतपुर)-7500921120, रामरतन शर्मा-9251353981, जीतू मीणा-8432451151

**जोधपुर दीक्षा प्रोग्राम**

उपरोक्त प्रोग्राम दीपावली पर्व पर 3-4 नवम्बर को गुरुधाम, जोधपुर में सम्पन्न होगा

**नोट**

1. गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर में आने से पहले आयोजक मण्डल से फोन पर परामर्श अवश्य लें।
2. समारोह में आने वाले शिष्यों को कोविड-19 सम्बन्धी प्रशासन के सभी नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

# ऋणमुक्ति मंगलदोष निवारण दीक्षा

ऋण व्यक्ति की जीवन की वह बाधा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति जल्द से जल्द समाप्त करना चाहता है।

कई बार जीवन में ऐसा होता है कि व्यक्ति एक ऋण से मुक्त होता है और दूसरा ऋण चालू हो जाता है।

ऐसे व्यक्ति जीवन में अपनी इच्छाओं, महत्वकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाते,
उनका पूरा जीवन ऋणों को समाप्त करने में ही लग जाता है।

व्यक्ति के जीवन में ऋण इत्यादि से संबंधित जो बाधा आती है उसका मूल कारण मंगल ग्रह ही होता है। अगर व्यक्ति की कुण्डली में मंगल ग्रह अनुचित स्थान पर स्थित हो तो ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन में ऋण सम्बन्धी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। मंगल के दुष्प्रभाव के कारण वह व्यक्ति कर्ज के बोझ से लद जाता है। इसीलिये शास्त्रों में मंगल दोष के निवारण की बात कही गई हैं इस दीक्षा को प्राप्त कर साधक अपने मंगल दोष को समाप्त कर पूर्ण ऋण मुक्त हो सकता है। मंगल के अनुकूल होने पर व्यक्ति में धैर्य, साहस और वीरता का संचार होता है।

मंत्र ।। ॐ क्रीं समस्त ग्रह दोष निवारणाय क्रीं फट् ।।

**योजना केवल 8-9-10 अक्टूबर 2021 इन दिनों के लिए है**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 September, 2021
Posting Date : 21-22, September 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

# माह : अक्टूबर एवं नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

| स्थान गुरुधाम (जोधपुर) | |
|---|---|
| 8 | अक्टूबर |
| 3-4 | नवम्बर |

| स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली) | |
|---|---|
| 09-10 | अक्टूबर |
| 20-21 | नवम्बर |

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002